आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2013 ★ ज्येष्ठ, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

आचारांग अंक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- आचार्य श्री हीरा

U TURN

अहिंसा तीर्थ अभियान

मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

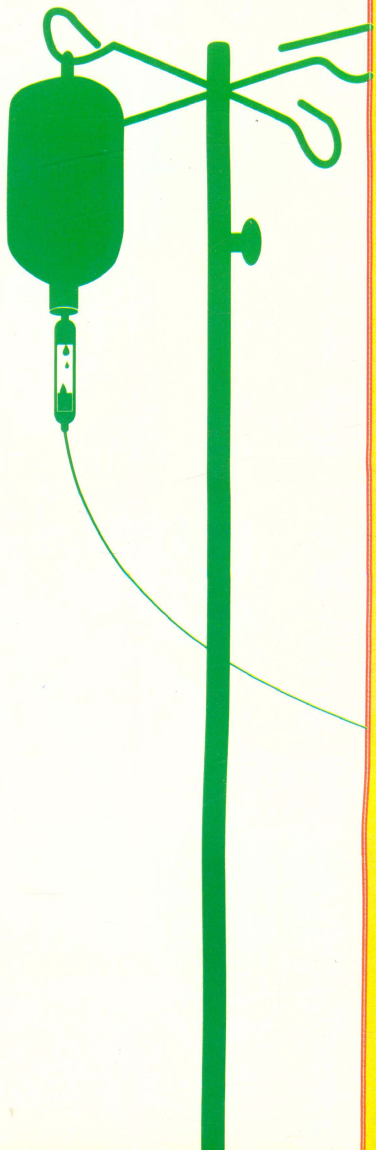

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

30292

।। महावीराय नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004

Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429

Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants

BKJ & Associates, Chartered Accountants

BKJ Consulting Private Limited

Megha Properties Private Limited

Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

बहिया उड्ढमादाय,
नावकंखे कयाइ वि।
पुव्वकम्मक्खयट्ठाए,
इमं देहं समुद्धरे।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.14

उच्च लक्ष्य धर, कदापि
बाह्य-विषयों की कांक्षा करे नहीं।
संचित कर्मों के क्षय-हेतु,
इस तन को धारण करे सही।।

जून, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
ज्येष्ठ, 2070

वर्ष 71 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
आजीवन देश में : 1000 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	आचारांग की उपयोगिता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(16)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	आचारांग है माँ	-महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.	13
	आचारांग में प्रभु महावीर की साधना	-महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.	15
	आचारांग में दुःख-मुक्ति के उपाय	-महासती श्री संगीताश्री जी म.सा.	20
सूत्र-विवेचन-	आसं च छंदं च विगिंच धीरे	-आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी	23
संगोष्ठी-आलेख-	आचारांग के अध्ययन-क्रम का वैशिष्ट्य	-श्री प्रकाशचन्द जैन	28
	आचारांग सूत्र में अप्रमत्त जीवन की प्रेरणा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	33
	आचारांगसूत्र में तीन मंगल	-श्री प्रकाशचन्द पटवा	40
	आचारांग में श्रावक धर्म के लिए मार्गदर्शन	-श्री शान्तिलाल बोहरा	47
	आचारांग के परिप्रेक्ष्य में अनुकम्पा	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	51
	आचारांग में आत्मिक सुख के उपाय	-श्री प्रकाशचन्द जैन	59
दीक्षा-अर्द्धशती-	दृढ़ संकल्प और संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी हैं उपाध्याय श्री	-श्री नौरतनमल मेहता	56
बाल-स्तम्भ -	आगम-बोध	-डॉ. श्वेता जैन	63
विचार-	रात्रि भोजन-त्याग क्यों?	-संकलित	67
	क्या ही अच्छा होता!	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	27
	आत्म-कल्याण	-आचार्य श्री हस्ती	32
	विवेकदृष्टि	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	125
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा	46
	वन्दना हमारी है	-श्री धर्मचन्द जैन	129
प्रेरक-प्रसंग-	यतना और श्रमणाचार	-डॉ. दिलीप धींग	22
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (38)	-संकलित	68
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	70
शिविर-रिपोर्ट-	ग्रीष्मकालीन शिविर बने ज्ञानाराधन के उतम केन्द्र	-श्री जितेन्द्र कुमार डागा	72
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	83
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	126

आचारांग अंक

शान्त-दान्त-गम्भीर **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.** की पावन प्रव्रज्या की अर्द्धशताब्दी पूर्ण होने एवं 51 वें वर्ष में प्रवेश करने पर उनकी निर्मल निरतिचार संयम-साधना को समर्पित है आचारांग का यह विशिष्ट अंक।**-सम्पादक**

सम्पादकीय

आचारांग की उपयोगिता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आचारांगसूत्र प्रथम अंग आगम है। इसके दो श्रुतस्कन्ध अथवा भाग हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में 9 अध्ययन हैं, जिनमें से सातवां 'महापरिज्ञा' अध्ययन विलुप्त है। द्वितीय श्रुतस्कन्ध चार चूलाओं तथा 16 अध्ययनों में विभक्त है। दोनों श्रुतस्कन्धों की भाषा, शैली, विषय-वस्तु आदि को देखने पर ज्ञात होता है कि प्रथम श्रुतस्कन्ध अधिक प्राचीन एवं गूढ है। यह आगम साधक की आन्तरिक दृष्टि को परिमार्जित कर उसे सत्यनिष्ठ और अप्रमत्त बनने की भूयो भूयो प्रेरणा करता है। प्रायः यह समझा जाता है कि आचारांग सूत्र में मात्र श्रमणों के योग्य आचार की प्रभावी शिक्षा दी गई है, किन्तु यह मान्यता एकान्त रूप से उचित नहीं है। क्योंकि इसमें सामान्य गृहस्थ को भी सांसारिक सुखों में लोलुप न होने तथा परिवार में रहकर भी ममत्व का त्याग करने की प्रेरणा की गई है। उसकी संग्रहवृत्ति एवं तद्जन्य हिंसावृत्ति को रोकने हेतु अनेक प्रकार से उसे बोधित किया गया है।

आचारांगसूत्र में जब साधारण गृहस्थ के लिए कोई बात कही जाती है तो 'पुरिसे' शब्द का प्रयोग किया गया है, यथा- **'अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे' 'पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि'** आदि। कहीं 'लोए' (लोग) शब्द का प्रयोग किया गया है, यथा-**'इच्चत्थं गढिए लोए वसे पमत्ते।'** जब किसी श्रमण के लिए कथन किया गया है तो 'मुणी', 'अणगारे', 'संजते' आदि पदों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार आचारांग मुनि को भी सावधान करता है तो एक सामान्य मनुष्य को भी। मानव की आदतों एवं अभिवृत्तियों से आचारांगसूत्र भली भांति परिचित है, अतः वह मानसिक एवं चैतसिक अवधारणाओं को बदलने हेतु सूक्ष्म एवं प्रभावी प्रेरणा करता है।

आचारांग सूत्र में आज के मानव की चित्तवृत्ति एवं उसके जीवन के अनेक पहलू सीधे-सीधे अभिव्यक्त हुए हैं। जो मनुष्य अपने परिवारजन एवं विविध साधन-सामग्री में आसक्त रहता है, वह प्रमत्त होकर दिन-रात परिताप को प्राप्त होता है तथा अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए न दिन देखता है न रात, सदैव लगा रहता है। वह प्रिय परिजनों और अभीष्ट वस्तुओं का संयोग चाहता है। वह अर्थ का लोभी बनकर अनीति पूर्वक भी धन हड़पना चाहता है। दूसरों का शोषण करके बार-बार हिंसा पर भी उतारू होता है। **(आचारांगसूत्र 1.2.1.63)** अन्यत्र भी इसी आगम में कहा है-**"कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयति जूरति तिप्पति पिड्डतिं परितप्पति"(आचारांग 1.1.5.90)** जो पुरुष कामभोग की इच्छाओं से

ग्रस्त है, वह उनके पूर्ण नहीं होने पर शोक करता है, झूरता है, रोना रोता है, पीड़ा का अनुभव करता है तथा परिताप करता रहता है। यह जगत् की वास्तविकता है। यह किसी श्रमण का नहीं, अपितु सामान्य गृहस्थ के जीवन का चित्रण है।

संसार में अधिकतर मनुष्य लोभ के कारण अभावग्रस्त हैं। उन्हें जितना मिला है, उसमें सन्तुष्ट नहीं हैं। लोभ की भावना उन्हें जकड़े हुए है। लोभ उनके लिए दिन-रात परिश्रम का प्रेरक तत्त्व भी है तो दूसरी ओर मन की अशान्ति, तनाव और दुःख का हेतु भी है, इसलिए आचारांगसूत्र लोभ को अलोभ से जीतने की प्रेरणा करता है। परिग्रह की मात्रा अल्प हो या अधिक, जो उसमें आसक्त होता है वह आत्महित के मार्ग से भटका हुआ है। कोई कितना भी संग्रह कर ले, वह संग्रह व्यक्ति का सदा साथ नहीं देता। उसके संग्रह पर भाई-बन्धुओं, पुत्र-पुत्रियों की निगाह टिकी रहती है। कभी उसके जीवित रहते हुए तो कभी मरने पर उस धन के विभाजन हेतु उनमें कलह देखा जाता है। कभी चोरों के द्वारा तो कभी धोखेबाजों के द्वारा उस धन का हरण कर लिया जाता है। कभी राजा अथवा सरकार उस धन को आकस्मिक रेड (छापा) में छीन ले जाती है। कभी उस धन के बारे में अन्य किसी को जानकारी न हो तो वह संग्रहकर्त्ता के लिए अनुपयोगी होकर नष्ट हो जाता है। कभी आग लगने या प्राकृतिक प्रकोप में भी वह नष्ट हो सकता है। **(आचारांग 1.2.3.79)**

प्रायः मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक संग्रह अपेक्षित नहीं होता, किन्तु अपने परिजनों अथवा परिवार जनों की इच्छाओं की पूर्ति के नाम पर व्यक्ति क्रूर कर्म करता हुआ भी धन एवं साधन-सामग्री के संग्रह में लगा रहता है और ऐसा करता हुआ वह मूढ व्यक्ति अपने विपर्यास अथवा मिथ्यात्व को प्राप्त होता है। वह जिनके साथ रहता है उनको अपना रक्षक समझता है, किन्तु मृत्यु आने पर यह तथ्य सिद्ध हो जाता है कि कोई किसी का त्राण नहीं कर सकता। जिनके साथ रहता है वे भी एक-दूसरे के सुख के कारण परस्पर जुड़े रहते हैं। यदि वे परस्पर किसी कारण से दुःख के हेतु प्रतीत होते हैं, तो साथ रहना नहीं चाहते। इसलिए पुत्र पिता से, बहू सास से, पति पत्नी से अलग रहते हुए देखे गए हैं। अतः आचारांग अपने आश्रितों के लिए क्रूर कर्म न किए जाने की शिक्षा देता है, क्योंकि क्रूर कर्म का फल स्वयं कर्त्ता को भोगना पड़ता है। **(आचारांगसूत्र 1.2.4.81-82)**

यह मनुष्य की मूढता है कि वह संग्रह और परिग्रह में सुख मानता है तथा पर-पदार्थ और परिजनों पर आसक्त होता है। इस मूढता के रहते वह धर्म के सही स्वरूप को नहीं जान पाता- **सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति। (आचारांग सूत्र, 1.2.4.84)**

आचारांगसूत्र में एक ओर जहाँ मानव के मनोविज्ञान का और उसकी चित्त की अवस्थाओं का सम्यक् चित्रण किया गया है, वहीं दूसरी ओर इसमें जीवन-विकास के अनमोल सूत्र बिखरे हुए हैं। इसमें जगत् के समस्त प्राणियों की चेतना के प्रति आदर और

आत्मतुल्यता का भाव विकसित करने की प्रेरणा की गई है। एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक, पृथ्वीकायिक से लेकर त्रसकायिक तक समस्त जीवों के प्रति अहिंसक भाव के विकास पर बल दिया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सबको सुख अनुकूल लगता है, दुःख प्रतिकूल लगता है, वध अप्रिय लगता है, और जीवन प्रिय लगता है, सभी जीव जीना चाहते हैं। इसलिए किसी की हिंसा नहीं की जानी चाहिए।(आचारांग 1.2.3.70) अहिंसक समाज एवं पर्यावरण की स्थापना में आचारांग का यह कथन एक महत्त्वपूर्ण तर्क का कार्य करता है। इसमें हिंसा-त्याग के लिए अन्य प्राणियों की जिजीविषा को स्थान दिया गया है। आज की भाषा में कहें तो आचारांगसूत्र मात्र मानवाधिकार को नहीं, अपितु प्राणिमात्र के रक्षण के अधिकार को स्थापित करता है। वनस्पति में चेतना को प्रतिष्ठित करने का कार्य विश्व वाङ्मय में सर्वप्रथम आचारांगसूत्र द्वारा किया गया है। वहाँ वनस्पति में चेतना की तुलना मनुष्य से की गई है। जीव कोई भी क्यों न हो, उसके जीने की इच्छा का आदर आवश्यक है। निजस्वार्थपूर्ति के लिए अन्य समस्त प्राणियों के जीवन की हिंसा पर उतारू आज की संस्कृति को आचारांगसूत्र सावधान कर रहा है कि ऐसा करना अज्ञान एवं अहित का सूचक है। जिस प्रकार हमें किसी के द्वारा पीड़ा दिया जाना एवं वध किया जाना अभीष्ट नहीं है, उसी प्रकार हमें दूसरे प्राणियों के प्रति भी सोचना चाहिए। उन्हें होने वाले दुःख एवं हानि पर विचार करना चाहिए तथा उन्हें अपने समान समझना चाहिए।

आचारांग अहिंसा के साथ मनुष्य को सत्य में प्रतिष्ठित करता है तथा उसे बार-बार सत्य को जानने एवं सत्य में धृति करने की प्रेरणा करता है। आचारांग इस सत्य को प्रकट करता है कि मानव की मृत्यु अवश्यम्भावी है। अतः शरीर एवं प्राप्त वस्तु, व्यक्ति आदि से ममत्व स्थापित किए रखना उचित नहीं। ममत्व एवं परिग्रह से अपने को दूर कर लेना चाहिए। इसमें आत्महित निहित है। जो साधना के पथ पर नहीं चलता, शरीर, धनादि पर आसक्त बना रहता है वह उम्र बीतने के पश्चात् मूढता को प्राप्त करता है एवं सोचता है- यह जीवन तो व्यर्थ गया। मेरी कोई नहीं सुनता है, कोई नहीं मानता है, अब करूँ तो क्या करूँ? इसलिए जीवन में व्यर्थ की आशाओं एवं इच्छाओं को पालना उचित नहीं- **आसं च छंदं च विगिंच धीरे।** **(आचारांगसूत्र, 1.2.4.83)** जो मोह से आवरित लोग होते हैं, वे यह नहीं जान पाते हैं कि जिस भोगसामग्री को सुख का साधन समझा जाता है, उसका परिणाम दुःख रूप में भी प्राप्त होता है- **जेण सिया तेण णो सिया। इणमेव णावबुज्झंति जे जणा मोहपाउडा।** **(आचारांगसूत्र, 1.2.4.83)**

सत्य को जानने, समझने एवं अंगीकार कर तदनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा आचारांग सूत्र में स्थान-स्थान पर उपलब्ध होती है। सत्य में धृति करने वाला व्यक्ति हिंसादि पापों से विरत हो जाता है तथा वह मेधावी बनकर समस्त पाप कर्मों को क्षय करने में समर्थ होता है।

(आचारांगसूत्र,1.3.2.117)

इसी प्रकार आचारांग में ममत्व एवं परिग्रह के त्याग की प्रेरणा बार-बार की गई है। उसको दृष्टपथ मुनि कहा गया है जो ममत्व का त्याग कर देता है। (आचारांगसूत्र, 1.2.6.97) परिग्रह हिंसा एवं दुःख का कारण है। वह व्यक्ति को संसार से बांधता है। इसलिए साधक को चाहिए कि वह परिग्रह से अपने को दूर कर ले। (**परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा**-आचारांगसूत्र, 1.2.5.89)

समता में धर्म है, यह कथन आचारांगसूत्र का है। (1.5.3.157) समता के अभ्यास के बिना राग-द्वेषादि पर विजय पाना कठिन है। अनुकूलता-प्रतिकूलता, हानि-लाभ, मान-अपमान आदि के अवसर पर जो समता में रहता है वह दुःख रहित हो सकता है, क्योंकि वह पाप नहीं करता- **समत्तदंसी न करेइ पावं।** आज मानव की दृष्टि निर्मल नहीं है, इसलिए वह जो भी कर्म करता है वह बंधनकारी बन जाता है, अथवा दुःखमुक्ति में सहायक नहीं होता। आत्म-विकास की प्रथम सीढ़ी दृष्टि की निर्मलता है। उसी से सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है तथा ज्ञान एवं आचरण में निर्मलता आती है। सही ज्ञान होने के पश्चात् उस पर आचरण न करना प्रमाद है। आचारांगसूत्र इस प्रमाद के त्याग हेतु साधक को बार-बार प्रेरित करता है तथा आत्मलक्ष्य पर सजगतापूर्वक चरण बढ़ाने की प्रेरणा करता है।

आचारांगसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में एषणा समिति से प्रारम्भ कर भाषा, ईर्या आदि अन्य समितियों पर भी प्रकाश डाला गया है। पंच महाव्रतों की सीधी चर्चा प्रथम श्रुतस्कन्ध में नहीं हुई है, किन्तु द्वितीय श्रुतस्कन्ध में समुपलब्ध है। प्रथम श्रुतस्कन्ध इन पंच महाव्रतों के मर्म को इनका नाम गिनाए बिना उद्घाटित करता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह की सही समझ प्राप्त करने में प्रथम श्रुतस्कन्ध अत्यन्त उपयोगी है। आचारांग में आत्मवाद, कर्मवाद, क्रियावाद, लोकवाद का सांकेतिक निरूपण है तो आत्मा एवं पुनर्जन्म की अवधारणा को भी पुष्ट किया गया है। आचारांग असंग होकर जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। ध्यान-साधना पर भी इसमें प्रभूत सामग्री उपलब्ध है।

आचारांग का प्रथम श्रुतस्कन्ध जहाँ आभ्यन्तर साधना का मार्गदर्शक है वहाँ द्वितीय श्रुतस्कन्ध में साधना के बाह्य स्वरूप को प्रकाशित किया गया है। आचारांग की उपयोगिता को संक्षेप में जानना चाहें तो कहा जा सकता है कि यह चेतना पर छाए भीतरी आवरणों की कारा को काटने का सामर्थ्य प्रदान करता है। यह चित्त को निर्मल बनाने की समझ उत्पन्न करता है, प्राणिमात्र के प्रति आत्मीय भाव को गहरा करता है तथा संयम-साधना में अप्रमत्त रहकर परमसुख की प्राप्ति हेतु बोध एवं अभिप्रेरणा प्रदान करता है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

से बेमि- से जहा वि अणगारे उज्जुकडे णियागपडिवण्णे अमायं कुव्वमाणे वियाहिते। -आचारांगसूत्र, 1.1.3.19

अर्थ एवं विवेचनः

तीर्थंकर महावीर की वाणी आचारांगसूत्र के उपर्युक्त सूत्र में अनगार की तीन विशेषताओं का निरूपण किया गया है- 1. जो अनगार होता है वह ऋजुकृत् होता है। 2. वह मोक्षमार्ग के प्रति एकनिष्ठ होकर आचरण करता है। 3. वह माया रहित होता है।

अनगार का तात्पर्य है गृह-त्यागी साधु। अगार घर को कहते हैं तथा जिनका अपना कोई घर नहीं होता, वे अनगार कहलाते हैं। जो घर बसाना चाहते हैं, किन्तु अभी जिनके पास घर नहीं है, वे भी किसी अपेक्षा से अनगार कहे जा सकते हैं, किन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में अनगार उन्हें कहा गया है जो घर को त्याग चुके हैं तथा अब किसी प्रकार का घर बसाना भी नहीं चाहते हैं। उनके मन में घर बसाने की वासना समाप्त हो गई है, अतः वे अनगार हैं। अब शरीर की दो आवश्यकताएँ शेष रहती हैं- आहार एवं वस्त्रादि। इनकी पूर्ति अनगार गृहस्थ के घरों से एषणा करके करते हैं। ठहरने के लिए आवास भी वे अल्पकाल हेतु किसी से याचना करके लेते हैं। संसार में उनका अपना कोई नहीं होता, किन्तु वे षट्कायिक जीवों की रक्षा में तत्पर रहने के कारण लोकनाथ कहलाते हैं। उनका किसी से ममत्व नहीं होता, किन्तु आत्मीयता सबके प्रति होती है।

जो अपना कुछ भी मानकर चलता है वह राग-द्वेष से रहित नहीं हो सकता, क्योंकि जिसको अपना मानकर चलेगा उसके प्रति ममत्व होना स्वाभाविक है। ममत्व के साथ जीवन में अनेक दोष घर कर जाते हैं। अनगार का पथ मोक्ष का पथ है। उसका लक्ष्य सर्वविध दुःखों से छुटकारा है। इसके लिए वह मोहकर्म का क्षय करता हुआ समस्त कर्मों के क्षय की ओर कदम बढ़ाता है। मोक्षपथ पर वही अपने चरण बढ़ा सकता है, जो भीतर से सरल हो। छल-छद्मपूर्वक जीवन-निर्वाह करने का विचार उसके मोक्षपथ में बाधक है तथा अनगारता पर कलंक है। वह सरल होकर ही शुचि हो सकता है। उसका आचरण माया से रहित होना चाहिए। मायावी जीवन साधु के लिए हेय है। वह लोगों को आकर्षित करने के लिए यदि तंत्र-मंत्र आदि का आलम्बन लेता है, संयमाचरण में दिखावा करता है, सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थ नहीं करता है तो यह उसका मायावी जीवन है। कषाय-जय के मार्ग में सरलता ही उपादेय है, मायाविता नहीं।**-सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (16)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- जन्म-मरण के चक्कर को मिटाने का पुरुषार्थ ही सच्चा पुरुषार्थ है।
- शब्द, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श- ये व्रतों को दोलायमान कर सकते हैं तो डोलते हुए को स्थिरता भी दे सकते हैं।
- शरीर की जगह आत्मा को धोना है, सम्यक्त्व प्राप्तकर कषायों को धोना है। कर्म-कचरे को धर्म के माध्यम से हटाना है।
- कम से कम एक घण्टा सामायिक में बैठकर वीतराग-वाणी जरूर सुनिये। शेष वक्त में उस पर चिन्तन करिये।
- अहिंसा के निषेधात्मक रूप के साथ उसका सकारात्मक रूप अपनाइये। आज उसकी विशेष आवश्यकता है।
- घर-घर में मोटर गैरेज न हो तो कोई बात नहीं, किन्तु श्रीकृष्ण के गोपालन के सिद्धान्त की घर-घर में पालना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।
- किसी व्यक्ति को छह दुःख हैं और मुझे छह सुख हैं तो मेरा एक सुख उसे अर्पण कर दूँ, ऐसी भावना वाला व्यक्ति भाग्यशाली है।
- साता का सुख कर्मोदय से मिलता है और अव्याबाध सुख कर्म-क्षय से मिलता है।
- एक जीव मिथ्यादृष्टि से सम्यक्दृष्टि बनता है तो वह सारे लोक में जीवमात्र को अभयदान देने वाला बनता है।
- सेवा से जीवन में चमक आती है।
- स्वदया में सारी दयाओं का समावेश हो जाता है।
- मनसा, वाचा, कर्मणा तप 'तप' है।
- खाने के साथ पचाना जरूरी है, वैसे ही श्रवण के साथ आचरण जरूरी है।
- दृष्टि का विकास होने पर समस्त मनुष्यों के प्रति अपनत्व जागता है। दृष्टि पवित्र बनती है तो व्यक्ति चारित्रिक क्षेत्र में ऊँचा उठ जाता है। वह मानव तक ही नहीं, जीवमात्र पर दया करता है।
- साधु के दो बड़े बल हैं- एक संयम और दूसरा तप। श्रावक के दो बड़े बल हैं- शील और दान।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

उद्‌बोधन

आचारांग है माँ

महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

जन्म के बाद हम माँ की गोद में आते हैं। दीक्षा लेते ही आचारांग की गोद में आ जाते हैं। जिस प्रकार मां प्रतिपल प्रेम, वात्सल्य देकर आगे बढ़ाती है। उसी प्रकार आचारांग सूत्र भी कहता है कि हे जीव! तू छः काया के साथ प्रेम कर। तू सबसे प्रेम कर, सब तुझसे प्रेम करेंगे। जैसे मां दूध पिलाकर पुष्टि देती है, वैसे ही आचारांग सूत्र आध्यात्मिक-शक्ति की पुष्टि करता है।

बचपन में एक गोद से दूसरी गोद में जाते हैं। ठीक वैसे ही आचारांग की गोदी में जाने के बाद अन्य आगमों की गोदी में हम खेलते हैं। एक आगम से दूसरे आगम की गोदी में जाते हैं। वर्तमान में बच्चे अस्पताल में जन्म लेते हैं। जन्मते ही डॉक्टर के हाथ में चले जाते हैं। बात यही है कि वर्तमान में हम सबसे पहले दशवैकालिक सूत्र के हाथ में जाते हैं। साधक को उसके बाद आचारांग की गोद मिलती है। उसके बाद वह पुष्टि को प्राप्त होता है। मां लाड़-प्यार करती है और डांट-डपट भी। इसके बावजूद उसके अन्तर में वात्सल्य की धारा बहती रहती है। आचारांग सूत्र भी कम नहीं है। यह डांटता है। देखो, कितनी डांट इसमें भरी पड़ी है। साधक गलती करता है तो उसे प्रमादी, मूढ़, बाल, अज्ञानी आदि कहा गया है। इसी तरह पुचकारता है, पीठ भी थपथपाता है। वह कहता है, अरे तू ऋजु है, लोकदर्शी है, सदा जागृत रहने वाला है। इसका मतलब है, आचारांग मां का दायित्व निभाता है।

आचारांग स्वाध्यायशाला में सबसे पहले महासती श्री चारित्रलताजी के प्रवचन से शुरूआत हुई थी। पल्लीवाल परिवार से सर्वप्रथम दीक्षित होने वाले यही साध्वी जी हैं। मात्र 16 वर्ष की किशोरावस्था में इन्होंने मासखमण कर लिया। जब इनके परिवार वालों ने देखा कि यह तो रिकॉर्ड तोड़ रही हैं तो इनकी मां कहां पीछे रहने वाली थी। इनकी मां ने भी अन्तिम समय में संथारा करके वीरमाता का परिचय दिया। "आचारांग की नौका में तिरने का मौका - मुनि जीवन" विषय पर महासती चारित्रलताजी ने अच्छा विवेचन किया। आचारांग कहता है कि शरीर से ही शरीर को धुनना है। औदारिक शरीर के द्वारा कार्मण शरीर को धुनना है। तीन भाई हैं और बुखार आ गया है। थर्मामीटर हाथ में लिया, देखा बुखार 105 डिग्री है। इस पर गुस्सा आ गया। एक ने थर्मामीटर ही तोड़ डाला। दूसरे ने कहा कि हां ठीक है, इतना बुखार है। लेकिन तीसरे ने मूल कारण को पकड़ा। अपने को भी मूल कारण पकड़ना है।

प्रकाशचन्द्रजी ने अपने अनुभव से बताया कि आचारांग का अध्ययन करने के बाद

पता चला कि इसे पढ़ना क्यों जरूरी है। इस सूत्र पर चिन्तन करने से विशुद्धि बढ़ती गई। प्रकाशचन्द्रजी पटवा ने ठीक ही कहा कि जब आचारांग सूत्र हाथ में लेते हैं तो मंगल ही मंगल हो जाता है। "सुयं" शब्द के माध्यम से विनय की गहराई और महत्ता बताई गई। सूत्रकार स्वयं बोल सकते थे। क्योंकि वे चार ज्ञान के धारी थे। लेकिन सुयं शब्द के माध्यम से उन्होंने अपना विनय प्रकट किया। दूसरी बात यह है कि आचारांग के अध्ययनों में पूरे नौ तत्त्वों की बात आ गई है। शान्तिलालजी बोहरा ने आचारांग के माध्यम से श्रावक जीवन के लिए श्रेष्ठ मार्गदर्शन किया। जैसे किसी बड़े शोरूम में कोई धनाढ्य व्यक्ति जाता है तो उसे सबसे पहले मामूली चीज़ नहीं दिखाई जाएगी। वैसे ही तीर्थंकर भगवान भी सबसे पहले साधु धर्म की देशना प्रदान करते हैं। उनके बाद डॉ. जयन्तीलालजी जैन ने ध्यान के बारे में सुन्दर मार्गदर्शन किया। महासतीजी ने आचारांग पर पूरी तैयारी और सन्दर्भो के साथ प्रवचन दिया।

दूसरे दिन आचारांग सूत्र को सामने लाने वाली योजना भाग्यप्रभाजी ने रखी। भगवान महावीर के उपसर्ग और परीषह के बारे में सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब तक मुक्ति नहीं मिले, तब तक सहन करना है। मनीषीप्रवर डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने बताया कि प्रमाद संसार में रुलाता है। कई बार ऐसा होता है कि शरीर में दर्द हो रहा होता है। किन्तु जब आचारांग का स्वाध्याय करने बैठ जाते हैं तो वेदना भी याद नहीं रहती है। अप्रमाद वृत्ति आ जाती है। डॉ. प्रियदर्शनाजी ने आचारांग में आध्यात्मिक सूत्रों के बारे में बताया। श्रीमान् पी.एस. सुराणाजी ने अनुकम्पा का विषय लिया। अनुकम्पा सम्यक्त्व का लक्षण है। आज के वैज्ञानिक भी आगम का सहारा लेते हैं। प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द्रजी ने ठीक ही कहा कि मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से ही सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। आचारांग में शुरू से लेकर अन्त तक यह बात दृष्टिगोचर होती है। आचारांग में कहा गया है कि अज्ञान, प्रमाद और कषाय छोड़कर वीतरागता की ओर निरन्तर बढ़ते जाना है।

गुरुदेव आचार्य भगवन्त का उपकार नहीं भुलाया जा सकता है कि उन्होंने दो दिवसीय आचारांग स्वाध्यायशाला (15-16 अक्टूबर 2011) के लिए अनुमति प्रदान की। चेन्नई संघ के श्रावकों ने आगम की महिमा जानी और पेटी में बन्द आचारांग को सबके समक्ष रखने में निमित्त बने। आचारांग सूत्र का स्वाध्याय निरन्तर होना चाहिये। श्रोताओं ने भी आगम के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए दो दिन गर्मी का परीषह सहन किया। भगवान ने तो अगणित परीषह सहे, उनके सामने हमारे परीषह नगण्य हैं। ऐसे ही हमें आगे बढ़ते रहना है। अलमारियों में पड़े आगमों का स्वाध्याय कर हम आत्मा से जुड़ें तथा आत्मा से परमात्मा की ओर आगे बढ़ें।

प्रवचन

आचारांग में प्रभु महावीर की साधना

महासती श्री भाग्यप्रभा जी

अध्यात्म का सूर्योदय करने में प्रबल सामर्थ्यवान अंग सूत्रों में प्रथम अंग आचारांग सूत्र में प्रारम्भ के आठ अध्ययनों में साधना का व्याख्यान किया। तत्पश्चात् नवम अध्ययन में साधना के उत्तुंग शिखर पर आसीन साधक प्रभु महावीर का जीवन्त उदाहरण दिया। संभव है कि आगमकार उपदेशक और उपदेश दोनों पर परिपूर्ण विश्वास जगने पर ही साधना की पूर्णता मानते हों, वाचक व वाच्य दोनों विश्वसनीय होने चाहिए। प्रिन्सिपल को जीनेवाला ही प्रिन्स होता है। आचारांग के आठ अध्ययनों की उपादेयता को जीने वाले वीर ही नहीं अपितु महावीर कहलाये। प्रभु महावीर का जीवन वृत्त आचारांग का अंतिम मंगल रूप है। प्रथम सूत्र से आत्मा की यात्रा प्रारम्भ हुई जिसका अंत परमात्मा पर हुआ।

'उपधान श्रुत' नवम अध्ययनः

नवम अध्ययन का नाम 'उपधान श्रुत' है। उपधान का अर्थ है सम्बल, सहारा, आलम्बन। शय्या पर सुख से सोने के लिए सिर के नीचे सहारे के लिए रखा जाने वाला तकिया आदि द्रव्य उपधान है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप भाव उपधान हैं, जिनसे चारित्र को सुरक्षित रखने के लिए सहारा मिलता है। इससे साधक को अनंत सुख और आनंद की अनुभूति होती है। जल भी अपने आप में द्रव्य उपधान है, जिसके द्वारा मलिन वस्त्रों को शुद्ध किया जाता है, किन्तु तप भाव उपधान है जो कि आत्मा पर लगे कर्म मैल को दूर करने का प्रभावी कार्य करता है। यह तो हुआ 'उपधान' शब्द का भावार्थ तथा इसी उपधान के साथ जुड़ा हुआ है 'श्रुत'। अर्थात् श्रमण भगवान महावीर से सुना हुआ उपधानमय जीवन अथवा ऐसा कहा जा सकता है कि आर्य सुधर्मा ने भगवान महावीर के साधना काल की प्रत्यक्ष दृष्टविवरणी प्रस्तुत की है। आर्य सुधर्मास्वामी ने उपसर्ग-परीषह के उदय होने पर धृति के द्वारा नवीन उपलब्धि में लीन रहे परमपिता महावीर की जीवन कहानी स्वयं ने सुनी तथा इस अध्ययन में कही। यह अध्ययन साधक को ज्ञान-दर्शन-चारित्र की पावन त्रिवेणी के नजदीक लेकर जाता है।

यह अध्ययन अंत में क्यों? प्रभु महावीर की साधना चर्या का अध्ययन आचारांग में प्रथम न होकर अंतिम है। इसका कारण है कि आचारांग आत्मा से परमात्मा की आनंदपूर्ण यात्रा है। पहले साधना की गहराई से भरे सूत्रों का बोध करवाकर उन सूत्रों को जीने वाले प्रभु महावीर का प्रभावशाली वर्णन किया गया। आचारांग क्षीर समुद्र है तो परमात्मा

महावीर उसके कुशल तैराक हैं। आठ अध्ययनों को पढ़कर साधकों के मन में कहीं यह शंका न हो जाए कि यह सब जीना असंभव है, अतः इसकी सम्भावना प्रभु महावीर की साधना विधि के साथ वर्णित की गई है। जैन दर्शन तीर्थंकरों को आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। यह उनके चरणों का अनुगमन मात्र नहीं, अपितु उनके द्वारा फरमाई गई वाणी का अनुगमन सिखलाता है।

चार उद्देशकों का क्रमः- नवम अध्ययन के प्रथम उद्देशक में चर्या, द्वितीय में शय्या, तृतीय में परीषह, चतुर्थ में चिकित्सा-त्याग का निरूपण है। आगम के प्रत्येक शब्द, प्रत्येक अक्षर, प्रत्येक मात्रा सहेतुक होते हैं तो इसमें अध्ययनों का क्रम व उद्देशकों का क्रम भी सहेतुक ही होता है। चर्या साधक का प्रिय धर्म है। चरैवेति-चरैवेति उक्ति उसमें सार्थक होती है। परन्तु शारीरिक क्षमता के अनुसार अस्थायी पड़ाव भी रखना पड़ता है। चर्या तथा शय्या में आत्मधर्म के प्रति जागरुक रहते हुए मुनि पर परीषह-उपसर्गों का होना आश्चर्यजनक नहीं है। प्रभु महावीर की दीक्षा के प्रारम्भ से ही कष्ट आने लगे 'अहुणा पव्वइए रीइत्था' अर्थात् भँवरे आदि चार माह तक मँडराते रहे, उस समय भगवान के पास देव दूष्य वस्त्र था, फिर भी तन को ढ़कने का किंचित् मात्र भी प्रयास नहीं किया, प्रभु साता की गवेषणा से रहित थे। इस तरह उपसर्ग-परीषह को समभाव से सहन करने वाले ही साधक होते हैं तथा वे चिकित्सा की मन से भी इच्छा नहीं करते हैं, यही है चतुर्थ उद्देशक।

दार्शनिक विषयः-

भगवान महावीर की प्रस्तुत जीवनी अपने आपमें सत् मत की मण्डक है एवं असत् मत की खण्डक है। अनेकानेक स्थानों पर अनेकानेक मान्यताओं का सुपोषण होता है। अज्ञानवादियों का मानना है कि अज्ञान में ही सुख है व ज्ञान ही सब दुःख का कारण है, जो जितना जानता है वह उतना ही शंकाशील होकर रहता है। परन्तु प्रभु महावीर का मानना था कि "अदु सव्व जोणिया सता कम्मुणा कप्पिया पुरो बाला" अर्थात् अज्ञानी जीव अपने ही कर्मानुसार पृथक्-पृथक् रूप धारण करते हैं। चार्वाक दर्शन वाले आत्मा को पंचभूतात्मक मानते हैं। उनका कहना है कि पंचभूतों के पृथक्-पृथक् होने का नाम ही मृत्यु है, आत्मा पूर्वजन्म व पुर्नजन्म नहीं करती है। पर प्रभु महावीर का दृष्टिकोण इस विषय में भिन्न था- "एताइं संति पडिलेहे चित्तमंताइं से अभिण्णाय" वे पृथ्वी, अप् आदि काय को चेतनाशील मानते थे तथा इनके आरम्भ का त्याग करके विहार करते थे। कुछ अज्ञानी ऐसा मानते हैं कि जीव की योनि परिवर्तित नहीं होती, स्त्री मरकर स्त्री बनती है तथा बकरी मरकर बकरी बनती है, परन्तु त्रिलोकीनाथ प्रभु ने निजज्ञान से समझाया कि "अदु थावरा य तसताए तसजीवा य थावरत्ताए" स्थावर जीव त्रस के रूप में उत्पन्न हो जाते हैं और त्रस जीव स्थावर के रूप में

उत्पन्न हो जाते हैं। अतः प्रभु ने योनि परिवर्तन स्वीकार किया है। वेदान्त व सांख्यदर्शन का मानना है कि मात्र ज्ञान ही मुक्ति का कारण है, परन्तु प्रभु ने तो "कम्मं च सव्वसो णच्चा तं पडियाइक्खे पावगं भगवं" कर्मबन्धन के सर्वांग स्वरूप जानकर कर्म के उत्पादन रूप पाप का प्रत्याख्यान कर दिया था। अर्थात् भगवान ज्ञान-क्रिया के समन्वय से मोक्ष का होना स्वीकारते थे, तथा उसी पथ पर गतिमान भी थे। वेदान्तियों का मत है कि यह जगत् ईश्वर के द्वारा निर्मित है। प्रभु महावीर ईश्वर कर्तृत्ववाद के मत को स्वीकार नहीं करते थे। उनका ज्ञान तो कहता था कि 'सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला" अर्थात् जीव स्वकर्म के कारण ही संसार में स्थित हैं। अतः उपधान श्रुत नामक यह अध्ययन प्रभु महावीर की साधना चर्या के साथ-साथ जैन दर्शन का, जैन मत का प्रतिपादक भी है, तथा सुपोषक भी है।

सैद्धान्तिक विषयः-

जो अंत तक सिद्ध होते हैं, वे ही सिद्धान्त कहलाते हैं। सिद्धान्त कभी तोड़े-मरोड़े नहीं जाते। जो सिद्धान्तों के अनुसार चले वह ही संघ है, नहीं तो वह टोला है। गुरु भगवन्त की शिक्षा भी प्राप्त हुई कि सिद्धांत से समझौता नहीं, व्यवहार में कठोरता नहीं। प्रभु महावीर के सिद्धांत तो मुकुरवत् स्पष्ट व पारदर्शी हैं, पर कालचक्र से किसी-किसी स्थान पर धूल उड़ने से वर्तमान में वे हमें अस्पष्ट प्रतीत होते हैं।

दीक्षा के समय भगवान ने कंधे पर डाले हुए एक शाटक वस्त्र को निर्लिप्त भाव से ग्रहण किया था। अगर वस्त्रधारी को मुक्ति नहीं होती तो वे "संवच्छरं साहियं मासं" अर्थात् 13 महीने तक उसे धारण क्यों करते, उसे मोक्ष का बाधक कारण समझकर तत्काल त्याग कर देते, पर प्रभु ने वस्त्र लगभग 13 माह धारण किया। इससे स्पष्ट होता है कि वस्त्र मोक्ष का बाधक नहीं है, अपितु वस्त्र के प्रति राग मोक्ष का बाधक है। एवं खु अणुधम्मियं- अर्थात् भगवान ने ही नहीं उनके पूर्व के तीर्थंकरों ने भी वस्त्र धारण किया था यह भगवान को अनुधर्मित था। प्रथम उद्देशक की 12 वीं गाथा में स्थावर को चेतनावान माना है। जबकि कुछ लोग मात्र त्रस में ही जीव का अस्तित्व मानते हैं।

बासी भोजन अकरणीय है ऐसे मत वालों का भी यहाँ सुन्दर समाधान है। 'राओवरांत अपडिण्णे तथा सीयपिंड पुराणकुम्मासं' इन सूत्रों से स्पष्ट ध्वनित होता है कि प्रभु स्वयं शीतपिण्ड को ग्रहण करते थे। अतः रात्रि का भोजन अगले दिन अगर विकारयुक्त नहीं हुआ है तो वह ग्राह्य ही है। भगवान व्यवहार व निश्चय दोनों का संतुलन करके चलते थे। यह भी इस अध्ययन से स्पष्ट ध्वनित होता है। व्यवहार को पालने के लिए वे अनुधर्मिता अर्थात् पूर्व तीर्थंकरों की परम्परा का अनुपालन करते थे तथा निश्चय में तो भयानक कष्ट उपसर्ग आने पर अपनी दृष्टि मात्र आत्मा पर ही केन्द्रित रखते थे।

भगवान के संबोधनः-

सुधर्मा स्वामी ने अपने सर्वस्व रूप प्रभु महावीर को कई गुणों के स्वामी बताते हुए कई सुन्दर सार्थक संबोधन दिये। भगवान का शोक शुष्क होने से उन्हें 'विसोगे' कहा तो एक आत्मा में ही रमण करने से 'एगतिगत्ते' कहा। प्रभु को श्रद्धावश 'अदक्खु' कहा तो 'अभिण्णदंसणे' भी कहा, क्योंकि परिवर्तनशील संसार की प्रत्येक वस्तु निरंतर काल रूप अग्नि में जल रही है। अतः प्रयत्न कर वे इस संसार से भिन्न व आत्मस्वरूप की लवलीनता से अभिन्न होने में प्रयासरत थे। आर्य सुधर्मास्वामी ने अपने गुरु व अपने प्रभु महावीर का परिचय अपने अंतेवासी शिष्य को देते हुए प्रभु को माहणेण, मतिमता, अबहुवादी, अचले, संवुडे, पारए, महावीरे आदि अनेकानेक संबोधनों से संबोधित कर निज उत्कृष्टतम भक्ति को प्रदर्शित किया तथा इन गुणों के स्वामी बनने की प्रेरणा भी प्रदान की।

प्रभु की साधनाः- हे मेरे महावीर! आपके दीक्षा लेते ही बहुत सारे भ्रमर सुंगध के कारण आप पर मंडराते थे, यहाँ तक कि रस न मिलने से क्रोधित हो जोर-जोर से डंक भी मारते थे, तो भी प्रभु आप उन पर भी मैत्री की धाराएँ बहाते रहते थे। आपको एक पल के लिए भी उन पर क्रोध नहीं आता था। आप तो ध्यान में लीन रहते और अज्ञानी वहाँ आकर आपको हंता-हंता कहकर मारते, पीटते, प्रहार करते तो भी प्रभु आपने प्रतिक्रिया करना तो दूर उन्हें पलक उठाकर नाराजगी से देखा तक नहीं। आप तो "सयं पवेसिता झाति" स्वयं ध्यान में प्रवेश कर जाते। अब बाहर आपके देह के साथ कोई खेले, कोई नोचे, कोई उसकी हड्डियाँ भी गिने तो भी आप इस देह से बेपरवाह ही रहते थे। आपने उन सब परीषहों को ऐसे सहन किया जैसे आपके साथ कुछ हुआ ही नहीं। भगवन् वहाँ आपको बचाने कोई नहीं आता था ना! आप क्या हैं यह समझाने भी कोई नहीं था ना! आपने तो भय को ही भयभीत कर दिया, अशरण को ही अपनी शरण मान लिया। भयंकरता को अपना साथी बना लिया। कष्टों की भूमि पर खड़े होकर आप अध्यात्म के आसमान से भी और ऊँचे उठ गए थे। दिन में इतना ध्यान करते थे तो भी थकते नहीं और रात्रि में भी खड़े-खड़े ध्यान करते रहते। नींद आने ही नहीं देते, आने लगती तो आप कुछ चल लेते, पर घाति प्रकृति के हाथ नहीं लगते। हे दुक्खसहिष्णु! आपने तो ठान लिया है मैं कोई मोम नहीं जो पिघल जाऊँ, स्पंज नहीं जो दब जाऊँ व धूल नहीं जो पानी संग बह जाऊँ, आपने तो कष्टों की कजराली रात्रियों में संकट की बिजलियों में ही अपना निर्णीत पथ पूर्ण किया। किसी ने अंग-भंग किए तो किसी ने डण्डे मारे, किसी ने बाल खींचे, तो भी आपने किसी को शाप नहीं दिया। जनता प्रश्न पूछकर आपके ध्यान में विघ्न डालती तो भी आप तो गहराई में डूबे रहते। रात्रि में ठण्ड से बचना तो दूर, हे महावीर! आप स्थिर ध्यान करते। प्रभु आपकी दृढ़ता के आगे धन्य शब्द

भी बहुत छोटा है। गिद्ध नौंचते, साँप-नेवला काट खाते, ग्रामरक्षक-कोतवाल मन चाहे कष्ट देते, चोर पीटते, किन्तु परीषहों की सेना को आपने नृप बनकर उसे धराशायी कर दिया। आपकी सागर सी समता थी अतः किसी को रोका तक नहीं। आपने कैसे कोद्रव, उड़द व बेरचूर्ण से ही 8 मास 15 दिन बिता दिए ओर बीच-बीच में तपस्या की। प्राकृतिक रूप से ही इतने कष्ट आ रहे थे और ऊपर से आतापना, अभिग्रह, तपस्या थी। आपने मोह पर क्या गजब की चढ़ाई की, भगवन्! हम तो आपकी साधना का स्मरण अहोभावों से करते हुए ही अपने आप को धन्य-धन्य मानते हैं।

इस अध्ययन की विशेषताः- यह नवम अध्ययन पढ़कर कोई भी सहृदय व्यक्ति भव-भव के लिए महावीर का शरणार्थी न हो यह नहीं हो सकता। इसका स्वाध्याय कर साता की आसक्ति टूटती है तो देहाध्यास की अनुभूति छूटती है। स्वाधीनता विकास पाती है तो निर्भयता चरम पर जाती है। कष्ट सहिष्णुता उल्लास पाती है तो समता नजदीक आती है। पुरुषार्थ की लगन लगती है तो मंजिल पूर्व विश्राम नहीं, यह शिक्षा मिलती है। मंजिल के लिए किस हद तक सहना यह बात इस अध्ययन से ही समझ में आती है। इस अध्ययन के चारों उद्देशक की अंतिम गाथा समान है। इसमें पुच्छिसुणंवत् भगवान को उपमा से उपमित न कर यथार्थ के धरातल पर महावीर को प्रस्तुत किया गया है। इसमें न तो गुणवर्णन हैं न गुण स्तुति, पर बता दिया कैसे थे हमारे प्रभु परम सद्गुणी। यह अध्ययन न प्रार्थना है, न स्तुति, यह है प्रभु की भव्यता पर भव्य कृति। अतः यह पुच्छिसुणं से भिन्न प्रभु महावीर के द्वारा सुने गए सुधर्मा स्वामी के शब्द हैं। पुनः 'अपडिण्णे' शब्द से परमात्मा महावीर की साधना की उत्कृष्टता को प्रकाशित किया गया है। यह अध्ययन साधकों के हृदय मंदिर में महावीर की प्राण प्रतिष्ठा कर सकता है। दुःखद विषय है की आज कुल जैनियों में से 1-2 प्रतिशत जैनियों ने भी महावीर कथा सांगोपांग पढ़ी नहीं होगी। प्ररूपक पर आस्था के बिना प्ररूपणा पर आस्था कैसे हो सकती है। प्ररूपक पर आस्था उनके जीवन चरित्र को जानकर ही हो सकती है।

आचारांग से प्रेरणाएँ:- आचारांग सूत्र प्रेरणाओं का पुष्कर मेघ है। अनेकानेक प्रेरणाओं का पुंजरूप आचारांग सिखलाता है कि उपाधियों का त्याग ही श्रेयस्कर है। भाव रखो माध्यस्थ, कर्म हो जाएँगे अस्त। बनना है हमें उत्थानवादी, हरहाल नहीं बनेंगे पलायनवादी। न आग्रह न विग्रह ना ही हठाग्रह, रहना हमें आत्मगृह। खाने के लिए नहीं जीना, जीने के लिए आवश्यक हो तो खाना। सहना है साधना, विषमता है विराधना। प्रत्येक परिस्थिति है उपकारी, समता रह जाये तो मोक्ष की बारी। लक्ष्य पर टिक जाए दृष्टि, फिर क्या बिगाड़े उपसर्ग-परीषहों की वृष्टि। अतः आचारांग का नवम अध्ययन चेतना की चिन्मय ज्योतिवत् है।

प्रवचन

आचारांग में दुःख-मुक्ति के उपाय

महासती श्री संगीताश्री जी म.सा.

तृषा के दुःख से पीड़ित हिरण पानी रूपी सुख के लिए अहर्निश दौड़ लगाता है, पर वह सुख का अधिकारी नहीं होता है; क्योंकि उसकी दिन-रात की दौड़ रेगिस्तान की धरा पर चलती है। मानव शारीरिक-मानसिक सुख पाने के लिए दौड़ लगाता है, लेकिन सुख नहीं मिलता है; क्योंकि दौड़ संसार रूपी रेगिस्तान पर हो रही है। चातक जब धरती के पानी से प्यास बुझाने में सक्षम नहीं होता है तो वह उसमें मुँह डालने की कोशिश भी नहीं करता है। वह मेघ का इंतजार करता है। जब वर्षा आती है तब वह अपनी प्यास बुझाता है। जीव को दुःख का ज्ञान होना चाहिये। जैसे-जैसे दुःख का ज्ञान होगा, वैसे-वैसे मुक्ति के उपाय जानने के प्रयास होंगे। दुःख-स्वरूप को जानकर ही दुःख-मुक्ति को जाना जा सकता है। दुःख-मुक्ति की राह को जानकर, उस पर चलकर, मंजिल तक पहुंचेंगे तब दुःख-मुक्त हो सकेंगे।

आचारांग सूत्र में दुःख के कारण और दुःख-मुक्ति के उपाय बताए गये हैं। जहां समस्या है, समाधान भी वहीं है। इसलिए भगवान ने जहां दुःख का स्वरूप बताया है, वहीं दुःख-मुक्ति का उपाय भी बताया है। दुःख का कारण मोह है और दुःख-मुक्ति का उपाय मोह का नाश है।

जैसे-जैसे भीतर के मोह को कम करते हैं, वैसे-वैसे दुःख का नाश भी होता है। मोह का जैसे-जैसे शमन होता है, वैसे-वैसे मुक्ति की तरफ आत्मा बढ़ती है। उत्तराध्ययन के 32वें अध्ययन की 8वीं गाथा है -

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं।।

जिसके भीतर मोह का अन्त हो गया है, उसके दुःख का भी अन्त हो गया है। एक मोह के कारण सारे दुःख हैं, कषाय हैं, कामनाएं हैं, परिग्रह है। इसीलिए मोह को कर्मों का राजा कहा गया है। मोह से सारे दोष आ जाते हैं। दोष मानव को दुर्बुद्धि और दुराचरण की ओर ले जाते हैं। इससे व्यक्ति प्रमादी बनता है और दोषों में वृद्धि होती जाती है। साधक को इन दोषों और प्रमाद से मुक्त होने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। आचारांग के पहले

अध्ययन में बताया गया है कि अज्ञान सबसे अधिक दुःख का कारण है। उत्तराध्ययन में भी बताया गया है कि जितनी भी अविद्या की स्थितियां हैं, वे सब दुःख की कारण हैं। अज्ञान की दशा में दुःख होता है और दुःख के वास्तविक कारण को न जानता हुआ आत्मा अन्ततः दुःख को ही बढ़ाता है। इसलिए अज्ञानी जीव उस श्वान की तरह है, जो मारने वाले को नहीं, बल्कि डण्डे को पकड़ता है।

वास्तव में दुःख तब नहीं होता है, जब यह ज्ञान हो जाता है कि मेरे इन स्वकृत कर्मों का परिणाम दुःख है। जब तक "कोऽहं" (मैं कौन हूं) यह जिज्ञासा ही नहीं होती है तो "केऽहं आसी", "केवा इअ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि" - ये सवाल ही कहां से आयेंगे? इसलिए आत्म-स्वरूप की स्वीकृति भी अज्ञान को मिटाने वाली है। ज्ञान और आत्मा अभिन्न हैं। इस अभिन्नता को जानने के तीन उपाय हैं - "सेज्जं पुण जाणेज्जा, सहसम्मुइयाए परवागरेणं अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा।" सहसम्मुइयाए - स्वमति से जानें। परवागरेणं - केवली के वचनों से जानें। तीर्थंकर के समान ही श्रुतकेवली या गुरु के उपदेश से सुनकर भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिल सकता है।

अध्यात्म के लिए पांच लब्धियां हैं। जीव क्षयोपशम लब्धि से पाप घटाता है, विशुद्धि लब्धि से पुण्य बांधता है, देशना लब्धि से तत्त्व-स्वरूप को समझता है, प्रायोग्य लब्धि से उस पर चिन्तन करता है, करण लब्धि से उत्तरोत्तर क्षयोपशम करते हुए अपूर्वकरण आदि श्रेणियों में पहुँचता है।

ज्ञानी गुरु की कृपा या सान्निध्य से जैसे-जैसे बोध होता है, वैसे-वैसे व्यक्ति आत्मवादी बनता जाता है। जो आत्मवादी होता है, वह लोकवादी होता है। लोक में भ्रमण कर्मों के कारण होता है। कर्म क्रिया के कारण बंधते हैं। इसलिए वह कर्मवादी क्रियावादी होता है। जो आत्मा को जान लेता है, उसे सब उत्तरोत्तर समझ में आ जाता है। आत्मा को देखना-जानना ज्ञान-दर्शन है और आत्मा में रमण करना सम्यक् चारित्र है।

जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ।
जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ।

जो अपने अन्तर को जानता है, वह बाहर को जानता है। हर जगह एक ही बात है कि आत्मा का ज्ञान प्राप्त किया जाए। आत्म-तत्त्व को जानने वाला आत्म-रस में डूब जाता है। वह सोऽहं की अनुभूति से चलता है। दर्शन मोह की विशुद्धि से यह अनुभूति होती है।

आत्म-तत्त्व में शंका नहीं करनी चाहिये। एक शंका का दोष तीन विकेट एक साथ

गिराता है - ज्ञान, दर्शन और चारित्र के विकेट। तीनों की समाप्ति यानी आत्म-समाधि की समाप्ति। जहां रत्नत्रय है, वहां समाधि है। इसलिए भगवान ने कहा है कि विचलन नहीं होना चाहिये। विचलन से चित्त की एकाग्रता समाप्त हो जाती है। इसलिए इस दोष को मिटाना है तो सत्य को देख। इस संसार में सत्य क्या है ? एक आत्मा ही सत्य, ध्रुव व नित्य है। सभी भगवान ऐसे ही प्रतिपादित करते हैं, इसलिए उन्हें यथाख्यात प्रतिपादित करने वाला कहा जाता है। हमारी पुण्यवानी है कि उनकी वाणी का सुयोग हमें मिला। वीतराग वाणी की विशिष्टता यह है कि उसमें आत्मा का विषय अधिक है। इसलिए भगवान से इतनी आत्मीयता हो जाए, इतनी अभिन्नता हो जाए कि "सच्चम्मि धिइं कुव्वह" - सत्य में स्थिर हो जाएं तभी समाधि प्राप्त होगी। आत्मा की स्वस्थता समाधि है। आत्मा स्वस्थ कब होगी ? जब ज्ञान, दर्शन व चारित्र की प्राप्ति होगी। एक या दो से भी काम नहीं चलेगा। तीनों का एक साथ संगम होगा, तब ही आत्म-समाधि प्राप्त होगी। दु:ख-मुक्ति के लिए आत्म-समाधि आवश्यक है। आचारांग में दु:ख-मुक्ति की सारी प्रक्रिया दी गई है। जिसे अपना कर साधक मोक्ष-मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

यतना और श्रमणाचार

डॉ. दिलीप धींग

एक बार आचार्य हेमचन्द्रसूरि का राजा कुमारपाल के कक्ष में पधारना हुआ। आचार्यश्री के साथ उनके शिष्य यशचन्द्रगणि भी थे। यशचन्द्रगणि ने आसन पर कम्बल रखने से पूर्व उसे रजोहरण से परिमार्जित किया। किसी जीव-जन्तु के नहीं होने पर भी मुनि यशचन्द्र द्वारा परिमार्जन करने पर कुमारपाल ने कहा कि कोई जीव-जन्तु दिखाई पड़े तो परिमार्जन आवश्यक है, अन्यथा परिमार्जन की क्रिया व्यर्थ है।

राजा कुमारपाल की बात सुनकर आचार्य हेमचन्द्र ने स्पष्टीकरण किया-"राजन्! एक कुशल नरेश उसके शत्रु के आक्रमण करने से पूर्व ही हाथी, घोड़े, रथ आदि चतुरंगिणी सेना का गठन करता है। जिस प्रकार शासक के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी भी प्रकार के बाहरी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए अपनी सेना को हर समय सुसज्जित रखे, उसी प्रकार यह हमारा धार्मिक व्यवहार है कि छोटे से छोटे अदृश्य जीव तक की रक्षा के लिए हम परिमार्जन आदि सभी प्रकार की क्रियाएँ करने में, प्राणियों की यतना करने में सदैव तत्पर रहें।"

हेमचन्द्राचार्य के युक्तिसंगत उत्तर से सुन्दर समाधान पाकर कुमारपाल पूर्ण सन्तुष्ट हुए तथा जैन श्रमणाचार की सूक्ष्मता से प्रभावित हुए।

-बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

सूत्र-विवेचन

आसं च छंदं च विगिंच धीरे

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

प्यास तुम्हारी तीव्र है, यह बात सही है। तुम्हारी आँख जिस ग्लास पर टिकी हुई है, उस ग्लास में घासलेट (मिट्टी का तेल) नहीं है, किन्तु पानी है- यह बात भी ठीक है। यह पानी गरम नहीं है, किन्तु ठण्डा है- यह भी कबूल है। यह ठण्डा पानी मलिन नहीं है, परन्तु निर्मल है- यह भी ठीक है, अब तुम इस पानी पीने के लालच को क्या रोक सकते हो? तुम्हें प्यास बुझानी है और प्यास बुझाने के लिए पानी सामने है। तुम एक पल का विलम्ब किये बिना ग्लास में से एक घूंट पीते हो और मुँह बिगाड़कर ग्लास नीचे रख देते हो। तुमको समझ में आ गया कि यह पानी अवश्य है पर नदी का नहीं सागर का है, मीठा नहीं पर खारा है, प्यास बुझाने वाला नहीं बढाने वाला है।

****

और वह हिरण

पानी देखते ही जिसकी आँखों में चमक आ जाती है- स्थान है रेगिस्तान, समय है दोपहर का, ऋतु है गर्मी की और गला प्यास से सूख रहा है। ऐसी स्थिति में चारों पैरों से दौड़ता-दौड़ता हिरण पानी के समीप पहुँचता है, पहुँचने के बाद देखता है कि वहाँ पानी है ही नहीं।

दूर तक नज़र डालता है तो आगे पानी दिखता है, पुनः वहाँ पहुँचता है और पानी नहीं मिलता है। परन्तु पानी की आशा में सतत वह रेगिस्तान में दौड़ता रहता है और मौत की शरण में चला जाता है। ज्ञानीजन कहते हैं कि वह दिखने में जल जरूर था, परन्तु आभासिक जल था। सूर्य की किरणें रेत पर पड़ती हैं, रेत के कण चमकने लगते हैं। इस चमक के कारण जल का दर्शन होता है और वह दौड़ता है जल पीने के लिए। पर जल था ही नहीं तो मिलता कैसे? यह सब समझने के लिए उसकी प्रज्ञा विकसित नहीं हुई और जल की आशा में रेगिस्तान में दौड़ता हुआ मौत के मुँह में चला गया।

****

आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध, द्वितीय अध्ययन और चौथे उद्देशक के सूत्र 84 में हम सबने एक अद्भुत बात सुनी है-

"आसं च छंदं च विगिंच धीरे"

हे धीर! तू भोग की आशा और इच्छा को छोड़ दे।

ज्ञानी को यह सलाह आपको इसलिए देनी पड़ी क्योंकि भोग सब नीरस हैं, अतृप्तिकारक हैं, दुर्गतिकारक हैं, हताशाजनक हैं और विषादजनक हैं। यही कारण है कि भोग से बचने और इच्छाओं से दूर रहने की सलाह दी जाए- ऐसी ज्ञानी को आवश्यकता महसूस होती है।

उपर्युक्त परामर्श का हेतु यह है कि 'भूल' से बोध लेकर भूल-सुधार करना, आपने सीखा ही नहीं। एक कारण यह है कि भ्रम से मुक्त होकर स्पष्ट बोध लेने में हमारा रस नहीं है। दूसरा कारण यह है कि आपकी इस मूर्खता को ध्यान में रखकर ही ज्ञानीजन ने आपको यह सलाह दी है कि हे धीर! भोग की आशा और इच्छा दोनों को छोड़ दे।

याद रखना, सागर के पानी को नदी का पानी मान लेना- यह भूल है और आभासिक जल में वास्तविक जल को स्वीकार कर लेना- यह भ्रम है। यह भ्रम और भूल के रूप में समझ में आ जाए, तो बचकर उससे लौट जाते। किन्तु भ्रम से तो जीवन के अन्त तक मुक्त नहीं होते हैं तो वह जान लेकर ही रहता है।

परन्तु,

मुश्किल तो हमारे लिए यह बन गई है कि भोग के क्षेत्र में हम भूल और भ्रम दोनों के शिकार हैं। हर भोग के समय यह अनुभव होता है कि भोग-सेवन के बाद तृप्ति होने के बदले अतृप्ति बढ़ती जाती है।

संसार के क्षेत्र में होने वाले भोग की बात छोड़ो, भूतकाल के अनन्त भव में सेवित भोगों की बात भी छोड़ो, संयमजीवन को अंगीकार करने के बाद भी इन्द्रियों के क्षेत्र में जो-जो विषय सेवन किया है, उसमें भी कदाचित् तृप्ति का अनुभव हुआ है क्या? संयमजीवन में मिठाई नहीं खाई हो, ऐसा तो नहीं हुआ। रोज-रोज भले ही नहीं, किन्तु कभी-कभी तो मिठाई खाई होगी। इससे पेट तो भरा, किन्तु मन नहीं। प्रशंसा के शब्द सुनने में नहीं आए, ऐसा भी नहीं हुआ, क्या प्रशंसा के शब्दों से मन सन्तुष्ट हुआ क्या? मुलायम स्पर्श वाले आसन, कम्बल, मुँहपत्ती बार-बार वापरी, वापरने के बाद वह फेंकने में आ गई, फिर भी उससे मन भरा क्या?

इन अनुभवों से यह स्पष्ट बोध होता है कि अनुकूल विषयों के सम्पर्क एवं संसर्ग होने के बाद भी यह मन अतृप्त रहता है, यही कारण है कि आज हमारी हालत ऐसी है। क्या जीवन भर के लिए इन्द्रिय-सुख देने वाले विषयों के त्याग हेतु प्रत्याख्यान ले लिए हैं। यदि नहीं भी लिए हैं तो विषय के सामने उपस्थित होने पर आप उसे आँख उठाकर भी नहीं देखते, इतने सत्त्वशील हो गये हैं क्या? तो कहना होगा नहीं! इसका अर्थ है, भूल में से बोध पाठ लेने की आपकी तैयारी नहीं है।

सागर के पानी को नदी का पानी समझ लेने की भूल हो गई है, ठीक है। पर बाद में, जब इस भूल का खयाल आ गया तो सागर का पानी वाला ग्लास नीचे रख दिया, पानी पीना बन्द कर दिया। ऐसी भूमिका आपकी क्यों नहीं? विषय-सेवन के बाद भी अतृप्ति वैसी की वैसी बनी रहती है। ऐसा अनुभव होने के बाद भी विषयों का हमेशा के लिए त्याग करने में आप तत्पर क्यों नहीं हैं? विषयों के प्रति आपकी आसक्ति क्यों नहीं टूटती?
अरे,

मन का पोस्टमार्टम करो और देखो, आभासिक जल में वास्तविक जल के दर्शन होने के भ्रम में हिरण अटक गया। इसी तरह आभासिक विषय सुख में सच्चे सुख के दर्शन करने की भ्रमणा में आपका मन नहीं अटका है- यह छाती ठोककर आप कहने की स्थिति में हैं क्या?

विषय-सुख की कल्पना में क्या मन कभी नहीं विचरण करता? इस कल्पना को सच्ची मानकर विषय-प्राप्त करने के लिए क्या मन लालायित नहीं होता? जिनके पास प्रचुर मात्रा में आकर्षक और अनुकूल विषय सामग्री है, उनको 'सुखी' मानने के लिए क्या तुम तैयार नहीं हो? अर्थात् जो धनी है, विषय-भोगों में लिप्त हैं- उनको सुखी समझने में ही हमारा मन आग्रह करता है।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि भोग के क्षेत्र में आप भूल और भ्रम-दोनों के शिकार हैं। इसको आप कमज़ोरी मानो तो कमज़ोरी और मूर्खता मानो तो मूर्खता। इसी को ध्यान में रखकर ज्ञानीजन को यह सलाह देनी पड़ी कि- "भाई! तू भोग में तृप्ति की आशा छोड़ दे और भोग की इच्छा भी छोड़ दे।" कारण कि तुम्हारी तृप्ति की आशा निराशा में बदलने वाली है और भोग की तेरी इच्छा निष्फलता में परिणमित होने वाली है। तृप्ति भोग का स्वभाव नहीं है और प्राप्ति पुण्य के बिना सम्भव नहीं है।

प्रश्न तो मन में उत्पन्न हो रहा है कि खुद को बुद्धिशाली मानने वाले आप इस सम्बन्ध में एकदम मूर्ख कैसे हो रहे हैं? प्यास बुझाने हेतु जानबूझकर सागर का पानी पीने के लिए आप तैयार नहीं हैं तो तृप्ति के लिए भोग के पीछे क्यों दौड़ रहे हैं?

इन्द्रधनुष को स्थिर रखने की भ्रमणा में आप नहीं अटकते तो विषय सुख को स्थिर रखने की भ्रमणा में आप कैसे अटक जाते हो? तपे हुए लोहे से शीतलता मिलेगी- ऐसा ख्वाब नहीं देखने वाले आप भोग-सुख से प्रसन्नता के अनुभव का दिव्य स्वप्न कैसे देखते हैं?

इसके अनेक जवाब सम्भव हैं।, किन्तु मुख्य जवाब यह है कि सुदीर्घकाल से जो आपने सुख का अनुभव किया है, वह इन्द्रियों के माध्यम से किया है। मिष्ठान्न जिह्वा पर

रखा तो मजा आ गया, प्रशंसा के शब्द कान में पड़े तो दिल तरबतर हो गया, मनोहर दृश्य देखा तो आँखों में चमक आ गई, इत्र की सुवास नाक में पहुँची तो मन बेभान हो गया, मुलायम सामग्री का स्पर्श मिला तो हृदय उत्तेजित हो गया। यही अनुभव आपके मन को सदा पिपासु, लालची और विषयातुर बनाये रखता है।

अनन्तज्ञानियों के वचन पर श्रद्धा रखकर आप अनुकूल विषयों से हरे-भरे संसार का त्याग कर संयम-मार्ग पर आ गए। शक्ति जागृत कर इस जीवन में आने के बाद विषयों को अपने आपसे दूर रखा। विषयों के सम्पर्क वाले गलत निमित्तों से बचते रहे, किन्तु इन्द्रियों के माध्यम से विषय-सुख की अनुभूति से युक्त संसार वाला मन तो वैसा ही आपके साथ है। बार-बार यह मन अपना सिर ऊपर कर विषयों की तरफ आपको खींचता है।

जो सावधान नहीं रहे, अप्रमत्त नहीं रहे, किसी पल में कमजोर होकर ज्ञानियों के वचन से दूर होकर आत्मा को भूल गए, प्रशमसुख की अवमानना कर विषय-सम्पर्क में आ गए....... तो शक्य है कि वर्षों के संयम पर्याय के फल को आप उस कमज़ोर पल में खो देंगे। वर्षों की आपकी शास्त्र-स्वाध्याय की मेहनत गफलत के उस पल में मिट्टी में मिल जाएगी। सम्यक् समझ का आपका प्रबल दावा इस पतन के पल में हंसी का पात्र बन जाएगा।

संक्षेप में- आग का सान्निध्य जिस प्रकार सर्वथा भरोसे योग्य नहीं होता, सर्प की निकटता जिस प्रकार सर्वथा जोखिम युक्त है, शेर के साथ खेलना जिस प्रकार सर्वथा खतरनाक है, बम के साथ छेड़छाड़ जैसे सर्वथा त्रासदायक है, बस वैसे ही विषयों का सान्निध्य, विषयों का दर्शन और विषयों का चिन्तन सर्वथा खतरनाक तो है ही, पर साथ में भयंकर, त्रासदायक, जोखिमभरा भी है।

इस सन्दर्भ में एक दूसरी बात खास समझनी चाहिए कि धर्मप्रवृत्ति के क्षेत्र में मन ज्ञानी के उपदेश को स्वीकार कर लेता है, पर पाप-प्रवृत्ति के क्षेत्र में मन स्वयं के अनुभव को ही प्रमुखता देता है। स्वाध्याय के आनन्द के अनुभव को प्राप्त करने के लिए वह ज्ञानी के वचनों को स्वीकारने के लिए तैयार हो जाता है, परन्तु विकथा के सम्बन्ध में स्वयं के अनुभूत आनन्द को अस्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। तप की शक्ति मानने के लिए ज्ञानी के आदेशानुसार एक बार तपश्चर्या से जुड़ जाता है, पर इच्छित-मनोवांछित द्रव्य-सेवन की मस्ती का अनुभव भ्रामक है- ऐसा मानने को तैयार नहीं होता। लोच, विहारादि कष्ट को अपनाने में भी वह आनाकानी नहीं करता, किन्तु, अनुकूलता के मज़े पर चौकड़ी मारने के लिए तैयार नहीं है।

मन की इस खतरनाक वृत्ति का ज्ञानी को विशेष रूप से खयाल है। इसलिए इस सूत्र

में आपको भोग की आशा और भोग की इच्छा छोड़ने की सलाह दी गई है।

याद रखना,

संयमजीवन दोष को दूर करने का जीवन है, सद्गुणों में वृद्धि करने का जीवन है, सुखशीलवृत्ति के त्याग का जीवन है, स्वच्छंदमति पर नियन्त्रण का जीवन है, इसलिए ही इस जीवन में 'प्रवृत्ति' करने से अधिक ज्ञानीजन 'दोषवृत्ति के त्याग' पर बल देते हैं।

आप सच्चे अर्थ में हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा और दीर्घकालिकी संज्ञा से बाहर निकल कर दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा के स्वामी बन गए होते तो ज्ञानियों का पाप त्याग पर जो बल दिया गया है, उसे गम्भीरता से अपने मन पर लेकर तदनुसार अपनी जीवन व्यवस्था व्यवस्थित कर लेते।

जिस प्रकार धर्मप्रवृत्ति के क्षेत्र में आप ज्ञानी के वचन को अमल में लाते हैं, उतनी ही तत्परता से पापप्रवृत्ति के क्षेत्र में भी उनके वचन अमल में लायें। बुखार की अवस्था में जिह्वा का स्वाद कड़ुवा हो जाता है, जो भ्रामक है, वैसे ही मोहाधीन अवस्था में विषय-सेवन में हुआ अनुभव भ्रामक है, इसमें किसी प्रकार की शंका नहीं करनी चाहिए।

विषयों से दूर रहकर और विषयों के चिन्तन से दूर रहकर ही संयम जीवन सार्थक बन सकता है।

-'मुनि! तू प्रशांत रहेजे' गुजराती पुस्तक के अध्याय का हिन्दी अनुवाद
सह-सम्पादक डॉ. श्वेता जैन द्वारा

क्या ही अच्छा होता!

श्री आर. प्रसन्नचंद चोरडिया

कुछ दिनों पहले की बात है। एक नवनिर्मित स्थानक की सफेद संगमरमर की घुमावदार सीढ़ियों पर कदम रखते हुए आगे बढ़ रहा था तो सामने लगे बोर्ड पर नज़र पड़ी। सूचना लिखी हुई थी-'अगर आपके पास बेटरी चालित घड़ी या मोबाइल फोन हो तो यहाँ छोड़ जाइए!' पढ़कर मुझे बड़ा अच्छा लगा।

सूचना पट्ट पर यदि नीचे यह भी लिखा गया होता तो और भी अच्छा लगता.... 'अगर आपके मन में किसी के प्रति राग-द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, बदले की भावना हो तो यहाँ छोड़ जाइए और निर्मल मन से संतों के दर्शन कीजिए।'

आपको भी यह पढ़कर अच्छा लगता और कहते.....

''आज के बाद हम अपना मन निर्मल बनाएँगे।
क्रोध, त्याग, शांत रह ध्यान लगाएँगे।।''

-52, कालाथी पिल्लै, स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

संगोष्ठी-आलेख

आचारांग के अध्ययन-क्रम का वैशिष्ट्य*

श्री प्रकाशचन्द जैन

जे य अतीता जे य पडुपन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंता सव्वे ते एवमाहंसु - सभी तीर्थंकर अपनी ताप-संतापहारिणी प्रथम देशना में जो उपदेश देते हैं, उनके गणधर उस वाणी को सूत्र रूप में ग्रंथन करके सर्वप्रथम जिस शास्त्र की रचना करते हैं, वह है- आचारांग सूत्र। भाव की दृष्टि से सभी आगमशास्त्र महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से विचार करें तो आचारांग अद्भुत है। प्रथम श्रुतस्कंध तो गागर में सागर की उक्ति को अक्षरश: चरितार्थ करता है। वर्तमान में इसके नौ में से आठ अध्ययन ही उपलब्ध हैं। डॉ. हर्मन जेकॉबी सहित सभी विद्वानों ने इसे सबसे प्राचीन आगम के रूप में स्वीकार किया है। इसका गहराई से स्वाध्याय करने वाले साधक को नया आध्यात्मिक आलोक मिलता है। इसमें कुल 323 सूत्र हैं।

आचारांग का प्रत्येक अध्ययन विशिष्ट प्रेरणा देता है। आचारांग -

1. इस चतुर्गति रूप संसार में दिशाहीन बनकर भटक रहे जीव को सही दिशा प्रदर्शित करने वाला दिशासूचक यंत्र है।
2. कामना एवं ममता रूपी भाव संसार (लोक) के स्वरूप को समझाकर उससे पार पहुँचाने वाली नौका है।
3. अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में समता धारण कर चलने की प्रभावशाली प्रेरणा व मार्गदर्शन करने वाला संविधान है।
4. जीवन धारा को मुक्ति रूपी गंगा से मिलाने वाला संगम-स्थल है।
5. लोक में सारभूत तत्त्व क्या है, इससे परिचित कराने वाला विश्वकोष है।
6. कर्मरूपी रज को उड़ा ले जानी वाली तूफानी हवा और कर्मरूपी ईंधन को जलाकर राख बनाने वाली अग्नि के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण है।
7. वह खजाना है जिसमें जीवन को देदीप्यमान बनाने वाले रत्न मौजूद हैं।
8. हेय, ज्ञेय और उपादेय का सम्यक्बोध कराकर भाव जगत् को विशुद्ध बनाने वाला

* चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।

शास्त्राधिराज है।

9. भगवान महावीर जैसे महामानव की साधना से जन-जन के मन को आलोकित करने वाला प्रेरणापुंज/प्रकाशपुंज है।

संसार में प्रेम की भाषा सब समझते हैं। तीर्थंकर इसी भाषा में अपनी बात कहते हैं, इसलिए उसे सब समझ जाते हैं।

मुमुक्षु आत्मा बाहर से अन्तर में जिस क्रम से प्रवेश करती है, वह है - 1. पहले बाहर में भगवान नज़र आने लगता है। 2. भगवान की वाणी पर भरोसा होता है और हर जीव में भगवान नज़र आने लगता है। 3. शरीर में परायेपन की अनुभूति होने पर भीतर का भगवान नज़र आने लगता है।

प्रथम अध्ययन

आचारांग का प्रारम्भ - सुयं मे आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं...। तेणं भगवया- भगवान का स्वरूप समझकर पहले उन पर श्रद्धा की बात कही है। जो व्यक्ति अच्छा लगता है, उसकी बात भी अच्छी लगती है। अतः पहले भगवान पर विश्वास का सूत्र है। आचार्य श्री घासीलालजी ने आचारांगसूत्र की 'आचार चिन्तामणि' नामक संस्कृत टीका में इस सूत्र की 11 प्रकार से व्याख्या की है। एवमक्खायं - ऐसा कहा है, उस वाणी पर विश्वास करना। यह वाणी उद्घोष करती है कि जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। इसमें आत्मौपम्य दृष्टि प्रदान की गई है। इसका आशय यह है कि तू किसी अन्य की हिंसा करना चाहता है, पर वास्तव में इससे तेरी शुभवृत्तियों की हिंसा भी हो रही है। अतः सभी आत्माओं को समान मानकर किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिये।

अज्ञानी जीव साता में आसक्त होता है और उस साता को पाने के लिए स्थावर और त्रस जीवों की हिंसा करता है। इससे उसका अहित होता है और अबोधि की प्राप्ति होती है। अतः 'शस्त्र परिज्ञा' नामक प्रथम अध्ययन में साधक को हिंसा से बचने की प्रेरणा दी गई है।

द्वितीय अध्ययन

स्थावर व त्रस जीवों की हिंसा के कारण हैं - विषय-कषाय। इन पर विजय पाने के लिए लोक-विजय अथवा लोक-विचय नामक यह अध्ययन प्रेरणा करता है। विचय का आशय है - अनुप्रेक्षा। इसमें शब्दादि विषय व स्वजनादि के स्नेह के प्रति अनासक्ति का उपदेश, ममत्व का परिहार, संयम में अरति का त्याग, संयम में उद्यमशीलता, आशा व तृष्णा का त्याग, गोत्र आदि मदों का परिहार आदि सन्देश दिये गये हैं। इस अध्ययन में भोगों को रोगोत्पत्ति का मूल बताया गया है।

तृतीय अध्ययन

लोकविजय हेतु आवश्यक है – समताभाव का अभ्यास और विकास। असाता के भय के कारण व्यक्ति अनुकूल की प्राप्ति और प्रतिकूल को हटाने का प्रयास करता है। जिससे आकुलता-व्याकुलता बढ़ती है। अत: जिस साधक ने शब्दादि विषयों को अच्छी तरह जान लिया है, वही आत्मवान, ज्ञानवान, वेदवान, धर्मवान व ब्रह्मवान है।

असंयमी पुरुष को आचारांग में अनेकचित्त वाला बताया गया है। **अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे से केयणं अरिहइ पूरइत्तए** – यह पुरुष अनेक चित्त वाला है, यह चलनी को जल से भरना चाहता है। इसलिए – **तम्हा ण हंता ण विघातए** – न जीवों का हनन करे, न करावे, समताभाव में रहे।

चतुर्थ अध्ययन

समताभाव के अभ्यास के लिए आवश्यक है – सही सोच, यथार्थ दृष्टिकोण। ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप का सम्यक् स्वरूप समझकर उसकी आराधना की बात इस सम्यक्त्व अध्ययन में कही गई है।

ज्ञान– एस धम्मे, सुद्धे, णितिए, सासए– यह अहिंसा धर्म शुद्ध, नित्य व शाश्वत है। **णो लोगस्स एसणं चरे** – लौकेषणा में न भटकें।

दर्शन– णाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि– जीवों का मृत्यु मुख में जाना नहीं होगा, ऐसा नहीं है।

चारित्र– जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा– अज्ञानी के लिए जो कर्मबंध के स्थान हैं, ज्ञानी के लिए वे ही कर्म-निर्जरा के स्थान बन जाते हैं। **से हु पण्णाणमंते बुद्धे आरंभोवरए**– जिसकी इच्छाएँ शान्त हो गई हैं, वही वास्तव में प्रज्ञावान, प्रबुद्ध और आरंभ से निवृत्त है।

पंचम अध्ययन

जिसकी सोच सही है, वही साधक लोक के सच्चे सार को समझ सकता है, इसलिए इसमें लोकसार का वर्णन है। सांसारिक दृष्टि से धन, कामभोग, भोग के साधन, शरीर, भौतिक उपलब्धियाँ सार मानी जाती हैं। किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से ये सब सारहीन हैं और अन्तत: दुखदायी हैं। तो फिर सार क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में आचारांग निर्युक्ति की यह गाथा समाधान करती है –

लोगस्स सारं धम्मो, धम्मं पि य नाणसारियं बिंति।
नाणं संजमसारं, संजमसारं च निव्वाणं।।

लोक का सार धर्म है। धर्म का सार ज्ञान है, ज्ञान का सार संयम है तथा संयम का

सार निर्वाण है।

गुरु से कामा– कामनाएं दुस्त्याज्य हैं। इनके कारण व निवारण के उपायों के बारे में जानना चाहिये। **बंधो य मोक्खो तुज्झऽज्झत्थेव** – बंध व मोक्ष तेरी आत्मा में ही है। **नो निण्हवेज्ज वीरियं–** अपनी शक्ति का गोपन मत करो। **समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए** – समता में आर्यो ने धर्म कहा है। **उट्ठिए नो पमायए–** जागो एवं मिथ्यात्व, राग-द्वेष आदि का परित्याग करो। **इणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ** – स्थूल शरीर व कर्मो के साथ लड़ो। औदारिक शरीर, इन्द्रियाँ और मन विषयसुखपिपासु हैं। स्वेच्छाचारी बनकर तुम्हें पचा रहे हैं। इनके साथ युद्ध करो। उस कर्म शरीर के साथ युद्ध करो जो तुम्हें वृत्तियों के माध्यम से अपना दास बना रहा है। काम, क्रोध, मद लोभ सब कर्मशत्रु की सेना हैं, इनको परास्त करो। दो शस्त्र हैं – परिज्ञा और विवेक। परिज्ञा से पूरा ज्ञान करो, विवेक से उसके पृथक्करण की दृढ़भावना करो।

षष्ठ अध्ययन

लोक के सार को समझ कर क्या करें ? कर्मो को धुनने का प्रयास करें। अत: छठे अध्ययन धूत में इसकी विधि समझाई गई है। आठ प्रकार के कर्मो को धुनने के लिए संयम और त्याग अनिवार्य है। सर्वप्रथम गृहत्याग, फिर स्वजन-त्याग, संग-त्याग, उपकरण-त्याग, शरीर-त्याग, अहं त्याग तथा कषाय त्याग करें।

सव्वओ संगं ण महं अत्थि।
एगो अहं अंसि।।
कसेहि अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं।
आणाए मामगं धम्मं।।

धर्म द्वीप के तुल्य है। संसार समुद्र पार करने वालों के लिए आश्वासन स्थान है। अत: वीर सदा आगमानुसार पराक्रम करें।

सप्तम अध्ययन

कर्मो को धुनने के लिए विशिष्ट ज्ञान द्वारा मोह जनित दोषों को जानकर प्रत्याख्यान परिज्ञा द्वारा उनका त्याग करना अनिवार्य है। अत: इस अध्ययन 'महापरिज्ञा' में मोहकर्म के दुष्परिणामों को जानकर उनका क्षय करने के लिए महाव्रत, समिति-गुप्ति, कषाय-विजय, तप-संयम, स्वाध्याय आदि को स्वीकार करें। इस अध्ययन का लोप कब व क्यों हुआ, इस सम्बन्ध में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता। पर संयम में स्थिर करने के लिए इसमें कुछ मंत्र, तंत्र, यंत्र आदि के प्रयोगादि दिये हों तथा इनका आगे दुरुपयोग नहीं हो, अत: प्रतिबंध लगाया हो, ऐसा लगता है।

अष्टम अध्ययन :

कर्मों को धुनने वाला व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है। अत: इस अध्ययन 'विमोक्ष' में द्रव्य-भाव मोक्ष का वर्णन हुआ है। बेड़ी, बंधन से छूटना द्रव्य मोक्ष है और कषाय व कर्मों से मुक्त होना भाव-मोक्ष है। सम्यक्त्व से लेकर क्षपक श्रेणी तक देश विमोक्ष कहलाता है। सिद्धों का सर्वमोक्ष होता है। ये भाव विमोक्ष के कारण होने से भाव-विमोक्ष हैं। इसमें इन्द्रिय, विषयों, उपकरण, शरीर आदि के त्याग रूप विमोक्ष का वर्णन है तथा 12 वर्ष की संलेखना, संथारा आदि का स्वरूप बताया गया है।

1. असमनोज्ञ विमोक्ष : दर्शन, वेश व आचार से असमानता को आदर न दें।
2. आहार विमोक्ष : ग्लान अवस्था होने पर छोड़ें।
3. दण्ड समारंभ विमोक्ष : हिंसादि का त्याग।
4. सहाय विमोक्ष : एगो अहमंसि ण मे अत्थि कोई, ण वा अहमवि कस्सावि एवं से एगागिणमेव अप्पाणं समभिजाणेज्जा – न मैं किसी का हूँ, न मेरा कोई है। मैं अकेला हूँ।
5. उपधि विमोक्ष : उपकरणों-सामग्रियों का त्याग।
6. शरीर विमोक्ष : इसके लिए भक्त परिज्ञा, इंगित मरण व पादोपगम, इन तीन मरण में-से कोई मरण स्वीकार करना आवश्यक है।

नवम अध्ययन

इन आठ अध्ययनों की साधना का प्रायोगिक रूप सम्भव है या केवल सैद्धान्तिक बाते हैं? इसका उत्तर उपधान श्रुत में है। इसमें चरम तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपने साधनाकाल में जिस कठोर तपश्चर्या को अपनाया, उसका सजीव चित्रण हुआ है। इससे साधक के अन्दर विश्वास जागता है कि मैं भी ऐसा कर सकता हूँ। क्रम की अन्य अपेक्षाएँ भी हो सकती हैं, जैसे 5 आचार, 5 व्रत, 5 आश्रव-संवर आदि।

आत्म-कल्याण

भूल जाइये आप इस बात को कि जैन धर्म का ठेका अग्रवालों, खण्डेलवालों, ओसवालों, पोरवालों अथवा अन्य जैन कही जाने वाली जातियों ने ही ले रखा है। धर्म की साधना में वस्तुतः कुल का सम्बन्ध नहीं, मन का सम्बन्ध है। हाँ, इस दृष्टि से आप भाग्यशाली हैं कि जैन कुल में उत्पन्न हुए हैं। परम्परागत कुलाचार के फलस्वरूप आप सहज ही अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों से, अनेक प्रकार की बुरी प्रवृत्तियों से बच गये हैं। इतने से ही यदि आप लोग निश्चिन्त हो गये और चारित्र में आगे कदम नहीं बढ़ाया तो आत्मकल्याण नहीं कर सकेंगे। *-आचार्य हस्ती*

संगोष्ठी-आलेख

आचारांग सूत्र में अप्रमत्त जीवन की प्रेरणा*

डॉ. धर्मचन्द जैन

आचारांगसूत्र वीतराग पथ के साधकों के लिए एक मार्गदर्शक आगम है। भगवान महावीर की वाणी का मौलिक रूप इस आगम में उपलब्ध है। एक साधक के लिए किस प्रकार की साधना आवश्यक है एवं किस प्रकार वह आध्यात्मिक निर्मलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकता है, उसका सुन्दर निरूपण आचारांग सूत्र में सम्प्राप्त है। इसी शृंखला में इस आगम से अप्रमत्त साधना के सम्बन्ध में सम्यक् मार्गदर्शन मिलता है।

मनुष्य प्रायः प्रमाद में जीता है। प्रमत्त जीवन ही उसे अच्छा लगता है। उसकी चित्त-वृत्तियों में प्रमाद का प्रभाव छलकता रहता है। प्रमाद अज्ञानी व्यक्ति में भी होता है, तो ज्ञानी व्यक्ति में भी। अज्ञानी में प्रमाद का होना स्वाभाविक है, उसका आत्मस्वरूप से परिचय ही नहीं होता, विषयों से कभी वह विमुख ही नहीं हुआ, अतः उसमें प्रमाद का होना अवश्यम्भावी है, किन्तु आध्यात्मिक उन्नयन के प्रति चरण बढ़ाते हुए ज्ञानी व्यक्ति में भी प्रमाद का डंक लग जाता है। परिणामस्वरूप वह व्यक्ति ऊपर चढ़ते हुए गुणस्थानों से नीचे गिर जाता है। उपशान्त मोह नामक ग्यारहवां गुणस्थान इसका उदाहरण है।

अज्ञानी का प्रमाद

साधारणतः आत्मस्वरूप के विस्मरण को प्रमाद कहा जाता है। प्रमाद को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। किसी सत्य को जानते हुए भी उसे स्वीकार न करना प्रमाद का एक रूप है। अज्ञानी या मिथ्यात्वी व्यक्ति में प्रायः इस प्रकार का प्रमाद होता है। इस प्रमाद के कारण ही वह पर पदार्थों से सुख चाहता है। उनके प्रति आसक्त होता है एवं परिणाम में दुःख प्राप्त करता है। आचारांगसूत्र में कहा गया है- **''इति से गुणट्ठी महता परितावेण वसे पमत्ते।''**[1] विषयसुखों की चाहना करने वाला व्यक्ति प्रमत्त होकर परिताप को प्राप्त करता है। आचारांग के इस वाक्य से स्पष्ट है कि इन्द्रियजनित विषयसुखों की इच्छा करना प्रमत्तता का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने से भिन्न व्यक्ति और वस्तुओं के प्रति ममत्व करता है। ममत्व में भी सुख की इच्छा छिपी रहती है। संसार का यह सत्य है कि हम व्यवहार से भले ही परिवार में एक-दूसरे को अपना समझकर ममत्व करते हैं,

* चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।

किन्तु वास्तव में एक सीमा के पश्चात् कोई किसी का त्राण नहीं कर पाता है। फिर भी प्रमत्त होकर व्यक्ति अपने रिश्ते नातों में आसक्त होकर अपने को भुलावे में रखता है तथा आत्मिक उन्नति से वंचित रहता है। आचारांग में कहा गया है-"**तंजहा माया मे, पिता मे, भाया मे, भगिणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुण्हा मे सहि-सयण-संगंथ-संथुता मे, विवित्तोवगरण-परियट्टण-भोयण-अच्छायणं मे इच्चत्थं गढिए लोए वसे पमत्ते।**"[2] प्रमाद के वशीभूत होकर व्यक्ति सोचता है- यह मेरी माता है, यह मेरे पिता हैं, यह मेरा भाई है, यह मेरी बहिन है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरे पुत्र हैं, ये मेरी पुत्रियाँ हैं, यह मेरी पुत्रवधू है, ये मेरे मित्रगण हैं, यह मेरे स्वजन हैं इस प्रकार उनके साथ आसक्ति उत्पन्न कर लेता है। व्यक्तियों के साथ ही नहीं, वस्तुओं के साथ भी उसकी आसक्ति हो जाती है। अनेक प्रकार की साधन-सामग्री, आवास, भोजन, वस्त्र आदि को अपना समझकर वह उनमें आसक्त हो जाता है तथा प्रमादयुक्त जीवन जीता है। आचारांगसूत्र इस प्रकार के जीवन को आध्यात्मिक शुद्धि की दृष्टि से उचित नहीं मानता। वह सावधान करता है- "**णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा।**"[3] अर्थात् वे सब सगे सम्बन्धी तुम्हें त्राण देने और शरण देने में समर्थ नहीं हैं और तुम भी उनको त्राण और शरण देने में समर्थ नहीं हो।

सुख-दुःख सबका अलग है-"**जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सातं।**"[4] इस तथ्य को जानकर साधक अपने दुःख का कारण दूसरे को नहीं मानता। दूसरे के सुखी होने में भले ही वह निमित्त बन जाये, किन्तु उससे स्वयं में अहंकार उत्पन्न न हो, इसका ध्यान रखता है। प्रमत्त व्यक्ति सदा दुःख को प्राप्त करता है। आचारांगसूत्र कहता है कि ऐसे प्रमत्त व्यक्ति की आतुरता एवं दुःख को देखकर साधक को अप्रमत्ततापूर्वक रहना चाहिए-"**पासिय आतुरे पाणे अप्पमत्तो परिव्वए।**"[5]

जो विषयों के प्रति गाढ़ आसक्त होता है वह दिन-रात परिताप को प्राप्त होता हुआ काल, अकाल में उनके संयोग के लिए उद्विग्न रहता है। वह अर्थ का लोभी होकर दूसरों की हिंसा करता है। बिना सोचे समझे कार्य करता है तथा बार-बार उसकी प्राप्ति में ही चित्त को लगाये रखता है। प्रमत्त व्यक्ति दूसरों की हिंसा करने में संकोच नहीं करता। उसे अपनी अभिलाषा अथवा महत्त्वाकांक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण नज़र आती है। उसके मन में यह भावना होती है कि जो अब तक नहीं किया गया है वैसा मैं करके दिखाऊँगा- "**अकडं करिस्सामि त्ति मण्णमाणे।**"[6] उसकी अभिलाषा पूरी होने में यदि अन्य प्राणियों की हिंसा होती है, आर्थिक रूप से दूसरों को हानि होती है, अन्य व्यक्तियों का शोषण होता है

अथवा छोटे-छोटे प्राणियों का वध होता है तो भी उसे दया नहीं आती। प्रमाद का यह निकृष्ट रूप है। वह दूसरों के दु:ख को देखकर करुणित नहीं होता। देश-विदेश में बड़े-बड़े कत्लखाने इसके साक्षी हैं, जहाँ लाखों पशुओं को बेरहम होकर अपने व्यवसाय के लिए मौत के घाट उतारा जाता है। यह प्रमाद का स्थूल रूप है।

प्रमाद का यदि बाहुल्य हो तो व्यक्ति का विवेक पूर्णत: ढक जाता है। वह क्रोध, मान, माया, लोभ की अधिकता वाला होता है। वह विषयपूर्ति के अनेक संकल्पों से युक्त होता है तथा निरन्तर कर्मों का आश्रव करता रहता है। अज्ञान के साथ प्रमाद का अस्तित्व व्यक्ति को सदा मूढ़ बनाये रखता है और वह धर्म के सही स्वरूप से अपरिचित रहता है-"**सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति।**"[7] धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोगों को वह सन्मार्गगामी नहीं मानता और स्वयं के असत् मार्ग को भी सही समझता रहता है एवं दु:खी होता रहता है।

ज्ञानी का प्रमाद

जानते हुए भी आचरण न करना प्रमाद का दूसरा रूप है। इसे ज्ञान का अनादर भी कहा जा सकता है। प्रमाद का यह रूप ज्ञानी व्यक्ति में पाया जाता है। श्रावक एवं साधु भी इससे ग्रस्त होते हैं। साधक जानता है कि उसमें अमुक दोष है, फिर भी उसे छोड़ने के लिए तत्पर नहीं होता, यह उसका प्रमाद है। यह ज्ञात है कि आसक्ति बुरी है, संसार में फंसाने एवं अटकाने वाली है फिर भी हम आसक्ति का त्याग न करें तो यह प्रमाद है। यह ज्ञात है कि संसार नश्वर है, शरीर नश्वर है, सब अकेले आए हैं और अकेले जायेंगे, फिर भी उनके प्रति आसक्ति करें तो इसे प्रमाद ही कहा जायेगा। यह ज्ञात है कि संसार में सभी प्राणी सुख चाहते हैं कोई भी दु:ख नहीं चाहता। फिर भी हम दूसरों को दु:खी करने का प्रयत्न करें तो यह हमारा प्रमाद ही है। कोई यह समझे कि धन मनुष्य को त्राण देने वाला है, तो यह उसकी भूल है। प्रमादी व्यक्ति को सावधान करते हुए उत्तराध्ययनसूत्र कहता है-"**वित्तेणं ताणं न लभे पमत्ते।**"[8] धन से भी कोई पूर्णत: रक्षित नहीं होता। इसीलिए मेघकुमार और शालिभद्र जैसे राजकुमार एवं सेठ भी प्रव्रज्या के पथ पर चल पड़े। आज व्यक्ति धन से अपने त्राण की आशा करता है, यह उसकी भूल है। धन आत्मगुणों का रक्षक नहीं हो सकता। उसको यहाँ ही छोड़कर जाना होता है, यह सच है कि समय आने पर सबको जाना ही पड़ता है। मृत्यु का आना निश्चित है, उससे कोई नहीं बच सकता। फिर भी प्रमाद के कारण व्यक्ति सावधान नहीं होता। वह संसार से चिपके रहना चाहता है। अपने सुख की पूर्ति न होने पर दूसरों को कोसता है तथा अपने दु:ख का कारण दूसरों में ढूंढता है। यह ज्ञानी का प्रमाद है।

ज्ञानी जब प्रमत्त होता है तो वह अपने मान-सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा, प्रशंसा-स्तव

आदि के जाल में उलझ जाता है।[9] उसे सबसे प्यारा अपना नाम लगता है। उस नाम के कारण संयम की आराधना निर्दोष नहीं रह पाती। अथवा कहें कि आत्म-शुद्धि एवं आत्मोन्नयन के लक्ष्य से साधक भटक जाता है। उसे आचारांग सूत्र सावधान करता है कि साधक को बाह्य आकर्षणों में न उलझकर आत्म-शोधन के मार्ग को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रमादी व्यक्ति में जब ज्ञान भी होता है तो वह बाहर में अपना आचरण अच्छा रखने का प्रयास करता है, किन्तु भीतर में दोष करता रहता है। वह अकरणीय कार्य करते हुए मन में सोचता है- कोई मुझे देख न ले।[10] यह ऐसी स्थिति है जिसमें साधक भीतर एवं बाहर में एक नहीं होता। वह माया के फंदे में उलझ जाता है। आचारांग सूत्र कहता है कि मायी एवं प्रमादी व्यक्ति जन्म-मरण करता रहता है वह दुःख की कारा को नहीं काट पाता।[11] उसमें ईर्ष्या-द्वेष, राग-लोभ आदि की जड़ें सिंचित होती रहती हैं। जो अप्रमत्त होता है वह दुःख की इन जड़ों को काटने हेतु सदैव तत्पर रहता है एवं एक दिन इन्हें पूर्णतः दग्ध करने में समर्थ हो जाता है।

हिंसा का दोष तभी लगता है जब उसके पीछे प्रमाद की भावभूमि हो। वाचक उमास्वाति ने तत्वार्थसूत्र में हिंसा का लक्षण देते हुए कहा है- ''**प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा**''[12] अर्थात् प्रमत्तयोगपूर्वक प्राणों की हानि करना हिंसा है। यदि प्रमाद न हो और सावधानी रखते हुए भी किसी प्राणी के प्राण चले जायें तो हिंसा का दोष नहीं लगता है। वह कर्मबंधन का हेतु नहीं होता है। प्रमाद कर्मबंधन का हेतु है। इसलिए सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है-''**पमायं कम्ममाहंसु**''[13]। केवल हिंसा के दोष की बात नहीं है, सारे दोष प्रमाद की भावभूमि में ही सक्रिय होते हैं। प्रमाद के कारण ही व्यक्ति अपने मान-सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा आदि के लिए हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोष या कर्म करता है।

अप्रमाद का स्वरूप एवं महत्त्व

दुःख-मुक्ति के लिए प्रमाद का त्याग अनिवार्य है। दृष्टि सम्यक् हो जाने के पश्चात् भी प्रमाद पीछा नहीं छोड़ता। विषयों से विरक्ति हो जाने के पश्चात् भी प्रमाद गलियां बनाकर आ घेरता है। वह हर क्षण व्यक्ति को सजग बनाना चाहता है। सजग व्यक्ति से ही प्रमाद भय खाता है। अन्यथा वह मनुष्य को भयभीत बनाये रखता है। आचारांग स्पष्ट रूप से निरूपण करता है कि जो प्रमत्त है उसे भय है तथा जो अप्रमत्त जीवन जीता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं है-''**सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं।**''[14] इसलिए आचारांग सूत्र प्रेरित करता है- उठो! प्रमाद मत करो- ''**उट्ठिते णो पमादए।**''[15]

अप्रमत्तता के स्वरूप पर विचार करें तो समझ में आता है कि यह हमें निर्दोष बनाने की

महत्त्वपूर्ण साधना है। मुझ पर किसी प्रकार का दोष हावी न हो, मैं दोषयुक्त न बनूँ, इस प्रकार की सावधानी अप्रमत्तता है। इसे जागरूकता भी कहा जा सकता है। ऐसा साधक आत्मस्वरूप से विचलित नहीं होता एवं कषायों में आबद्ध नहीं होता। प्रमाद आता है तो साधक की सजगता से वह पलायन कर जाता है। सजगता और प्रमाद एक दूसरे के विरोधी हैं। दोनों साथ नहीं रह सकते। इसलिए प्रमाद को दूर भगाने के लिए सजग होना आवश्यक है। सजगता में ध्यान की प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। साधक अपने लक्ष्य के प्रति निरन्तर सजग रहता है। इसमें जरा भी चूक होती है तो उसे प्रमाद कहा जाता है। यह प्रमाद ही है जो व्यक्ति को सम्यग्ज्ञान होने पर भी उसका आचरण नहीं करने देता है।

हमारा विवेक जागृत रहे, विवेक अविवेक में परिणत न हो जाय, इसकी सावधानी आवश्यक है। अप्रमाद विवेक की महिमा को बढ़ाता है- **"एवं से अप्पमादेण विवेगं किट्टत्ति वेदवी।"**[16] प्रमत्त व्यक्ति आत्मलक्ष्य से भटके हुए होते हैं। कुछ को आत्मलक्ष्य का बोध होता है तो कुछ को नहीं। आत्मलक्ष्य का बोध नहीं होना अत्यन्त बुरी स्थिति है। हम में से अधिकांश लोग इस बुरी स्थिति में जी रहे हैं। यह घोर प्रमाद की अवस्था है। थोड़ा भी बोध होने लगे तो प्रमाद से ऊपर उठकर जीना सीखना है। जब जीवन में प्रमाद रहता है तो दोष सुरक्षित बने रहते हैं।

दोषों को हटाने के लिए जागरूकता आवश्यक है। सच्चे मुनि सदा जागरूक रहते हैं और अमुनि सदा सोये रहते हैं- **"सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति।"**[17] यह जागरूकता प्रतिपल आवश्यक है। एक साधु जब जागरूक होता है तो वह सातवें अप्रमत्त गुणस्थान में होता है तथा वहाँ से आगे के गुणस्थानों में भी बढ़ सकता है। किन्तु वह जागरूक न हो तो छट्ठे प्रमत्त संयत गुणस्थान में ही अटका रहता है। सातवें गुणस्थान का जीव यदि गुणश्रेणी करता है तो वह अप्रमत्त होता है। यह गुणश्रेणी आत्मविकास की सूचक है। वीतरागता एवं केवलज्ञान की अवस्था क्षपकश्रेणी से प्राप्त होती है। साधक अन्तमुर्हूर्त में ही कर्मों के कलिमल को धो डालता है। इस प्रक्रिया में सबसे पहले मोह कर्म का क्षय होता है। मोहकर्म सब कर्मो का मूल है। यह कर्म ज्ञान एवं दर्शन को भी पूर्णतः प्रकट नहीं होने देता। ज्ञान के पूर्ण प्रकटीकरण के लिए मोह का क्षय आवश्यक है। दुःख से मुक्ति भी इसी कर्म के क्षय से होती है।

उत्तराध्ययन सूत्र में प्रभु महावीर गणधर गौतम को सावधान करते हुए कहते हैं- **"समयं गोयम! मा पमायए।"**[18] हे गौतम! तुम समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। आचारांग में भी कहा है **"धीरे मुहुत्तमवि णो पमादए"**[19] धीर पुरुष अपने अन्तर स्वरूप

को जानने हेतु क्षणभर भी प्रमाद न करे। जानने के पश्चात् तदनुरूप जीवन जीने में प्रमाद न करे। आचारांग सूत्र में बार-बार प्रमाद के त्याग एवं अप्रमाद के आचरण की प्रेरणा की गई है। प्रमत्त व्यक्ति बाहर भटकता रहता है,वह सत्य, शान्ति एवं अव्याबाध सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए कहा है- **''अप्पमत्तो परिव्वए।''**[20]

अप्रमत्तता क्यों?

प्रमाद नहीं करने के अनेक हेतु हैं। उसका एक हेतु यह है कि यह जीवन नश्वर है। सही समझ के साथ इस जीवन का सदुपयोग कर लेना चाहिए तथा इसमें समय मात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। मनुष्य श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना, स्पर्शन आदि इन्द्रियों से अशक्तता का अनुभव करने पर भी नहीं चेतता यह उसकी भूल है। वय बीतती जाती है, यौवन भी बीत जाता है- **''वओ अच्चेति जोव्वणं च।''**[21] कोई यह माने कि मृत्यु मेरी नहीं दूसरों की ही होती रहेगी तो यह उसकी भूल अथवा प्रमाद है। ऐसे व्यक्ति को सावधान करते हुए आचारांग में कहा गया है- **''णाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि।''**[22] मृत्यु नहीं आयेगी, ऐसा नहीं है। वह एक दिन अवश्य आएगी, अतः आँख मूंदकर उसकी उपेक्षा करना उचित नहीं। निर्भय बनने के लिए, परम सुख को प्राप्त करने के लिए, संसार के दुःखों से सदा के लिए छुटकारा पाने के लिए भी प्रमाद का त्याग अनिवार्य है। प्रमाद एक प्रकार की बाधा है, जिसे सजगता से दूर किया जाना आवश्यक है। दोष रहित होने के लिए भी अप्रमत्तता उपयोगी है।

अप्रमत्त कौन?

अप्रमत्त वही हो सकता है जिसकी दृष्टि सत्य पर हो। सत्य को जानने और उसका आचरण करने के प्रति तत्पर व्यक्ति ही अप्रमत्त जीवन जी सकता है। इसलिये आचारांगसूत्र में बार-बार सत्य को जानने के लिए प्रेरित किया गया है- **''सच्चंमि धितिं कुव्वह। एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसेति।''**[23] हे साधक! सत्य में धैर्य रखो जो सत्यनिष्ठ होता है वह मेधावी पुरुष समस्त पाप कर्मों का क्षय कर देता है। आचारांग में ही कहा गया है-**''पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि! सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेधावी मारं तरति।''**[24] हे पुरुषों! सत्य को जानो। जो सत्य की आज्ञा में उपस्थित होता है वह मेधावी मृत्यु को तैर जाता है। जो सत्यनिष्ठ होता है वह दूसरों का निग्रह करने की अपेक्षा स्वयं का निग्रह करता है और स्वयं का निग्रह करने वाला साधक दुःख से मुक्त हो सकता है।

सत्यनिष्ठ ज्ञानी साधक कभी प्रमाद नहीं करता। वह सर्वोच्च लक्ष्य के प्रति सजग रहता

है- "**अणण्ण परमं णाणी णो पमादे कयाइ वि। आयगुत्ते सदा वीरे जायामायाए जावए।।**"[25] अपने सर्वोच्च आत्म-लक्ष्य के प्रति सजग रहने वाला साधक आत्मनिग्रही होता है तथा अपनी संयम यात्रा का निर्वाह आत्मगुप्त होकर करता है। वह दूसरों से युद्ध करने की अपेक्षा स्वयं पर विजय प्राप्त करने के लिए सजग रहता है।

सन्दर्भ:-

1. आचारांगसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2010, प्रथम श्रुतस्कन्ध, अध्ययन 2, उद्देशक 1, सूत्र 63
2. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.1.63
3. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.1.66
4. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.1.68
5. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.1.108
6. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.5.94
7. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 5.1.151
8. उत्तराध्ययनसूत्र, 4.5
9. दुहतो जीविवस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए जंसि एगे पमादेंति। आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.3.127
10. 'मा मे केइ अदक्खु' अण्णाण पमाददोसेणं। आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 5.1.151
11. मायी-पमायी पणरेति गब्भं।- आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.1.108
12. तत्त्वार्थ सूत्र, 7.8
13. सूत्रकृतांग, 1.8.3
14. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.4.129
15. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 5.2.152
16. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 5.4.163
17. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.1.106
18. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 10
19. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.1.65
20. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 5.2.156
21. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 2.1.65
22. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 4.2.134
23. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.2.117
24. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.3.127
25. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, 3.3.123

-3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हा. बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.

संगोष्ठी-आलेख

आचारांगसूत्र में तीन मंगल*

श्री प्रकाशचन्द्र पटवा

निर्विघ्न रूप से शास्त्र की समाप्ति और सुफल की प्राप्ति के लिए शास्त्र की आदि, मध्य व अन्त में मंगल करने का विधान है। लौकिक कार्यो की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए भी मंगल करने का विधान है। पुण्य, पूत, पवित्र, प्रशस्त, शिव, भद्र, क्षेम, कल्याण, शुभ, सौख्य आदि 'मंगल' के ही पर्यायवाची या समानार्थी शब्द हैं।

मंगल शब्द के दो अर्थ हैं। प्रथम अर्थ के अनुसार 'मंगम्' अर्थात् उत्साह, खुशी और 'ल' का आशय लाना है। जो मन को उमंगों, खुशियों से लबालब भर दे, वह मंगल है। जो पूरी दुनिया के मन में आनन्द ही आनन्द, हर्ष ही हर्ष भर दे, वह मंगल है। 'मंग' अर्थात् सुख या पुण्य। जो जीवन की यात्रा को निर्विघ्न बनाये वह मंगल।

दूसरे अर्थ के अनुसार 'मं' का अर्थ है पाप, दुर्विचार, दु:संकल्प, राग-द्वेष और गल का अर्थ है गलाने वाला। इस प्रकार मंगल का अर्थ हुआ जो ज्ञानावरणादि द्रव्य पापों को और अज्ञान, मिथ्यात्व आदि भाव-पापों को गलाता है, विनष्ट करता है, दहन करता है, वह मंगल है।

पूर्वाचार्यो ने तीन बार मंगल का प्रयोजन बताया और कहा कि शास्त्रों के आदि, मध्य और अन्त में मंगल करना चाहिये। **'पढमे मंगल वयणे सित्था सत्थस्स पारगा होंति'** अर्थात् शास्त्र के आदि में मंगल पढ़ने से शिष्य शास्त्रों के पारगामी होते हैं। **'मज्झिम्मे णीविग्घं विज्जा विज्जाफलं चरिमे'** अर्थात् मध्य में मंगल करने पर निर्विघ्न विद्या की प्राप्ति होती है और अन्त में मंगल करने पर विद्या का फल प्राप्त होता है।

शास्त्र के आदि में मंगल करने से समस्त विघ्नों का नाश तथा मोक्ष-मार्ग की प्राप्ति होती है। नास्तिकता का त्याग, सभ्य पुरुषों के आचरण का पालन, पुण्य की प्राप्ति और विघ्न-विनाश इन चार लाभों के लिए शास्त्र के आरंभ में इष्ट देवता की स्तुति की जाती है। मंगल आनन्द उत्पन्न करता है। आनन्द गुण की प्राप्ति से जाना जा सकता है कि मंगल हुआ या नहीं। ग्रंथ के आदि में ग्रंथकार द्वारा श्लोकादि रूप में लिखकर किया जाने वाला निबद्ध मंगल कहलाता है। ग्रंथकार द्वारा जब अलिखित रूप में मन-वचन-काया से नमस्कार

---

* चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।

किया जाता है, उसे अनिबद्ध मंगल कहते हैं। अनेक अपेक्षाओं से मंगल के अनेक प्रकार हैं, जैसे -

1. सामान्य की अपेक्षा मंगल एक प्रकार का है।
2. मुख्य और गौण के भेद से दो प्रकार का है।
3. सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र की अपेक्षा से तीन प्रकार का है।
4. ज्ञान, दर्शन और तीन गुप्ति के भेद से पांच प्रकार का है।
5. किसी अपेक्षा से मंगल छह प्रकार का है - नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव।

प्रश्न है कि शास्त्र स्वयं मंगल रूप है, फिर अलग से मंगल करने की क्या आवश्यकता है? सूत्र की आदि में किया गया निबद्ध या अनिबद्ध मंगल पठन में आने वाले विघ्नों को दूर करता है। प्रथम मंगल धर्मध्यान है और सूत्र स्वाध्याय से शुक्ल ध्यान की श्रेणि में प्रवेश होता है, क्योंकि मोक्ष-प्राप्ति शुक्ल ध्यान से ही होती है। मंगल की उक्त मीमांसा के बाद अब हम आचारांग में मंगल ढूंढ़ने का प्रयास करेंगे।

आदि मंगल :

आचारांग का प्रथम सूत्र है - "**सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं - इहमेगेसिं णो सण्णा भवइ।**" आर्य सुधर्मा स्वामी ने 'सुयं मे' इस पद के द्वारा आगम की आप्तप्रणीतता, अपना विनय भाव और आत्मा का कथंचिद् नित्यानित्यत्व सूचित किया है। "हे आयुष्मान् जम्बू! मैंने यह भगवान के मुखारविन्द से सुना है।" इसका अभिप्राय यह है कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह मेरा नहीं, अपितु भगवान का ही कथन है। भगवान ही इस अर्थ रूप आगम के प्ररूपक हैं। वे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और वीतराग हैं। अतएव उनके वचन विश्वसनीय व प्रामाणिक हैं। उनमें पूरी श्रद्धा रखनी चाहिये।

साथ ही, इस पद में सुधर्मा स्वामी अपना विनय-भाव प्रकट करते हैं। "मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसमें मेरा कुछ नहीं है, यह सब भगवान का ही है।" इस प्रकार अपने गर्व का परिहार करते हुए वे तीर्थंकर देव के प्रति अपना विनय प्रदर्शित करते हैं।

तीसरी बात जो इस पद से प्रकट होती है, वह है- आत्मा का कथंचित् नित्यानित्यत्व। "जिसने भगवान के मुखारविन्द से यह सब साक्षात् सुना है, वही मैं, तुम्हें यह कहता हूँ।" यह बात आत्मा को एकान्त नित्य और एकान्त अनित्य मानने पर घटित नहीं हो सकती। इससे यह सिद्ध होता है कि "सुनने वाला आत्मा" और "सुनाने वाला आत्मा" दोनों आत्म द्रव्य की विभिन्न अवस्थाएं हैं। इससे आत्म-द्रव्य का कथंचित् नित्यानित्यत्व सूत्रकार ने सूचित किया है।

इस तरह प्रथमं दो शब्दों के पद 'सुयं मे' में सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतराग प्रभु महावीर का बोध होता है, जो हम सबके लिए देवरूप और शासन के प्रथम गुरु हैं। जिनकी शिष्य परम्परा आज भी विद्यमान है, जो गुरु-रूप हैं एवं उनका विनय करना धर्म है। इस तरह जहां देव, गुरु, धर्म हैं; वहां मंगल ही मंगल है।

'सुयं मे' के बाद 'आउसं' सम्बोधन से सूत्रकार ने अपने शिष्य को कोमल संबोधन किया है। 'हे आयुष्मन्!' यह सम्बोधन कितना प्रिय है। इसके सुनने मात्र से हृदय में प्रसन्नता होती है। आयु सबको प्रिय है। इसलिए लोक में भी 'चिरायु हो', 'आयुष्मान् भव' आदि आशीर्वाद प्रचलित हैं। अत: आयुष्मान् सम्बोधन मंगलकारी और मंगलदायक है।

'तेणं' पद से सूत्रकार भगवान के विशेषणों का सूचन करते हैं। अर्थात् मैंने उन भगवान से यह सुना है, जिन्होंने राग-द्वेष आदि दोषों का उन्मूलन कर दिया है। जिन्होंने लोकालोक को प्रकाशित किया है, जो सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं, जो यथार्थ वक्ता हैं तथा जो देवेन्द्रों से पूजित हैं। इस तरह सूत्रकार ने विशेषणों से युक्त भगवान का वर्णन करके उनके प्रति अपार भक्ति का प्रदर्शन किया है, जो अत्यन्त मंगलकारी है। क्योंकि भक्तिपूर्वक ग्रहण किया हुआ ज्ञान ही सफल होता है।

'अक्खायं' (कहा है) इस पद से अर्थ रूप से आगमों की नित्यता का कथन किया गया है। अर्थात् ये आगम भगवान महावीर स्वामी द्वारा कहे गये हैं, न कि रचे गये हैं। इस प्रकार कर्तापने का निषेध करके अर्थ की अपेक्षा से आगमों की नित्यता प्रतिपादित की गई है। अतीत, वर्तमान और अनागत काल के तीर्थंकर, सब समान अर्थ का ही प्रतिपादन करते हैं। सबके वचनों में अर्थ की एकरूपता है। अतएव अर्थ की अपेक्षा आगम अनादि-अनन्त हैं। इस तरह इस पद में अनन्त मंगलकारी अनन्त तीर्थंकरों को नमन हुआ है।

इस प्रकार सम्बन्ध वाक्य का कथन करने के पश्चात् अब सूत्रकार, भगवान से सुने हुए अर्थ का प्रतिपादन करते हैं कि "**इहमेगेसिं नो सण्णा भवति**" - इस संसार में कई जीवों को आत्मज्ञान नहीं होता।

आत्मा स्फटिकमणि की तरह निर्मल और प्रकाश स्वभाव वाली है। उसका शुद्ध स्वरूप निरंजन और निराकार है। वह ज्ञान का पिण्ड है, किन्तु अनादिकाल से राग, द्वेष, मोह आदि के कारण उसका शुद्ध स्वरूप ज्ञानावरणीय आदि कर्मावरण से ढका हुआ है। ज्ञानावरणीय कर्म के आवरण के कारण जीव को आत्म-ज्ञान नहीं होता है। इसका तात्पर्य यह है कि हे शिष्य! तुझे हुआ है, तेरा ज्ञानावरणीय कर्म क्षयोपशम को प्राप्त हुआ है। ये कितने मंगलकारी वचन हैं। ये वचन ही आचारांग का आदि मंगल है।

आचारांग के प्रथम अध्ययन के 'शस्त्र परिज्ञा' नाम में ज्ञान और क्रिया का अनुपम

बोध दिया गया है। जैन धर्म ज्ञान और क्रिया के समन्वय से ही मोक्ष होना मानता है। **"पढमं नाणं तओ दया"** तथा **"ज्ञान-क्रियाभ्याम् मोक्षः"** - ये जिनशासन के प्रधान सूत्र हैं। ज्ञान और क्रिया परस्पर सापेक्ष होकर ही इष्ट फल प्रदान करने वाले हो सकते हैं। प्रथम अध्ययन में जीव का अस्तित्व सिद्ध करके पृथ्वी, जल आदि अव्यक्त चेतना वालों में भी युक्ति सहित चेतना का प्रतिपादन किया गया है। इन षट्कायिक जीवों के वध से कर्म-बंधन और वध-निवृत्ति से मोक्ष होता है, इसका बहुत ही सरस प्रतिपादन किया गया है और आत्म-विकास के लिए विचार, विवेक और संयम, इन तीन अंगों का सांगोपांग वर्णन करके द्रव्य और भाव-हिंसा से छूटने के उपाय बताये गये हैं। वस्तुतः अहिंसा ही संयम है और संयम से ही अहिंसा साध्य होती है। अतः अहिंसा के तत्त्व को हृदयंगम करने में ही आत्म-कल्याण है। राग, द्वेष, वैरभाव, ईर्ष्या, अविवेक आदि सभी भाव-हिंसा के अंग हैं और भाव-हिंसा द्रव्य-हिंसा भी कराती है। चैतन्य को चैतन्य समझकर किसी को पीड़ा न पहुँचाकर प्रत्येक प्राणी के साथ शुद्ध प्रेम का आचरण किया जाना चाहिये। अहिंसा का सिद्धान्त सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला है, मंगल करने वाला है। अतः सिद्ध होता है कि पहला अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' आदि मंगल है। वास्तव में अहिंसा ही आदि एवं उत्कृष्ट मंगल है। दशवैकालिक सूत्र की पहली गाथा में भी इस तथ्य को पुष्ट किया गया है -

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

मध्य मंगल :

प्रथम 'शस्त्र-परिज्ञा' अध्ययन में छः काय की सिद्धि द्वारा जीव तत्त्व की और विरोध रूप से अजीव तत्त्व की प्ररूपणा की गई है। छः काय को जानकर उनके वध से निवृत्त होने का उपदेश दिया गया है। जीव-निकाय के वध से आस्रव होता है, यह कहकर आस्रव तत्त्व और विरति से संवर होता है, इससे संवर तत्त्व का कथन हुआ समझना चाहिये। द्वितीय लोक-विजय अध्ययन में बंध और निर्जरा का कथन किया गया है। पुण्य और पाप, बंध के अन्तर्गत होने से बंध के वर्णन से इनका वर्णन समझना चाहिये। तृतीय शीतोष्णीय अध्ययन में त्याग, परीषहों व उपसर्गों के प्रति सहिष्णुता और कषाय-त्याग का वर्णन किया गया है। इसका फल मोक्ष है, अतः इस अध्ययन में मोक्ष का कथन समझना चाहिये। इस प्रकार तीन अध्ययनों में नवतत्त्वों की व्याख्या की गई है। तत्त्वों पर श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन (सम्यक्त्व) कहा जाता है। अतः चौथे अध्ययन में सम्यक्त्व पर विचार किया गया है। यही सम्यक्त्व आचारांग का मध्य मंगल है।

सम्यक्त्व का अर्थ है निर्मल दृष्टि, सच्ची श्रद्धा और सच्चा लक्ष्य। सम्यक्त्व ही मुक्ति-महल का प्रथम सोपान है। जब तक सम्यक्त्व नहीं है, तब तक समस्त ज्ञान और चारित्र मिथ्या है। जैसे अंक के बिना बिन्दुओं की लम्बी लकीर बना देने पर भी उसका कोई मूल्य नहीं होता, उससे कोई संख्या तैयार नहीं होती, उसी प्रकार सम्यक्त्व के बिना ज्ञान और चारित्र का कोई उपयोग नहीं, वे शून्यवत् निष्फल हैं। अगर सम्यक्त्व रूपी अंक हो और उसके बाद ज्ञान और चारित्र हो तो जिस प्रकार प्रत्येक शून्य से दस गुनी कीमत हो जाती है, *उसी प्रकार वे ज्ञान और चारित्र मोक्ष के साधक होते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि* मुक्ति के लिए सम्यक्त्व की सर्वप्रथम अपेक्षा रहती है। अत: चौथा सम्यक्त्व अध्ययन ही मध्य मंगल है।

तत्त्वार्थ पर श्रद्धा होना सम्यग्दर्शन है। तत्त्व क्या है ? तत्त्व वही है जो तीर्थंकर देवों ने निरावरण केवल ज्ञान और केवल दर्शन के द्वारा जगत् को उपदेश दिया है। प्रश्न हो सकता है कि तीर्थंकरों का उपदेश तो सागर के समान विस्तृत, गंभीर और साधारण जनों के द्वारा दुर्गम्य है तो साधारण जनों के लिए हितकर श्रुत सागर का सार, आगम महोदधि के मंथन का मक्खन रूप तत्त्व क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया गया है -

अतीत काल में अनन्त तीर्थंकर हो चुके हैं, क्योंकि काल अनादि है। भविष्यकाल अनन्त है, इसलिए भविष्य में अनन्त तीर्थंकर होंगे और वर्तमान में जघन्य 20 और उत्कृष्ट 170 तीर्थंकर हो सकते हैं। इस तरह अतीत, वर्तमान और भविष्य काल के तीर्थंकरों ने यही कहा, कहते हैं और कहेंगे कि सब प्राणियों, सब भूतों, सब सत्त्वों और सब जीवों को नहीं मारना चाहिये। उन्हें शारीरिक और मानसिक संताप नहीं देना चाहिये। सभी तीर्थंकरों के उपदेशों का यही सार है, तत्त्व है। इस पर श्रद्धा करना सम्यग्दर्शन है। मूल पाठ में आए ''से बेमि'' पद का यह अर्थ है कि ''मैं वह कहता हूँ जिस पर श्रद्धा करने से सम्यक्त्व प्राप्त होता है।''

प्रश्न हो सकता है कि प्रथम शस्त्र-परिज्ञा अध्ययन में अहिंसा का कथन कर दिया गया है, उसे पुन: कहने और सम्यक्त्व के निरूपण में उसे दोहराने की क्या आवश्यकता है? इसका समाधान यह है कि जैन धर्म का प्राण ही अहिंसा है। जैनेन्द्र प्रवचन अहिंसामय ही है। अहिंसा की आधार-शिला पर ही जैन धर्म का महल खड़ा है। अत: स्थान-स्थान पर उसका वर्णन किया जाता है, ताकि शिष्य अहिंसा में सदा प्रवृत्त रहे। दूसरी बात यह है कि प्रथम अध्ययन में विवेक रूप अहिंसा का वर्णन है और चतुर्थ सम्यक्त्व अध्ययन में आचरणीय अर्थात् व्यवहार के सर्व क्षेत्रों में व्यापक अहिंसा का कथन है। इसका महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि प्रथम अध्ययन में छ: काय में जीव है, यह सिद्ध कर अहिंसा का विवेक समझाया गया है और इस अध्ययन में अहिंसा को अपने जीवन में कैसे ढालना, यह बताया

गया है। तीसरी बात यह है कि अहिंसा का स्वरूप इतना व्यापक है कि अन्य व्रतों का अन्तर्भाव इसमें हो जाता है। जहां अहिंसा है, वहां उत्कृष्ट मंगल है ही, अत: आचारांग का चौथा अध्ययन अपने आप में मंगल है।

अन्तिम मंगल :

चतुर्थ अध्ययन में सम्यक्त्व का प्रतिपादन किया गया है। सम्यक्त्व होने पर ही ज्ञान हो सकता है, अत: ज्ञान और सम्यक्त्व सहभावी हैं। जिस प्रकार रूप और रस सहचर हैं, उसी प्रकार सम्यक्त्व एवं ज्ञान हैं। सम्यक्त्व एवं ज्ञान का फल चारित्र है और चारित्र ही प्रधानत: मोक्ष का अंग है। तत्त्वार्थसूत्र में भी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र को मोक्ष-मार्ग बताया गया है। दर्शन और ज्ञान का विवेचन चतुर्थ अध्ययन में होने के बाद लोकसार नामक पांचवें अध्ययन में क्रम प्राप्त चारित्र का प्रतिपादन हुआ है।

जो सच्चा पुरुषार्थी और श्रद्धालु होता है, वही वीतराग की आज्ञा का आराधक होता है। भोगों में सुख नहीं है, लेकिन संयम में सुख है। निरासक्त पुरुष अकर्मा बन जाता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है। मुक्तात्मा की दशा अनिर्वचनीय और अनुगम्य है। मुक्तात्मा वीतराग है, अतएव संसार के कार्य-कारण से असम्बद्ध होने से अवतार धारण नहीं करते हैं। राग-द्वेष की परिणति से रहित होना ही सार पाना है। जो अनासक्त है, वह लोक का सार प्राप्त करता है।

सच्चा मुनि शरीर को संयम का साधन समझता है। वह उसे कभी अपनी चीज़ नहीं मानता। जब तक उसे संयम का साधन मानता है, तब तक अनासक्त होकर आहारादि से उसका निर्वाह करता है और जब वह समझ लेता है कि अब यह साधन काम देने लायक नहीं है तो उसे छोड़ देता है। उसे शरीर पर ममता नहीं होती है। उसे अपने आत्म-स्वरूप को पाने की चाह रहती है। इसलिए मूल वस्तु की रक्षा के लिए वह बाह्य शरीर का त्याग करने के लिए भी तैयार रहता है। वह प्राणों की बाजी लगा देता है, लेकिन अपने चारित्र में दोष नहीं लगाता है। शरीर पर से जब ममता हट जाती है, तब सच्ची आध्यात्मिकता जागृत होती है। ऐसे आध्यात्मिक वीर को मृत्यु का भय नहीं हो सकता। मृत्यु का समय आने पर वह काष्ठ की तरह निश्चल रहकर सब दु:खों को सहन कर लेता है और जब तक देह और आत्मा भिन्न-भिन्न नहीं हो जाते तब तक दृढ़तापूर्वक प्रसन्नता के साथ मृत्यु का स्वागत करता है। ऐसा करते हुए कर्मों को धुन डालता है और सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाता है। यही छठे 'धूत' अध्ययन का सार है।

यह खेद का विषय है और हमारा दुर्भाग्य है कि आचारांग जैसे महाशास्त्र का 'महापरिज्ञा' नामक सातवां अध्ययन काल के कराल में चला गया, सर्वथा विलुप्त हो गया।

जीव का कर्म-द्रव्यों के साथ जो संयोग होता है, वह बंध है। उस बंध का छूट जाना मोक्ष है। इससे यह प्रतिध्वनित होता है कि मोक्ष बंधपूर्वक होता है। जिसका बंधन नहीं, उसका मोक्ष कैसे हो सकता है ? जो बंधता है, वही छूटता है; अत: आठवें अध्ययन विमोक्ष में पहले बंध का कथन किया गया है और बंध के क्षय को विमोक्ष कहा है।

उपर्युक्त आठों अध्ययनों में जो तत्त्वार्थ प्ररूपित किया गया है, वह भूमिति (भूमध्य रेखा, कर्क रेखा, मकर रेखा) की सरल रेखा के समान कल्पनात्मक या आदर्श रूप ही नहीं है, अपितु व्यावहारिक है। यह सब कथन आचरणगम्य है। श्रमण भगवान महावीर ने न केवल यह उपदेश ही प्रदान किया है, अपितु स्वयं उसका आचरण किया है। अनुभव, परीक्षण और आचरण के पश्चात् ही भगवान ने यह सब तत्त्वार्थ प्ररूपित किया हैं, इसलिए उपादेय है। अत: इस नौवें 'उपधान श्रुत' अध्ययन में भगवान के तपोमय जीवन का वर्णन किया गया है। ताकि साधक उनके आदर्श को अपने सामने रखकर साधना में निश्चल एवं अडोल बन सके और यही उपधान श्रुत आचारांग का अन्तिम मंगल है।

सब तीर्थंकरों का यह कल्प है कि वे अपने-अपने तीर्थ में आचार का प्ररूपण करते हुए अन्त में अपने तप:कर्म का वर्णन करते हैं। यह तपस्या का विवरण 'उपधान श्रुत' कहा जाता है। उपधान अर्थात् जो समीप रखा जाए। उपधान दो प्रकार का है - द्रव्य और भाव। शय्यादि पर सुखपूर्वक शयन के लिए जो तकिया रखा जाता है, वह द्रव्य उपधान है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप को भाव उपधान समझना चाहिये। जिस प्रकार मलिन वस्त्र जलादि से शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार भाव-उपधान से आठ प्रकार के कर्म नष्ट हो जाते हैं और आत्मा शुद्ध-निर्मल हो जाता है। अत: सभी मोक्षाभिलाषी आत्माओं को भगवान का आदर्श जीवन अपने सन्मुख रखते हुए उनके बताए हुए मार्ग पर दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिये। इसी में परम कल्याण है। यही सिद्धि का सोपान है। यही चरम मंगल है।

-R. Connections No. 29/2, 5th Cross Malleshwaram,
Opp. Batras Clinic, Bangluru-560003

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

जाना है

मुझे भी जाना है,
आपको भी जाना है,
सबको जाना है,
फिर जो गया उसके लिए क्या रोना है।

आराधना

जिसकी लोगों से
मिलने में है ज्यादा रुचि,
उसकी आध्यात्मिक आराधना
नहीं हो सकती ऊँची।

संगोष्ठी-आलेख

आचारांग में श्रावक धर्म के लिए मार्गदर्शन*

श्री शान्तिलाल बोहरा

आचारांगसूत्र में सीधे तौर पर मुनि-आचार प्रतिपादित है, श्रावक का आचार नहीं। प्रायः उपासकदशांग को छोड़कर सभी आगमों में मुख्यत: अनगार-धर्म का ही प्रतिपादन है। उपासकदशांग के अनुसार आनन्द श्रावक भगवान का धर्मोपदेश सुनते हैं। श्रवण के बाद वे देखते हैं कि जिस साधना का भगवान् उपदेश दे रहे हैं, वैसा सामर्थ्य तो मेरा नहीं है। मेरा जो सामर्थ्य है, उसके अनुसार मार्ग का चयन करूँ। तब भगवान बताते हैं कि दो मार्ग हैं - अगार (श्रावक) धर्म और अणगार (साधु) धर्म।

साधु प्रभु के गुरु नन्दन (वरिष्ठ पुत्र) होते हैं और श्रावक लघु नन्दन (कनिष्ठ पुत्र) होते हैं। जो स्वयं को आनन्दित करे और दूसरों को भी आनन्दित करे, वह नन्दन है। संसार में पुत्र-जन्म पर किसी को आनन्द हो या न हो, लेकिन परिवार को आनन्द होता है। वैसे ही जब कोई संयम लेता है तो छः काय के जीवों को सबसे ज्यादा आनन्द होता है। यदि कोई पापों का आंशिक त्याग करता है तो छः काय के जीवों को आंशिक आनन्द होता है।

आनन्द श्रावक ने कहा - "भगवन् आपने जो बताया, वह सत्य है। लेकिन मेरी सामर्थ्य नहीं है कि मैं मुनि-धर्म स्वीकार कर सकूँ।" इसलिए कृपा करके मुझे श्रावक धर्म बताइये। तब भगवान ने उसे केन्द्र में लेकर उपदेश दिया। वह उपदेश श्रावक धर्म से सम्बद्ध है, किन्तु भगवान का मुख्य उपदेश तो साधु-धर्म का ही है।

श्रावक धर्म का अर्थ क्या है? जिनवाणी को जो श्रद्धापूर्वक श्रवण करता है, विवेकपूर्वक हेय, ज्ञेय और उपादेय को समझपूर्वक स्वीकार करता है और फिर उसे अपने जीवन में अंगीकार करता है, वह श्रावक होता है। श्रावक विभिन्न मर्यादाओं में जीता है। श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं। वह अपना परिग्रह घटाकर साधु बनने का भाव रखता है। अन्त में संलेखना का भाव रखता है।

आचारांगसूत्र का सन्देश है कि आचार के इस रूप को जीवन का अंग बना लिया जाए। आचारांग के व्याख्यान में कुछ बातों की पुनरावृत्ति हो सकती है। ज्ञानियों की शिक्षा जितनी बार दोहराई जाती है, उतनी ही बार कोई नवीन अर्थ या विचार ध्यान में आता है।

* चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।

इसका कारण है ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम। आचारांग सूत्र के प्रारंभ में 'सुयं' शब्द में श्रवण की महिमा ध्वनित होती है। अन्यत्र भी कहा गया है- **"सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं, उभयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे।"** अर्थात् सुनकर जानो कि कल्याण क्या है और पतन क्या है। जो भी सुनो, उसमें हितकर-अहितकर का विवेक रखते हुए हितकर का, श्रेयस्कर का जीवन में आचरण करना चाहिये।

शास्त्र में कहा गया है कि जितना भी हम सुनते हैं, उसका लाभ मिलता है। इसलिए सबसे पहला कार्य श्रवण है। कोई घण्टे, दो घण्टे का वक्त श्रवण के लिए निकाल लेता है तो कोई कम निकाल पाता है। सन्तों के सिर्फ दर्शन करने जाने वाला भी सुनता है। **'दया पालो'** ये दो शब्द भी धर्म का सार है। सुनने से ही यात्रा शुरू होती है। धर्म-श्रवण के बाद ज्ञान-विज्ञान-प्रत्याख्यान होता है। फिर उससे आगे संयम, अनास्रव, तप, व्यवदान, अक्रिया और सिद्धि होती है। लेकिन सबसे पहले सुनना जरूरी है। चाहे आध्यात्मिक जीवन हो या व्यावहारिक जीवन, सुनना लाभदायक होता है। व्यावहारिक जीवन में बेटा यदि बड़ों की सुनता है, बहू यदि सुनती है तो वे सुनते हुए सफल होते हैं। आध्यात्मिक जीवन में गुरु की सुनने वाला शिष्य सफल होता है।

आचारांगसूत्र में कहा गया है कि **"जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे"** सीधे तौर पर इसका आशय है – जो गुण हैं, वे आवर्तन हैं। प्रश्न है कि दोष तो संसार में आवर्तन का कारण लग सकते हैं, किन्तु गुण कैसे आवर्तन का कारण हो सकते हैं। गहराई से देखें तो गुण का यहाँ अर्थ कामगुण हैं। कामगुण पांच हैं – शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श। हे जीव! तू कामनाओं को पकड़ता है, ये कामनाएँ बढ़ती रहती हैं। इसलिए उन्हें छोड़कर पांच आत्मगुणों में जाना चाहिये। पांच आत्मगुण हैं – ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य। ये ही पंचाचार हैं। जब-जब कामगुण बढ़ते हैं, तब-तब आत्मा के गुण घटेंगे। आत्मगुणों के विकास के लिए कामगुणों को छोड़ना होगा। कामगुण छोड़े बिना आत्मगुणों का विकास संभव नहीं है। गुणों को आवर्तनकारी बताकर आत्मा की त्रैकालिक सत्ता स्वीकार की गई है।

दुनिया में ऐसे भी दर्शन हैं, जो सिर्फ खाने-पीने में ही अपनी सफलता मानते हैं। पूर्वजन्म/पुनर्जन्म का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते। जहां संसार परावर्तन होता है, वहां पूर्वजन्म स्वीकार किया जाता है। जहां छः काय का विवेचन आता है, वहाँ जीव-तत्त्व की स्वीकृति मिलती है कि- आत्मा है, वह कर्ता है और भोक्ता है। इसका आशय है कि जिस समय जो आत्मा कर्त्ता है, भोगते समय भी वही आत्मा है, इस तथ्य से आत्मा की त्रैकालिक सत्ता सिद्ध होती है। छः काय का स्वरूप बताकर जीवत्व की सिद्धि के साथ अहिंसा का दिग्दर्शन कराया गया है। साधु अहिंसा का सूक्ष्म पालन करता है। श्रावक स्थूल

हिंसा को छोड़ता है। जीव-अजीव को, हिंसा-अहिंसा को जानते हुए वह हिंसा से पूर्ण विरत होने का लक्ष्य रखता है। ज्ञेय-परिज्ञा से हिंसा को समझें और प्रत्याख्यान-परिज्ञा से हिंसा को त्यागें।

आचारांग के पहले, दूसरे और तीसरे अध्ययनों में अलग-अलग अपेक्षाओं से नव-तत्त्व का वर्णन आ जाता है। श्रावक की पहली पहचान है कि वह नवतत्त्व को जाने। जानने के बाद वह हेय को छोड़ता है। आगे बताया गया है कि साधक को शान्त रहना चाहिये। द्रव्य से शान्त रहने वाला भी यदि भाव से अशान्त है तो वह हिंसा करता है। कषाय-दशा में ही भाव-अशान्ति होती है। इसलिए आचारांग में एक बिन्दु से बात शुरू की गई है कि जो क्रोध का त्याग करता है, वह क्रोधदर्शी बनता है। इस प्रकार आगे उसे क्रमशः राग, द्वेष, मोह, मान, नरक, तिर्यंच और दुःख का दर्शी बताया गया है। एक सूत्र में यहाँ तक बता दिया गया है कि जो क्रोधदर्शी बनता है, वह दुःखदर्शी बनता है यानी दुःख को देखने वाला बनता है।

तत्त्वार्थसूत्र में कहा गया है कि हिंसा आदि से आत्मा की यहाँ भी हानि होती है और आगे भी हानि होती है। कषाय में जो रहता है, वह स्वयं तो दुःखी होता ही है, साथ ही अपने आसपास में रहने वालों को भी दुःखी करता है। व्यक्ति को अपने दुःख को देखना चाहिये, अर्थात् दुःख के मूल कारणों को देखना/ जानना चाहिये।

आचारांग के पहले अध्ययन में हिंसा के चार कारण बताये गये हैं - दुःख-विमोचन के लिए, जन्म के लिए, मरण के लिए और मान-प्रतिष्ठा के लिए। ऐसा कथन यहाँ सिर्फ दुःख और दुःख के कारण भूत हिंसा को बताने के लिए किया गया है कि जो साधक सम्यक्त्वी है, वह उन जीवों में जीवत्व को जानकर उनको दुःख नहीं दे। जो मिथ्यादृष्टि होता है, वह इस बात पर श्रद्धा नहीं रखता है। पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि में जो जीवत्व की संज्ञा बताई गई है, वह जैन धर्म के अलावा किसी भी अन्य धर्म-ग्रंथ या साहित्य में नहीं दिखाई पड़ती है। विज्ञान ने वनस्पति में जीवत्व मान लिया, यह एक अलग बात है।

आचारांग से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिये कि इन्द्रियों को भोग-प्राप्ति की बजाय ज्ञान-प्राप्ति में लगा दिया जाए। आचारांग में कहा गया है कि इन्द्रियां जब तक हृष्टपुष्ट हैं, इन्द्रियों में जब तक तेज है, तब तक धर्म का आराधन कर लेना चाहिये। अप्रमत्त रहकर, सजग रहकर ही धर्माराधना संभव है। शक्ति का अभाव साधना में बाधक नहीं है, अपितु शक्ति का सही दिशा में उपयोग नहीं होने से ही समस्याएं हैं। हम शक्ति का सही उपयोग करना सीख जाएं और अप्रमत्त हो जाएं। क्योंकि प्रमाद संसार-भ्रमण का कारण है। पांच प्रकार का प्रमाद होता है - मद्य, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा। ये प्रमाद जीव को

संसार में रुलाते हैं। यह बात उपदेशात्मक भी है और तात्त्विक रूप से भी सिद्ध होती है।

कर्मग्रंथ में कहा गया है कि नया आयुष्य बंध अधिकतम छठे गुणस्थान तक होता है। कभी छठे गुणस्थान में बंध करता हुआ जीव सातवें गुणस्थान को स्वीकार कर ले, यह बात अलग है। आयुष्य बंध जहां होता है, वहाँ तक भव भ्रमण खत्म नहीं होता है। अप्रमत्त को आत्मगुण अच्छे लगते हैं। दूसरी ओर कहा गया है कि कामगुणों से संसार में आवर्तन (परिभ्रमण) होता है।

भगवान ने रत्नत्रय का मार्ग बताया है, जो सीधा और सरल है। मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय का जो मार्ग है, वह टेढ़ा-मेढ़ा है। पर पता नहीं क्यों हमें जो सीधा-सरल मार्ग है, वह टेढ़ा लगता है। मोह से बेभान जीव सत् में असत् की और असत् में सत् की कल्पना करता है। वह अपनी कमजोरी को स्वीकार नहीं करता है। यदि वह अपनी कमजोरी समझ जाए तो वह ऐसा नहीं समझेगा कि सीधा मार्ग गृहस्थ का है और कठिन मार्ग साधु का है।

सरल मार्ग उसे कहते हैं, जिस पर चलकर मंजिल शीघ्र मिलती है। वह आचरणीय एवं अनुकरणीय मार्ग है। यह सच है कि पंच महाव्रत से मुक्ति जल्दी मिलती है। साधु-धर्म का अभ्यास-क्रम एक पूर्ण साधना है। श्रावक धर्म अपने एक मर्यादित रूप में आगे बढ़ता है। सामायिक, संवर, त्याग, तप, प्रतिक्रमण, पौषध आदि साधनाएँ श्रावक को बड़े मार्ग, सरल मार्ग की ओर अग्रसर होने में सहायक बनती हैं।

गुणस्थानद्वार में बताया गया है कि सर्वविरति के जो अनेक जन्म हैं, वे घटकर आठ भव ही रह जाते हैं। जबकि श्रावकधर्म के हजारों, लाखों, करोड़ों एवं संख्यात भव भी हो जाते हैं। हजारों बार श्रावक धर्म की आराधना कर लेने के बाद जीव साधु-धर्म की ओर बढ़ता है, उसकी भावना बनती है। इसलिए इस जीवन में जितना अधिक त्याग करेंगे, उतना ही साधु-धर्म के निकट होते जाएँगे।

लोक का वर्णन करते हुए चारित्र को लोक का सार बताया गया है। आचारांग में पाँच प्रकार के आचार बताये गये हैं - ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार। दो आगे, दो पीछे; चारित्राचार मध्य में है। इसमें साधु और श्रावक के लिए अलग-अलग भेद नहीं हैं। मात्र गृहस्थी के संचालन के लिए पारिवारिक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए भगवान ने देशविरति के अन्तर्गत श्रावक के लिए चारित्राचारित्र का वर्णन किया है। आगमों में आचार की बात कही गई है। आचार पूर्ण रूप से फलित होता है तो वह सर्वविरति है और उसका पूर्ण रूप नहीं है तो देशविरति है।

-श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, गणेशमल चोरडिया जैन भवन, 157, Huriopet, Chickpet, Bengaluru-560080 (karnataka)

संगोष्ठी-आलेख

आचारांग के परिप्रेक्ष्य में अनुकम्पा

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. जब अनुकम्पा का विषय आता है तो मुझे आचार्य हस्ती के प्रिय भजन की पंक्तियाँ याद आती हैं -

   दयामय, ऐसी मति हो जाय।
   औरों के दु:ख को दु:ख समझूं, सुख का करूं उपाय।
   दयामय, ऐसी मति हो जाय।
   अपने सब दु:खों को सह लूं, पर- दु:ख सहा न जाय।
   दयामय, ऐसी मति हो जाय।।

2. करीब एक सौ दस वर्ष पहले तक विज्ञान यह विश्वास नहीं करता था कि वनस्पति में हमारे समान ही चेतना-शक्ति है। जर्मनी के विद्वान डॉ. हर्मन जेकॉबी ने आचारांग सूत्र का अंग्रेजी में अनुवाद किया। फिर आचारांग का बांग्ला में अनुवाद हुआ। आचारांग में मानव शरीर के साथ वनस्पति की तुलना की गई है। वनस्पति के बारे में बहुत ही सूक्ष्म और व्यापक चिन्तन किया गया है। वैज्ञानिकों के लिए ये सन्दर्भ नये शोध के लिए प्रेरणा बने। बंगाल के वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बसु ने वैज्ञानिक प्रयोगों से यह सिद्ध कर दिखाया कि "वनस्पति में मानव के समान ही चेतना है।" तब से जैन दर्शन का वनस्पति में जीव का सिद्धान्त एक वैज्ञानिक सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है।

3. जैन आगम साहित्य की वैज्ञानिकता समय-समय पर सिद्ध होती रही है। यही कारण है कि जैन आगमों का अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ और हो रहा है। विदेशों में जैन आगमों का अध्ययन दो उद्देश्यों के लिए किया जाता है - 1. वैज्ञानिक शोध के लिए और 2. अध्यात्म के लिए। यूरोप के कुछ देशों में जैन आगमों के अनुवाद और अनुशीलन के लिए संस्थान भी बने हैं।

4. जैन तीर्थंकरों ने अपने केवलज्ञान में देखकर ऐसी-ऐसी रहस्यपूर्ण बातें बताईं, जिनके बारे में दूसरे धर्मनायक सोच भी नहीं सके। अहिंसा की सूक्ष्मता, जीवादि तत्त्वों की मीमांसा, कर्म-सिद्धान्त आदि के बारे में जो गहरा व तर्कपूर्ण व्यापक चिन्तन जैन धर्म

*** चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।**

में है, वह किसी भी धर्म में नहीं है।

5. आचारांग सूत्र में जैसे वनस्पतिकाय के सचेतन होने के बारे में कहा गया है, वैसे ही पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय और वायुकाय में भी चेतन-सत्ता स्वीकार की गई है। इन स्थावरकायिक जीवों को भी हमारे समान दु:ख, पीड़ा और वेदना होती है; इसलिए इन स्थावरकाय जीवों की विराधना से भी बचना चाहिये।

6. पानी के बारे में अन्य मतावलम्बी कहते हैं कि हाँ, पानी में तो जीव हैं - सूक्ष्म, छोटे-बड़े कई जीव हैं। जैन धर्म कहता है - वे पानी के आश्रित जीव हैं। पानी को अच्छी तरह से छान लेने के बाद भी जो साफ पानी होता है, वह पानी स्वयं सचेतन व सचित्त होता है। एक बूंद जल में असंख्यात जीव होते हैं। इसीलिए जैन साधु कच्चे पानी (सचित्त जल) का उपयोग नहीं करते हैं। अनेक जैन गृहस्थ भी सचित्त जल सेवन व उपयोग का त्याग रखते हैं।

7. इसी प्रकार अग्निकायिक जीवों की विराधना से बचने के लिए ए.सी., टी.वी. आदि के उपयोग से विरत रहने की प्रेरणा दी जाती है। कई विशेष व्रती श्रावक तो ऐसे कमरों में भी नहीं बैठते हैं, जहाँ ऐसे इलेक्ट्रोनिक उपकरणों को चलाया जाता है। वायुकायिक जीवों की विराधना से बचने के लिए पंखे का उपयोग वर्जित किया जाता है। जैन मुनि अपने पसीने से भीगी चादर को हवा में लहराते हुए सुखाने की बजाय विवेक से फर्श पर सुखाते हैं, वायुकाय के जीवों की विराधना से बचने के लिए। आचारांग सूत्र में बताया गया है कि स्थावरकायिक जीव हलन-चलन नहीं कर सकते हैं और अपनी पीड़ा और वेदना को व्यक्त नहीं कर पाते हैं; लेकिन उन्हें पीड़ा और वेदना होती है। इसलिए स्थावरकायिक जीवों पर भी अनुकम्पा का सन्देश दिया गया है।

8. जहाँ स्थावरकायिक जीवों के प्रति भी अनुकम्पा की बात कही गई हो, वहाँ त्रस (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा सन्नी और असन्नी पंचेन्द्रिय) प्राणियों के प्रति कितनी करुणा बरसी होगी, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। भगवान ने कहा कि हे मानव! तू तेरी प्रबल पुण्यवानी से मनुष्य भव में आया है। पांच इन्द्रियों, मन, बुद्धि आदि का मालिक है। तू सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। तेरी बुद्धि में बड़ी ताकत है, पर तू उसका दुरुपयोग मत कर। सब जीवों पर अनुकम्पा कर।

9. आचारांग सूत्र के माध्यम से भगवान फरमाते हैं कि :-

(क)जैसे हम जीना चाहते हैं, मरना नहीं चाहते; वैसे ही हर जीव जीना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता।

(ख)जैसे हम सुख की चाह रखते हैं, दु:ख नहीं चाहते हैं; वैसे ही हर जीव सुख चाहता

है, दुःख नहीं चाहता।

(ग) हमें किसी भी जीव को नहीं मारना, नहीं सताना, नहीं डराना-धमकाना, कष्ट नहीं देना, बन्दी नहीं बनाना, गुलाम नहीं बनाना चाहिये। किसी जीव के साथ जोर-जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिये।

(घ) किसी भी कारण से या बिना कारण के ऐसा कोई कार्य नहीं करना जिससे जीव हिंसा हो।

(ङ) जीवों का प्राण हरण करना हिंसा तो है ही, साथ ही उनके प्राणों की चोरी है, अदत्तादान है।

(च) किसी सचेतन की सचेतनता अस्वीकार करना अर्थात् उसे अजीव मानना अभ्याख्यान दोष है। अर्थात् उसकी सत्ता पर झूठा दोषारोपण करना है। दूसरे की सत्ता का अस्वीकार अपनी आत्मा का ही अस्वीकार है।

(छ) जब हम पृथ्वीकाय या अप्काय की हिंसा करते हैं तो उनके आश्रित अन्य प्राणियों की हिंसा भी हो जाती है।

(ज) अग्नि का स्पर्श पाकर कई सूक्ष्म छोटे-बड़े प्राणी मर जाते हैं। इसलिए जो अग्निकाय की हिंसा करते हैं, वे दूसरे जीवों की हिंसा भी करते हैं।

(झ) हिंसावृत्ति हमारी अबोधि का कारण होती है। अर्थात् हिंसा ज्ञानबोधि, दर्शनबोधि और चारित्रबोधि की अनुपलब्धि का कारण होती है।

(ञ) चिकित्सा के निमित्त भी किसी प्राणी का वध नहीं करना चाहिये, सताना नहीं चाहिये।

(ट) दूसरों के सुख को लूटकर स्वयं का सुख न चाहो, आरंभ समारंभ परिग्रह न करो।

(ठ) जब तू भीतर देखता है तो अपनी आत्मा के दर्शन कर और बाहर देखता है तो दूसरे जीवों में परमात्मा के दर्शन कर।

(ड) जब तू किसी भी जीव की हिंसा करता है तो पहले अपने आपकी हिंसा करता है, अपने आत्मगुणों की हिंसा करता है।

(ढ) जीवों के प्रति अनुकम्पा का विकास होते ही आरंभ, परिग्रह, आसक्ति, कषाय, तृष्णा, साता की कामना, सब अपने आप छूटने लगते हैं और जीवन में संयम आ जाता है। ऐसा समझकर किसी का अप्रिय नहीं करें, किसी को दुःख नहीं पहुँचाएँ।

इस प्रकार आचारांग में अनुकम्पा का विकास करके मोक्ष-प्राप्ति का सरल उपाय बताया गया है।

10. प्रश्न है कि सभ्य कौन, विकसित कौन ? क्या जो समृद्ध होते हैं, बड़े बंगले वाले, बड़ी गाड़ियों वाले होते हैं, वे सभ्य और विकसित कहलाते हैं ? उत्तर होगा - 'नहीं।' जो जितनी अनुकम्पा की पालना करता है, वह उतना ही सभ्य और विकसित है। अनुकम्पा का अधिकाधिक अनुपालन ही सच्ची सभ्यता और विकास का मापदण्ड है। इसलिए महाव्रतधारी साधु-साध्वी सबसे सभ्य और विकसित हैं।

11. प्रेम की भाषा सब समझते हैं, यह ठीक है। लेकिन जैन दर्शन में अनुकम्पा पर अधिक जोर दिया गया है। प्रेम व अनुकम्पा में फर्क यह है कि अनुकम्पा में बिल्कुल स्वार्थ नहीं होता है तथा अनुकम्पा छोटों व कमजोरों पर ज्यादा की जाती है।

12. अनुकम्पा का विकास करने के लिए आवश्यक है हर जीव में अपने जीव का दर्शन करना। अनुकम्पा की कुछ घटनाओं की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ :-

(क) ज्ञाताधर्मकथा के प्रथम अध्ययन में वर्णन है कि मेघकुमार ने अपने पिछले हाथी के भव में अपनी जान गंवाकर भी एक खरगोश को बचाया। उसी अनुकम्पा के प्रताप से वह राजकुमार बना और भगवान महावीर से दीक्षित होकर उसी भव में मोक्ष गया। अनुकम्पा के विकास का अर्थ है अपनी देह की ममता छोड़कर भी दूसरे जीवों को साता पहुँचाना। इतना भी नहीं हो सके तो कम से कम दूसरे जीवों को असाता तो नहीं पहुँचायी जाए।

(ख) अनुकम्पा का पापी पर भी सुप्रभाव होता है। सम्प्रदायवाद के कारण एक बार एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय के आचार्य से दुश्मनी हो गई। उन्हें मारने के लिए एक बार एक व्यक्ति नंगी तलवार लेकर आधी रात को धर्मस्थान पर गया। उस व्यक्ति ने देखा कि मुनिगण नीचे जमीन पर सो रहे हैं और आचार्य पाट पर सो रहे हैं। उसने आचार्य को मारने के लिए तलवार ऊपर की। अचानक देखा कि आचार्य ने करवट बदली उससे पहले नींद में ही पूंजणी से अपने शरीर और पाट के स्थान को पूंजा और फिर करवट बदली। वह व्यक्ति यह देखकर विस्मित हो गया। उसने सोचा कि नींद में भी जो व्यक्ति सूक्ष्म जीवों पर इतनी अनुकम्पा करता है, उसे हरगिज नहीं मारना चाहिये। ऐसा विचार करके वह चला गया।

(ग) सेठ सुदर्शन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर स्वयं पर झूठा इल्जाम लगाने वाली रानी को बचाया।

(घ) श्रीपाल ने उस धवल सेठ को अनुकम्पा करके बचाया, जिसने श्रीपाल को मार डालने की कोशिशें की थीं। दुश्मन पर अनुकम्पा का यह श्रेष्ठ उदाहरण है।

(ङ) तीर्थंकर भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन परम अनुकम्पा से अनुप्राणित है।

संगम देव ने उनको छह माह तक कष्ट दिये। वह थक-हार कर जब जाने लगा तो करुणा के महासागर भगवान महावीर की आँखों में आँसू आ गये। संगम ने मुड़कर देखा और आश्चर्य से पूछा कि छह माह तक असह्य परीषहों से जो महामानव विचलित नहीं हुए तो अब आँसू कैसे ? भगवान ने कहा, 'संगम तूने इतने प्रगाढ़ कर्मों का बन्धन कर लिया है, उनको भोगने में तुझे कितना कष्ट होगा, बस यही सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ गये।' संगम को तो कष्ट होगा तब होगा, उसके बारे में सोचकर प्रभु महावीर को उसी समय कष्ट का अनुभव हुआ। अनुकम्पा का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

14. इस प्रकार आचारांग सूत्र तथा अन्य आगम साहित्य में अनुकम्पा के प्रचुर सन्दर्भ मिलते हैं। इन आगमों पर आस्था रखने वालों ने हर समय और काल में अनुकम्पा के विविध उदाहरण प्रस्तुत करके प्राणिमात्र पर उपकार किया है। हिंसा और क्रूरता के इस जमाने में अनुकम्पा जैसे गुण को जीवन में स्थान देना बहुत आवश्यक है।

-61-63, Dr. Radhakrishan Sallai, Mailapur, Chennai-600004 (T.N.)

चेन्नई में 15 मई को सम्पन्न भागवती दीक्षा के प्रसंग पर पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रेषित शुभ भावनाएँ

संयम समस्त समस्याओं का सम्यक् समाधान है। प्रव्रज्या परमेश्वर बनने का पुनीत प्रयास है। दीक्षा आत्मा की समीक्षा है और जीवन की परीक्षा भी है।

आचारांग का आचरण, सूयगडांग का संविधान, ठाणांग का स्थापन, समवायांग का समाचरण, भगवती का विधान, ज्ञाताधर्मकथा का ज्ञान, उवासगदसा का उपधान, अंतगडदसा का आह्वान, अणुत्तरोववाइय का अवधान, प्रश्नव्याकरण का प्रावधान और विपाक सूत्र का वितान है 'संयम'।

जन्म को आह्लादकारी जीवन को प्रह्लादकारी बनाने वाले संयम पथ पर, कर्नाटक प्रान्त में आचार्य हस्ती के कृपापात्र क्षेत्र सोरापुर निवासिनी आंचलिया कुल दीपिका बहिन शीतल स्व-कषायाग्नि को पूर्ण शीतल बनाने के लिये जागृत हो समुद्यत हुई है, जो संघ के गौरव की अभिवृद्धि का एक पावन प्रेरणास्पद प्रसंग है। जिनशासन के गौरवशाली रत्नसंघ में साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. की पावन सन्निधि में पञ्चम प्रव्रज्या के रूप में पंचम पद पर आरुढ़ हो रही बहिन शीतल गुरुणी जी ज्ञानलता जी की चरण सन्निधि में ज्ञान की गरिमा, दर्शन की दीप्ति, 'चारित्र' के संसर्ग से चारित्र को निर्मल कर, रत्नसंघ के उपवन में स्वयं के 'भाग्य' को सवाया कर "संसारसागरं घोरं तर कण्णे लहुं लहुं" की आगम उक्ति को आत्मसात् करेंगी, ऐसी मंगल मनीषा है। *-जगदीश जैन*

दीक्षा-अर्द्धशती के समापन पर

दृढ़ संकल्प और संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी हैं उपाध्याय श्री

श्री नौरतनमल मेहता

रत्नसंघ के प्रथम उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने वि.सं. 2020 की वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को सूर्यनगरी-जोधपुर में इस युग के यशस्वी-मनस्वी-तपस्वी प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से पावन प्रव्रज्या अंगीकार की। उपाध्यायप्रवर की निरतिचार संयम-साधना से समूचा जैन जगत ही नहीं, सम्पर्क में आने वाले जैनेतर समाज के लोग भी आपकी सरलता, सहजता, सहिष्णुता, स्वाध्यायशीलता, जप-तप की क्रमबद्धता और निरभिमानता से परिचित हैं। सेवा में समर्पण के कारण जन-जन की जिह्वा पर आपश्री का नाम चौथे आरे की बानगी के रूप में प्रचलित है। आपश्री आत्मार्थी संत हैं। शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्यायश्री अल्पभाषी हैं, मितभाषी हैं और थोड़े में बहुत कुछ कहने की आपकी क्षमता अनूठी है। आपश्री प्रपंचों से सर्वथा दूर रहने वाले महापुरुष हैं। आपश्री के जीवन में राग-द्वेष की परिणति नहींवत् होने से आपकी मुख-मुद्रा पर सदा-सर्वदा प्रसन्नता का भाव प्रतीत होता है। चाहे अनुकूलता हो या प्रतिकूलता हर स्थिति-परिस्थिति में जब भी आपसे भक्तजन पूछते हैं- "बाबजी! सुख-साता है?" आपका एक ही उत्तर मिलता है- "आनन्द है"। आपको न प्रसिद्धि की चाहना है, न लोकैषणा की कामना, इसलिए आबाल-वृद्ध और जैन-जैनेतर जनसमुदाय की आपके प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति है।

आपने संयम-जीवन अंगीकार करके वि.सं. 2020 से 2047 तक 28 चातुर्मास में आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. की चरण-सन्निधि में सात चातुर्मास किए। आपश्री ने अपने नेश्राय गुरु पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. (बड़े) के श्री चरणों में ग्यारह वर्षावास किए। आपने एक चातुर्मास श्री चौथमल जी म.सा. की नेश्राय में किया तो तीन वर्षावास श्री जयंतमुनि जी म.सा. की सेवा में किए। सेवा एवं समर्पण के पर्याय आपश्री ने अपने आराध्य गुरुवर्य से न केवल पंडितरत्न की पदवी पाई, अपितु स्वतंत्र चातुर्मास करने की योग्यता अर्जित की, परिणामस्वरूप आपने अहमदाबाद-दिल्ली जैसे महानगरों में

यशस्वी स्वतंत्र वर्षावास किए, वहीं जयपुर, जोधपुर, पाली, बिजयनगर, ब्यावर, भीलवाड़ा, कोटा, कंवलियास, सवाईमाधोपुर, बालोतरा, पीपाड़शहर, भोपालगढ़, सिवाना, गोटन, नागौर, मेड़तासिटी जैसे क्षेत्रों में रत्नसंघ और जिनशासन की महती प्रभावना की। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर, मदनगंज, जलगांव, धूले जैसे नगरों में संयुक्त चातुर्मास परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग को पुष्ट करने वाले तो रहे ही, संघ में स्नेह-सामंजस्य की दृष्टि से भी संयुक्त चातुर्मास सफल रहे। महाराष्ट्र के होलनांथा का आपश्री का चातुर्मास छोटे क्षेत्र में भी संघ-दीप्ति का अनूठा चातुर्मास रहा। रत्नसंघ व्यवस्था में उपाध्याय पद पर आपश्री का पदारोहण आबाल-वृद्ध सबको प्रमोद की अनुभूति करा रहा है।

उपाध्यायप्रवर का जीवन खुली किताब की तरह है। आपने मारवाड़, मेवाड़, गोडवाड़, अजमेर-मेरवाड़ा, पल्लीवाल-पोरवाल, हाड़ौती, बीकाणा, सिवाञ्ची-मालाणी जैसे राजस्थान के प्रायः हर क्षेत्र को सिंचित किया तो गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों को अपनी चरणरज से पावन किया। आप चाहे ढ़ाणी में रहे अथवा ग्राम-कस्बे-नगर या महानगर में रहे, आपने अपनी दिनचर्या नियमित, व्यवस्थित और श्रमण परम्परानुकूल निर्बाध बनाए रखी। आज भी आप अपनी दिनचर्या में कोई बदलाव पसन्द नहीं करते। मध्याह्न 12 से 2 बजे तक ध्यान-मौन और कृष्ण पक्ष की दशमी को उपवास सहित अखण्ड मौन-साधना आपके जीवन की विशेषता है। संघहित चिन्तन में, संघ-दीप्ति में और संघ-सेवा में आपका सदा योगदान बना रहता है। संयम-साधना के 50 वर्षों में आपने संघ-समाज को दिया ही दिया है। आप साधना के 51 वें वर्ष में मंगल प्रवेश कर रहे हैं, आपकी स्वास्थ्य-समाधि समीचीन बनी रहे, आप दीर्घायु हों और संघ-समाज को आपश्री अपने कृतित्व से सदा लाभान्वित करते रहें। इन्हीं मंगल कामनाओं और शुभभावनाओं के साथ हम आपश्री के अनेकानेक सद्गुणों में से कोई-न-कोई गुण ग्रहण कर सकें तो ही हमारा जीवन पावन-प्रशस्त बन सकेगा।

उपाध्यायश्री सद्गुणों की उत्तम निधि है। पूर्वजन्म की पुण्यवानी, पारिवारिक संस्कार, धर्माचार्य-धर्मगुरु की सेवा-सन्निधि का लाभ, व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति रुचि व भावना, संयम-साधना में रमणता, ज्ञान-दर्शन-चारित्र के प्रति सजगता, ज्ञानाराधन-तपाराधन में जागरूकता, सेवा का आदर्श जैसे अनेकानेक गुण आपके व्यक्तित्व-कृतित्व में झलकते हैं। आम श्रावक आपके अतिविशिष्ट गुणों का अनुसरण कर सकें, न भी कर सकें तब भी हम प्रारंम्भिक अवस्था में उपाध्यायश्री के बचपन और यौवन में रहे गुणों को जीवन में जीने का यत्किंचित् प्रयास करें तो हममें साहस, संकल्प-शक्ति और संघर्षशीलता की भावना

जागृत होगी। साहस और संकल्प शक्ति से हम जीवन में कुछ कर गुजरने की क्षमता अर्जित कर सकेंगे।

साहस और संकल्प-शक्ति के बल पर हर व्यक्ति सिद्धि प्राप्त कर सकता है। उपाध्यायश्री ने किशोरवय में साहस का परिचय दिया तभी तो दो वक्त के भोजनोपरान्त, मुँह में कुछ नहीं लेना, चौविहार करना, एक बार थाली में आ गया उसे खाकर सन्तोष कर लेना, दुबारा न लेना, न मांगना, अपने निमित्त जहाँ तक बन सके पाप प्रवृत्ति से दूर रहना जैसे नियम सामान्य आदमी के बूते से बाहर हैं, पर आपने अपने अदम्य साहस से नियमों का सम्यक् आराधन किया।

उपाध्यायश्री की युवावय में संकल्प-शक्ति हमारे लिए प्रेरणादायी है। ''मुझे दीक्षा लेनी है, मैं दीक्षा लूँगा, मैं दीक्षा लेकर रहूँगा'' मन में केवल और केवल एक ही संकल्प जब साकार होता है तब अन्यान्य संकल्प या इच्छाएँ मन में आती ही नहीं, और कदाचित् आ भी जाय तो वे इच्छाएँ ठहरती नहीं।

संकल्प-शक्ति से आत्मशक्ति बढ़ती है। संकल्प-शक्ति का निर्माण विशिष्ट इच्छा से होता है, अन्यथा सामान्य इच्छाएँ तो लहरों की तरह आती-जाती रहती है।। विशिष्ट इच्छा आत्मशक्ति में रूपान्तरित होती रहती है। नहीं होने वाला काम आत्मशक्ति से बन जाता है। दृढ़ इच्छा शक्ति या संकल्पशक्ति से जिसकी आत्मशक्ति जागृत हो जाय तो फिर उसमें आत्मनियन्त्रण, आत्मानुशासन, आत्मविश्वास जैसे गुण प्रकट होते ही हैं। इन्द्रियों व मन के अनुशासन से संकल्प-शक्ति का विकास होता है। संकल्प-शक्ति बढ़ाने के लिए सकारात्मक सोच चाहिए तो सकारात्मक सोच रखने वाले महापुरुषों का साथ भी चाहिए। यदि हम अपनी संकल्प-शक्ति मजबूत कर लें तो फिर दुनियाँ का कोई काम ऐसा नहीं, जिसे पूरा न किया जा सके।

मनुष्य का जीवन एक संघर्ष है। संघर्षशील व्यक्ति सफलता की ओर अग्रसर होता है। उपाध्यायश्री ने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया, कर रहे हैं, इसीलिए हम अपने आराध्य उपाध्याय श्री की सफलता देख रहे हैं। हम उपाध्यायश्री के दीक्षा पूर्व के जीवन से शिक्षा लें तो हम भी साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। साधना के क्षेत्र में सफलता और सिद्धि प्राप्त करनी है तो साहस का परिचय दें, संकल्प-शक्ति जागृत करें और संघर्षों से घबराएँ नहीं। हम, श्रद्धेय उपाध्यायश्री के गुणों को जीवन में अपनाएँ तो यही हमारी आपश्री के प्रति सच्ची भक्ति होगी।

-'पारस', शिवशक्तिनगर रोड़ नं.1, तीसरी पोल के बाहर, महामन्दिर, जोधपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

आचारांग में आत्मिक सुख के उपाय*

श्री प्रकाशचन्द जैन

एक प्रश्न है, सुख क्या है ? जैन दर्शन के अनुसार सुख तीन प्रकार के हो सकते हैं- (1) साता वेदनीय के उदय से प्राप्त सुख - शारीरिक, मानसिक व इन्द्रिय-विषय सुख। अनुकूलताएँ, भोग-सामग्री आदि। (2) साता वेदनीय के क्षय से प्राप्त सुख-अव्याबाध सुख - जो सिद्धावस्था में, मोक्ष में प्राप्त होता है। (3) मोहनीय कर्म के क्षय-क्षयोपशम से होने वाला सुख। यह सुख त्याग-प्रत्याख्यान से मिलता है। कहा है- **सरीर पच्चक्खाणेणं लोगग्गं उवगए परमसुही यावि भवइ।** -शरीर छूटने के पश्चात् लोक के अग्रभाग में स्थित होकर जीव परम सुखी होता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वेदनीय के उदय से होने वाला सुख आत्मिक सुख नहीं होता है और वेदनीय कर्म के क्षय के पश्चात् सिद्धावस्था में अनन्त अव्याबाध सुख होता है, जो चौदहवें गुणस्थान के बाद होता है। वर्तमान जीवन में आत्मिक सुख पाने के लिए मोहनीय कर्म का क्षयोपशम ही उपाय है। आचारांग में ऐसे अनेक सूत्र एवं पद हैं, जो मोहनीय कर्म को क्षीण व शमित करने की प्रेरणा देते हैं। कुछ सूत्रों की यहाँ चर्चा की जा रही है।

(1) **पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि** – हे पुरुष! तू अपने मन को रोक (निग्रह कर)। इससे दु:ख से छूट जाएगा। यहाँ मन-संयम की बात कही गई है।

(2) **लाभो त्ति ण मज्जेज्जा अलाभो त्ति ण सोएज्जा बहुं पि लद्धुं ण णिहे। परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केजा** -लाभ है तो मद न करो, हानि है तो शोक मत करो। बहुत प्राप्त करके भी आसक्तियुक्त मत बनो। अपने को परिग्रह से दूर रखो। इस सूत्र में लाभ-हानि में समभाव की साधना तथा बाहरी और आन्तरिक परिग्रह, आसक्ति आदि से दूर रहने की प्रेरणा दी गई है।

(3) **अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिछिंदियाणं णिक्कम्मदंसी** -विषमता के प्रतिफल और आधार का निर्णय कर। उसका छेदन करके कर्मों से रहित अवस्था का

* चेन्नई चातुर्मास में 15-16 अक्टूबर 2011 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित स्वाध्याय शाला में प्रस्तुत विचार।

अथवा समता को देखने वाला बन। कर्मों के राजा मोहनीय के अधीन सारा संसार गतिमान है। विषमता भी उसी का फल है। इसलिए मोह का छेदन करना चाहिये और आत्म-सुख के लिए कर्म-रहित अवस्था को गहराई से सतत देखना चाहिये।

(4) **सच्चंसि धितिं कुव्वह। एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसेति** - सत्य में धैर्य रखो। यहां पर ठहरा हुआ मेधावी साधक सब पाप कर्मों को क्षीण कर देता है। इस सूत्र में आत्म-सुख के लिए सत्य में स्थिरता का सन्देश दिया गया है। सत्याचरण में लीन को मेधावी कहा गया है। वह सब पाप कर्मों को पराजित करता हुआ सुख की यात्रा में आगे बढ़ता जाता है।

(5) **उट्ठिए णो पमायए** - उठो, प्रमाद मत करो। इस सूत्र में पुरुषार्थ की प्रबल प्रेरणा की गई है। बिना विशेष प्रयत्न के मोह को हराना मुश्किल है।

(6) **अरतिं आउट्टे से मेहावी खणंसि मुक्के** - अरति से निवृत्त मेधावी क्षण में मुक्त हो जाता है। रति और अरति अथवा राग और द्वेष आत्म-सुख में बाधक हैं। मेधावी साधक अरति यानी रति और अरति दोनों से मुक्त होकर आत्मिक सुख पाता है।

(7) **धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए** - धीर मुहूर्तभर भी प्रमाद नहीं करे। आध्यात्मिक विकास की यात्रा में मुहूर्त्तभर का प्रमाद भी बाधक बनता है। इसलिए पुनः अप्रमत्त आराधना की बात कही गई है।

(8) **जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सातं। अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए। खणं जाणाहि पंडिते** -प्रत्येक प्राणी का सुख-दुःख अपना-अपना है। अथवा प्रत्येक साता (इन्द्रिय विषय) दुःख रूप है, ऐसा जानकर जो अवस्था अभी बीती नहीं है, उसे देखकर हे पंडित! क्षण को जान। वर्तमान को देख। जब तक इन्द्रियाँ परिपूर्ण हैं, तब तक आत्महित के लिए सम्यक् प्रकार से प्रयत्नशील बन। अनुकूलताओं का सदुपयोग कर।

(9) **पंडिए णो हरिसे णो कुप्पे। का अरई के आणंदे ?** इस सूत्र में आत्मिक सुख के लिए कहा गया है कि जो पंडित/प्रबुद्ध है, उसे अनुकूलताओं में फूलना नहीं चाहिये और प्रतिकूलता में नाराज नहीं होना चाहिये। समभाव की साधना ही आत्मिक सुख का उपाय है।

(10) **लोभं अलोभेण दुगुंछमाणे लद्धे कामे नावगाहति** - लोभ को संतोष से पराजित करता हुआ साधक कामभोग प्राप्त होने पर भी उनका सेवन नहीं करता है। वह अकर्म होकर सब जानता-देखता है। इस सूत्र में लोभ-विजय और काम-विजय की प्रेरणा है। अपनी कामनाओं पर विजय पाने वाला अकर्म होकर सब जानता-देखता है। यहाँ

ज्ञाता-द्रष्टा भाव का महत्त्व बताया गया है।

(11) **इणमेव णावकंखंति जे नरा धुवचारिणो** – कामभोग की इच्छा नहीं करने वाला मोक्ष सुख को प्राप्त करता है। इस सूत्र में कामभोग की इच्छा तक से विरत रहने की प्रेरणा है। आत्म-सुख और मोक्ष-सुख प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है।

(12) **दुक्खं लोगस्स जाणित्ता, वंता लोगस्स संजोगं जंति वीरा महाजाणं**– साधक लोक के दुःख को जानकर, संयोग का परित्याग करके मोक्षपथ को प्राप्त करते हैं। मुनिधर्म की साधना आत्मकल्याण की साधना है। लोक के दुःखों का पार नहीं है। साधक उन दुःखों को जानकर संयोग का परित्याग करते हैं। यह ज्ञान उन्हें मोक्षपथ पर अग्रसर बनाये रखता है। मुनिधर्म की साधना के लिए यह आवश्यक है।

(13) **तम्हा अविमणे वीरे सारए समिए सहिए सदा जते**– इसलिए मुनि सदा अविमना, प्रसन्नमना, स्व में रत, पंच समितियों से समित, ज्ञानादि से सहित, वीर होकर मन और इन्द्रियों का संयम करे। इस सूत्र में बताया गया है कि साधक को सदैव प्रसन्न रहना चाहिये तथा स्वयं में, अपनी आत्मा में लीन रहना चाहिये। इस लीनता के लिए पाँच समितियों का अनुपालन आवश्यक है अथवा पाँच समितियों के पालन से साधक आत्मलीनता में आगे बढ़ता है। साथ ही कहा गया है कि साधक वीर होकर मन और इन्द्रियों का संयम करें। यहां साधना में वीरता की चर्चा है। अर्थात् साधना में कायरता की उपेक्षा होनी चाहिये।

इस सम्बन्ध में उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें अध्ययन की गाथा स्मरणीय है, जिसमें कहा गया है कि एक (मन या आत्मा) को जीत लेने पर पांच (इन्द्रियों) को जीत लिया जाता है और पांच को जीत लेने पर दस (1 मन + 5 इन्द्रियाँ + 4 कषाय) को जीतना संभव है। यह साधना का एक क्रम है। दूसरी ओर नौवें अध्ययन में कहा गया है कि पहले अपनी पाँच इन्द्रियों को जीते, फिर चार कषायों को और इस तरह अपनी आत्मा को जीते। यह साधक की क्षमता पर निर्भर है कि वह पहले मन को विजित करे या पहले पांच इन्द्रियों को।

(14) **कम्मुणा सफलं दट्ठुं ततो णिज्जाति वेदवी** – कर्म अपना फल अवश्य देते हैं, यह देखकर ज्ञानी पुरुष (वेदविद्) उनसे अवश्य निवृत्त हो जाते हैं। **कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि।** -कृतकर्म फल कैसे देते हैं, यह तय नहीं है। उनमें उद्वर्तन, अपवर्तन, संक्रमण आदि हो सकता है; पर प्रदेशोदय से तो कर्म भोगने ही पड़ते हैं।

(15) **यावंति केआवंति लोगंसि अणारंभजीवी एतेसु चेव अणारंभजीवी**– इस लोक में जितने भी अनारंभजीवी हैं, वे गृहस्थों के बीच रहकर भी अनारंभजीवी है। यहाँ

जीवन के संचालन में सम्यक्त्व और यतना की महिमा बताई गई है। जो साधक यतना का पालन करते हुए जीता है, वह गृहस्थों के बीच रहकर भी हिंसा से विरत रहता है।

(16)**उवेहमाणे पत्तेयं सातं वण्णादेसी णारभे कंचणं सव्वलोए**– प्रत्येक प्राणी का सुख अपना-अपना होता है। अतः किसी की हिंसा न करे। आत्मा और अहिंसा की चर्चा आचारांग का मुख्य विषय है। इस सूत्र में पुनः किसी भी जीव की हिंसा नहीं करने की प्रेरणा दी गई है।

(17)**नियागट्ठी वीरे आगमेण सदा परक्कमेज्जासि**– मोक्षार्थी मुनि आगम के अनुसार सदा संयम में पराक्रम करे। संयम की राह में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन जो आत्म-सुख और मोक्ष को समझ लेता है, उसे संयम में पराक्रम करना चाहिये।

(18)**आवट्टमेयं तु पेहाए एत्थ विरमेज्ज वेदवी**– विषय-कषाय रूप भाव आवर्त का निरीक्षण करके ज्ञानी पुरुष उससे विरत हो जाए। ऐसा साधक अकर्मा होकर लोक को प्रत्यक्ष जानता है। इस सूत्र में भी साधक को विषय-कषाय रूप भाव-आवर्त से बाहर निकलने की प्रेरणा दी गई है। जो साधक ऐसा करता है, वह अकर्मा होकर लोक को प्रत्यक्ष देखने वाला बन जाता है। आत्महित का अन्तिम उपाय संथारा है। परीषह सहने में असमर्थ हो तो धर्मरक्षा के लिए इच्छामरण श्रेयस्कर है। यह आपवादिक स्थिति है। उत्सर्ग मार्ग तो संथारा ही है। इस सूत्र में संलेखना-संथारा करके मरण को सुमरण बनाने की प्रेरणा दी गई है। कभी अचानक कोई उपसर्ग आ जाए तो शरीर का मोह छोड़कर भी धर्म की रक्षा की जानी चाहिये। लेकिन कषाय के वश होकर आत्म-हत्या से जन्म-जन्मान्तर की साधना को नष्ट नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार आचारांग में इस जीवन में आत्म-सुख तथा इस जीवन के पश्चात् भी शाश्वत सुख को प्राप्त करने के लिए साधक को दिशा-निर्देश किया गया है। आचारांग और अन्य आगमों के स्वाध्याय का घर-घर में वातावरण बनना चाहिये। ऐसा करने से हम हमारे पूर्वाचार्यों के सपनों को मूर्त रूप दे सकेंगे।

पाठकों से निवेदन

जिनवाणी के जिज्ञासु पाठकों का हम सादर स्वागत करते हैं। आप जिनवाणी का एकाग्रता से स्वाध्याय करते हैं तथा समय-समय पर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रेषित करते रहते हैं। स्थानाभाव के कारण हम कई बार आपकी अच्छी सकारात्मक प्रतिक्रियाओं अथवा अभिमत को भी स्थान नहीं दे पाते हैं, किन्तु आपकी प्रतिक्रियाओं से हमारी दृष्टि बनती है तथा मनोबल को प्रोत्साहन मिलता है। अतः आप अपनी प्रतिक्रियाओं अथवा अभिमत से अवश्य अवगत कराते रहें। उनके प्रकाशन का भी यथासम्भव हमारा प्रयास होगा।-**सम्पादक**

बाल-स्तम्भ

आगम-बोध

डॉ. श्वेता जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 जुलाई 2013 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

जिनांश और विपुल दोनों गहरे मित्र थे। वे दोनों नित्य सामायिक करते थे। ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में दोनों अपने-अपने ननिहाल गये। जिनांश अपने ननिहाल सिरोही गया, वहाँ उसने खूब मौज-मस्ती की। एक दिन वह अपने मामाजी के साथ मुनि-भगवन्तों के दर्शनार्थ स्थानक गया। वहाँ विराजित मुनि श्री ने उसके मामाजी के पूछने पर जैन धर्म के आगम ग्रन्थों के बारे में बताया। जिनांश पास में बैठा सुन रहा था, उसे वे बातें बहुत रुचिकर लगीं। छुट्टियाँ बीतने के बाद वह अपने घर लौटा। विपुल उसकी राह देख रहा था। शाम होते ही दोनों उद्यान में मिले, वे दोनों खेलना चाहते थे, किन्तु अभी तक उनके दूसरे मित्र छुट्टियाँ बिताकर नहीं लौटे थे। दोनों अपने अनुभवों को एक-दूसरे को बताने लगे। जिनांश ने मुनि भगवन्त से मामाजी की जो चर्चा हुई उसे सुनाते हुए कहा-

मामाजी- मुनि श्री! आगम क्या है, उसके बारे में मुझे बताएँ।

मुनि श्री- जैन धर्म के प्रमुख ग्रन्थ आगम कहलाते हैं। जिनमें तीर्थंकरों, गणधरों एवं आचार्यों की अनुभूत वाणी सुरक्षित है। इन आगमों का जैन परम्परा में वही स्थान है जो वैदिक परम्परा में 'वेदों' का, बौद्ध परम्परा में 'त्रिपिटक' का, पारसी धर्म में 'अवेस्ता' का, ईसाई धर्म में 'बाईबिल' का, इस्लाम धर्म में 'कुरान' का तथा सिक्ख धर्म में 'गुरुग्रंथ' का है।

मामाजी- आगम किसे कहते हैं?

मुनि श्री- जिन धर्म-ग्रन्थों से पदार्थों का यथार्थ ज्ञान हो वे 'आगम' हैं अथवा राग-द्वेष

को जीत लेने वाले 'जिन', तीर्थंकर और सर्वज्ञ के उपदेश या वाणी 'आगम' है।

मामाजी– आगम को लिपिबद्ध किसने किया?

मुनि श्री– तीर्थंकर भगवान ने केवल अर्थ रूप (भाव रूप) ही उपदेश को कहा है और गणधरों ने उसे सूत्रबद्ध किया। गणधर द्वारा ग्रथित सूत्र द्वादशांगी कहलाते हैं।

मामाजी– द्वादशांगी में कौन-कौनसे ग्रन्थ आते हैं?

मुनि श्री– द्वादशांगी को अंगप्रविष्ट आगम साहित्य भी कहा जाता है, वे इस प्रकार हैं- 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्थानांग, 4. समवायांग, 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती सूत्र), 6. ज्ञाताधर्मकथा, 7. उपासकदशा, 8. अन्तकृद्दशा, 9. अनुत्तरौपपातिकदशा, 10. प्रश्नव्याकरण, 11. विपाक और 12. दृष्टिवाद।

मामाजी– भगवन्! आज मुझे आप 'आचारांग सूत्र' के बारे में बताएँ।

मुनि श्री– अंग साहित्य में आचारांग का सर्वप्रथम स्थान है। अतः यह प्रथम अंग आगम कहलाता है। चतुर्विध संघ-व्यवस्था में सर्वप्रथम आचार की व्यवस्था आवश्यक है, अतः आचार की बात सबसे पहले कही गई। श्रमण-जीवन की साधना का मार्मिक विवेचन इसमें किया गया है।

मामाजी– श्रमण-जीवन की साधना की कुछ विशेषताएँ बताइये।

मुनि श्री– श्रमण षट्कायिक जीवों की हिंसा से विरत रहता है। पृथ्वीकाय, अप्काय (जल), तेजस्काय (अग्नि), वायुकाय, वनस्पति काय और त्रसकाय- ये षट्कायिक जीव हैं। इनकी हिंसा से राग-द्वेष की ग्रन्थि बनती है, मोह बढ़ता है, मृत्यु और जन्म की परम्परा वृद्धिंगत होती है।

मामाजी– जीव हिंसा क्यों की जाती है?

मुनि श्री– जीव हिंसा के आठ हेतु (कारण) हैं- 1. जीवन जीने के लिए, 2. प्रशंसा व यश के लिए, 3. सम्मान की प्राप्ति के लिए, 4. पूजा आदि पाने के लिए, 5. जन्म के लिए- सन्तान आदि के जन्म पर अथवा स्वयं के जन्म के निमित्त से, 6. मरण- मृत्यु सम्बन्धी कारणों व प्रसंगों पर, 7. मुक्ति की लालसा से, 8. दुःख के प्रतिकार हेतु- रोग, आतंक, उपद्रव आदि मिटाने के लिए। इन हेतुओं से जीव-हिंसा करता हुआ मनुष्य अपना दुःख बढ़ाता है।

मामाजी– मनुष्य दुःखी क्यों होता है?

मुनि श्री– मनुष्य की विषयों के प्रति आसक्ति बढ़ती है तो दुःख बढ़ता है। प्रशंसा के शब्द,

सुन्दर रूप, इत्र आदि की गन्ध, सुस्वादु भोजन और कोमल स्पर्श के प्रति आसक्ति होने से इनके विपरीत विषय प्राप्त होने पर मनुष्य दुःखी होता है।

मामाजी– आचारांग कितने अध्यायों में विभाजित है?

मुनि श्री– आचारांग सर्वप्रथम दो श्रुतस्कन्धों में विभाजित है। प्रथम श्रुतस्कन्ध नौ अध्ययनों में और नौ अध्ययन पुनः उद्देशकों में बटे हुए हैं। इसी प्रकार द्वितीय श्रुतस्कन्ध में सोलह अध्याय हैं, वे भी पुनः उद्देशकों में विभाजित हैं।

मामाजी– आचारांग की शैली कैसी है?

मुनि श्री– इसमें गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण है।

मामाजी– यह किस भाषा में रचा गया है?

मुनि श्री– अर्धमागधी प्राकृत भाषा में।

मामाजी– आचारांग में और क्या है?

मुनि श्री– आचारांग में श्रमण का आचार तो वर्णित है ही, साथ में उस आचार के उदाहरण के रूप में भगवान महावीर की साधना का वर्णन किया गया है। प्रभु महावीर ने निरन्तर ध्यान साधना के द्वारा अपने भीतर के कषाय-क्रोध, मान, माया, लोभ और राग-द्वेष को जीत लिया था। वे पूर्ण रूप से क्रोध-मान-माया-लोभ से रहित होकर जिन हो गए थे।

मामाजी– भगवन्! आचारांग में तो गूढ बातें होंगी, उनको कैसे समझा जाता होगा?

मुनि श्री– आचारांग के गम्भीर रहस्य को स्पष्ट करने के लिए समय-समय पर व्याख्या साहित्य का निर्माण हुआ, जैसे- निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका आदि। इन व्याख्या साहित्य से आप सूत्र का हार्द समझ सकते हैं।

मामाजी– आचारांग को पढ़ने से क्या लाभ है?

मुनि श्री– आचारांग में प्रभु महावीर के अनुभव युक्त वचन हैं। इस आगम को पढ़ने से दुःख सहने का सामर्थ्य जगता है, सजगता की जीवन में आवश्यकता महसूस होती है, पाप-कर्मों में रुचि कम होती है और ध्यान-साधना के प्रति आकर्षण बढ़ता है।

विपुल इन सब बातों को सुनकर आह्लादित हो गया। वह जिनांश को कहने लगा कि तुमने तो बहुत नई-नई बातें सीखीं। कभी ऐसा अवसर आए तो मुझे साथ ले जाना। दोनों ही खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल दिए।

प्रश्नः-

1. गहरी मित्रता से अभिप्राय समझाइये।
2. मिलान करेंः-

धर्म	**ग्रन्थ**
वैदिक धर्म	आगम
पारसी धर्म	त्रिपिटक
जैन धर्म	बाईबिल
ईसाई धर्म	अवेस्ता
इस्लाम धर्म	गुरुग्रन्थ
बौद्ध धर्म	कुरान
सिक्ख धर्म	वेद

3. जिन किसे कहते हैं?
4. द्वादशांगी किसे कहते हैं? नाम बताइये।
5. प्रथम अंग को आचारांग नाम क्यों दिया गया?
6. महावीर ने कैसी साधना की और उसका क्या परिणाम निकला?
7. मानव दुःखी क्यों होता है?
8. क्या आप आचारांग पढ़ना चाहेंगे? कारण सहित उत्तर दीजिये।

- समता कुंज, 12/7 ए, जालमविलास स्किम, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2013] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'किशोर मन की जिज्ञासाएँ (3)' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 25 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	**नाम**	**अंक**
प्रथम पुरस्कार-500/-	**पायल मेहता-ब्यावर (राज.)**	**23**
द्वितीय पुरस्कार-300/-	**लक्की कांकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)**	**20.5**
तृतीय पुरस्कार- 200/-	**अर्पित जैन-जोधपुर(राज.)**	**20**
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	**दीपेश जैन-जयपुर (राज.)**	**19**
	निशा जैन-खेरली-अलवर (राज.)	**18**
	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	**18**
	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़ (राज.)	**17.5**
	छवि जैन-जयपुर (राज.)	**17**

रात्रि भोजन-त्याग क्यों?

1. आरोग्य, नीरोगता व स्वस्थता के लिए।
2. जीवन को संयमित व नियमित बनाने के लिए।
3. मनोबल व आत्मबल विकसाने के लिए।
4. रोगों से मुक्ति के लिए।
5. जीव हिंसा से बचने के लिए।
6. जीवों के अभयदाता बनने के लिए।
7. सहज ही वर्ष में 6 माह की तपस्या के लाभ के लिए।
8. पारिवारिक संस्कार के लिए।
9. पारिवारिक संतुलन व समाधि के लिए।
10. धर्मसहायिका/गृहिणी को धर्मसाधना में सहयोगी बनने के लिए।
11. भोजन-पाचन में पर्याप्त समय पाने के लिए।
12. 12 वें अतिथि-संविभाग व्रत पालन के लिए।
13. रात्रि भोजों के अपव्यय से बचने के लिए।
14. जैनत्व की पहिचान को कायम रखने के लिए।
15. अपनी गौरव गरिमा को बढ़ाने के लिए।
16. दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी बनने के लिए।
17. कर्मबन्ध से बचने के लिए।
18. संघ-समुन्नयन के लिए।
19. भव-भ्रमण को घटाने के लिए।
20. वैचारिक पवित्रता के लिए।
21. सुसंस्कारित बनने के लिए।

-निवेदक:- रात्रि भोजन-त्याग-महाभियान समिति, सवाईमाधोपुर

सामूहिक रात्रि-भोजन-त्याग अभियान

पूज्य आचार्य हीरा की प्रेरणा का प्रभाव इन्दौर तक

जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से पोरवाल समाज में सामूहिक रात्रिभोज-त्याग का अभियान निरन्तर गतिशील है। मई माह में आयोजित अनेक विवाह-समारोहों में रात्रिभोज पूर्णतः वर्जित रहा। महावीर नगर मण्डी में 16 मई को इन्दौर के श्री बाबूलाल जी, श्री जिनेश्वर जी, श्री महेश जी आदि पदाधिकारी पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पधारे। पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रेरणा कर कहा कि सवाईमाधोपुर में सामूहिक भोज में रात्रिभोजन-त्याग का सामूहिक रूप से पालन हो रहा है। आप भी 26 मई को इन्दौर में आयोज्य सामूहिक विवाह सम्मेलन में भोजन रात्रि में नहीं हो, ऐसा पूर्ण प्रयत्न करें। पूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा को ध्यान में रखकर पदाधिकारियों द्वारा इन्दौर सम्मेलन में ऐसा प्रयास किया गया। परिणाम स्वरूप इन्दौर में 80 प्रतिशत लोगों ने सूर्यास्त के पूर्व ही भोजन कर पोरवाल समाज की गरिमा इन्दौर में भी पुनः स्थापित की।

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (38)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह ग्यारवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जुलाई 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.621 से 701 तक से प्रश्न)

मुझे मेरा नाम दोः-

1. मैं हाथियों के लिए प्रसिद्ध था।
2. मैं नाडोल निवासी श्रेष्ठी जिनदत्त की धर्मपत्नी हूँ।
3. मेरे यहाँ राजा कृष्ण ने भव्य शिवमन्दिर का निर्माण करवाया।
4. मुझे तीन पूर्वों के ज्ञान का धारक तथा शाखा के मुकुट तुल्य मानते हैं?
5. मैंने भारत की रक्षा करने का दृढ़ संकल्प किया।

'क' अक्षर से रिक्त स्थान की पूर्ति करेंः-

6. ....यापनीयों का सुदृढ़ गढ़ अथवा केन्द्र स्थल था।
7. अमोघवर्ष के पिता.........आदि राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया।
8. बोधामुनि मरघटों, वनों एवं गिरि.....में घोर तपश्चरण करने लगे।
9. अपनी असाध्य व्याधि की.........संक्षेप में निवेदित की।
10. धारानगरी के घर-घर से धन्य-धन्य के ....गूंज उठे।

संख्या में उत्तर दीजिए:-

11. जिनसेन ने ....श्लोक प्रमाण टीका की रचना की थी।
12. ओसवालों की ....जातियाँ सांडेरा गच्छ की उपासक जातियाँ थीं।
13. खिमऋषिजी ....प्रकार के विचित्र अभिग्रह किये।
14. कोन्नूर का शिलालेख सं. .... का है।
15. गुरु-शिष्य ने मिलकर ....श्लोक प्रमाण ग्रन्थों की रचना की।

इन शब्दों के अपर नाम बताइये:-

16. आचार्य शीलांक
17. बलिभद्र
18. शाकटायन
19. बोधाऋषि
20. अमोघवर्ष

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये:-

21. मिहिर भोज भी परम.........जैन राजा था।
22. आर्य .... महान् प्रभावक और विद्वान् थे।
23. अनमोल कृतियों ने .... की कीर्ति और नाम को अमर कर दिया।
24. अमोघवर्ष की जिनशासन के प्रति .... अटूट एवं प्रगाढ़ थी।
25. बलिभद्रसूरि ने अल्लट की .... महाराणी को असाध्य रोग से मुक्त किया।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (36) का परिणाम

जिनवाणी अप्रेल, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 218 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- संगीता रांका-फरीदाबाद (हरियाणा)

द्वितीय पुरस्कार- सम्पतराज खेरदा-अजमेर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- सागरमल नाहर-बेंगू (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार (5)- दीपचन्द मिस्त्रीमल बोथरा-पाचोरा-जलगांव (महा.), निर्मला विजय जी गुंदेचा-इचलकरंजी (महा.), सुशीला ई. रांका-जलगांव (महा.), सरोज पारसमल जी रूणवाल-धूले (महा.), पदमचन्द जैन-नदबई-भरतपुर (राज.)

सूचना:- प्रतिभागियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने अंक जानने के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा (09829019396) अथवा महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता (09772793625) से सम्पर्क करें।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

(1) Equanimity (2) The Samayika Sutra- Upadhyaya Amar Muni, ***Publisher-*** Veerayatan, Rajgir-803116, Dist. Nalanda (Bihar) and Sugal & Damani Group, copies can also be had from Mumbai, Chennai, Delhi, Kolkata and Pune. ***Pages-*** (1) 14+114, (2) 13+127, ***Price-*** Rs. 200 each book, ***First Edition*** : September 2012

Upādhyāya Amar Muni was a good exponent of Jain texts and tenets. His Hindi book 'Sāmāyika Sūtra' is a famous work, which contains discourses and explainations on various aspects of Sāmāyika. Pratibha Jain, Chennai has translated the book in English, which has been brought out by the efforts of N. Sugalchand Jain, Chennai through Veerayatan in two volumes. The volume first has been entitled as "Equanimity" and the volume second as "The Samayika Sutra". Equanimity has 27 discourses on topics like - What is this universe? Consciousness, Sāmāyika- an analysis,The eighteen sins etc. The Sāmāyika Sūtra contains original text of Sāmāyika sūtra, glossory, meaning of every word and analysis of that.

Shri Sugalchand Jain and publishers are really thankful to publish English translation of the popular book 'samayika sutra'. Translation is quite competent to convey the message truly to the readers.

लोकाकाश : एक वैज्ञानिक अनुशीलन- डॉ. जीवराज जैन, ***प्रकाशक-*** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान), फोन-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753 ***पृष्ठ-*** 12+120, ***मूल्य-***35 रुपये, सन् 2013

जैन आगमों एवं उत्तरवर्ती जैन ग्रन्थों में लोक के स्वरूप का जो निरूपण उपलब्ध होता है, वह आधुनिक वैज्ञानिक युग में अध्येताओं को आकर्षित नहीं कर पा रहा है, क्योंकि आगम में लोक अथवा खगोल-भूगोल के सम्बन्ध में जो वर्णन प्राप्त होता है वह विज्ञान से मेल

नहीं खाता है। डॉ. जीवराज जैन ने उपर्युक्त पुस्तक में इस समस्या का रोचक एवं तार्किक समाधान निकाला है, जिससे वैज्ञानिक एवं आगमिक दोनों अवधारणाएँ अबाधित बनी रहती हैं। इस समाधान की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह उन सभी पाठकों एवं विद्वानों द्वारा पठनीय है जो आगम पर आस्था रखते हैं। डॉ. जैन का मन्तव्य है कि लोक के सम्बन्ध में जो चित्र जैन आगमों तथा उत्तरकालीन साहित्य में उपलब्ध होते हैं वे मनीषी आचार्यों की विलक्षण मेधा के प्रतीक हैं। इन चित्रों में कहीं कोई त्रुटि नहीं है। इन चित्रों के निर्माण का क्या आधार रहा है, उसकी कूट भाषा (Code Language) को डॉ. जीवराज जैन ने खोजने का प्रयत्न किया है। उनके इस अन्वेषण से जैन विचारकों को एक नई दिशा मिल सकती है। डॉ. जैन का चिन्तन है कि ब्रह्माण्ड के समस्त पुद्गल पदार्थों को उनकी सात अवस्थाओं में वर्गीकृत कर एक प्रदर्शन मंजूषा बनायी जाए तो उससे जैन परम्परा में दर्शित लोक के स्वरूप का चित्र बन जाता है। डॉ. जैन ने पुस्तक में अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक को भी स्पष्ट किया है तथा तार्किक मस्तिष्क में उठने वाली लोक सम्बन्धी शंकाओं का समुचित समाधान करने का प्रयत्न किया है।

नैतिकता का विकास- प्रो. चाँदमल कर्णावट एवं डॉ. चन्दनबाला मारू ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान), फोन-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***- 10+118, ***मूल्य***-20 रुपये, सन् 2013

आज जीवन में नैतिकता की महती आवश्यकता है। बाल्यकाल से ही नैतिकता के संस्कारों को सिंचित किया जाना चाहिए। शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिकता का समावेश हो तथा युवापीढ़ी में भी उसका निरन्तर संवर्धन आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक के 30 अध्यायों में नैतिकता की अवधारणा, नैतिक शिक्षा की भूमिका, ईमानदारी, संयम, करुणा, लोभ-विजय, धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिकता, मूल्यों का विकास आदि की प्रेरणाप्रद चर्चा की गई है।

नवकार महामन्त्र- ***प्राप्ति स्थान***- नवकार टेक्सटाइल्स, न्यू पावर हाउस के पीछे, 43, हैवी इण्टस्ट्रियल एरिया, जोधपुर-342003, फोनः 0291-2740098, मो. 098290-20046, ***पृष्ठ***-14+109, ***मूल्य***- स्वाध्याय व सदुपयोग।

श्री प्रकाश संचेती, जोधपुर द्वारा नवकार मंत्र पर बृहदाकार में सन् 2009 में एक पुस्तक प्रकाशित की गई थी, जिसका द्वितीय संस्करण 2013 में प्रकाशित किया गया है। पुस्तक में नवकार मंत्र के वैशिष्ट्य के साथ विभिन्न सम्बद्ध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। प्रयास स्तुत्य है।

शिविर-रिपोर्ट

ग्रीष्मकालीन शिविर बने ज्ञानाराधन के उत्तम केन्द्र

श्री जितेन्द्र कुमार डागा

आचार्य हस्ती अध्यात्म-चेतना वर्ष सन् 2010 से ग्रीष्मकाल में बृहद स्तर पर धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष भी यह आयोजन 18 मई से 2 जून, 2013 तक देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में किया गया। गुजरात में इन शिविरों का आयोजन 28 अप्रेल से 5 मई, 2013 तक रहा। जयपुर एवं जोधपुर में 26 मई से 9 जून, 2013 तक शिविर आयोजित किए। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा ने अपनी सक्षम टीम के साथ लगभग 70 क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन किया है, जिसका आँखों देखा हाल उन्हीं की कलम से यहाँ प्रस्तुत है।-सम्पादक

प्रभु महावीर की आदेय अनुपमवाणी भगवती सूत्र (शतक 3 उद्देशक 1) में वर्णन आता है कि चार ज्ञान, चौदह पूर्वों के ज्ञाता गौतम गणधर भगवान महावीर के चरणों में जिज्ञासा रखते हैं कि हे भगवन्! क्या देवेन्द्र देवराज सनत्कुमार (तीसरे देवलोक का अधिपति) भवी यावत् चरम है ? प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रभु फरमाते हैं कि हे गौतम! वह भवी यावत् चरम है। क्योंकि वह बहुत से श्रमण, बहुत-सी श्रमणियों, बहुत से श्रावक, बहुत-सी श्राविकाओं का हितकामी, सुखकामी, पथ्यकामी (आहार-विहार), अनुकम्पिक एवं नि:श्रेयसिक (कल्याण व मोक्ष का इच्छुक) है।

श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका संघ के चार अंग हैं। ऐसे संघ के हित, सुख, पथ्य, कल्याण की सतत भावना भाने वाले एवं साथ ही साथ संघ के प्रत्येक सदस्य को मोक्ष मार्ग पर आरूढ कर उनकी प्रगति को सुगम बनाकर संसार सागर को सीमित करने वाले, ऐसे आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय भगवन्त की दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर इस वर्ष भारत वर्ष के विविध स्थलों पर आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. की जन्म शताब्दी से प्रारम्भ ग्रीष्मकालीन अवकाश में लग रहे शिविरों हेतु जब निवेदन किया तो भक्ति निर्झर श्रावक-श्राविकाओं व नन्हें-नन्हें भविष्य के कर्णधारों ने बड़े उत्साह उमंग के साथ इनमें भाग लेकर गुरुद्वय के चरणों में श्रद्धा भाव अर्पित किये।

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में शिविरों का प्रारम्भ गुजरात की उर्वर भूमि से विशेष आगाज के साथ हुआ। सूरत में 400 की, अहमदाबाद में 200 की गुणवत्ता के आधार पर शिविरार्थियों की विराट् संख्या प्रेरणास्पद थी। सामायिक के परिधान में बैठी वह धवल परिषदा

जिनशासन के गौरवमय अतीत एवं उभरते वर्तमान को स्पष्ट परिलक्षित कर रही थी। उद्‌घाटन समारोह में गुजरात के क्षेत्रीय प्रधान श्रीमान् कन्हैयालालजी हिरण एवं अहमदाबाद पालड़ी संघ के अध्यक्ष श्री पदमचन्दजी कोठारी पधारे थे। इस शिविर हेतु भागीरथी प्रयास किया श्री राजीवजी नाहर ने। एक माह तक सभी व्यावसायिक कार्यों को गौणकर इस धार्मिक महायात्रा में अपना पूरा समय दिया। अनुभवियों, युवकों, श्रावक-श्राविकाओं सभी को समन्वित कर एक अद्‌भुत श्रद्धापूर्ण माहौल तैयार किया। कभी संतों की शरण में तो कभी शिविर की तैयारी में जुटे रहे। परिणामस्वरूप परम पूज्य श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं महासती श्री वसुजी महाराज का अलौकिक उद्‌बोधन शिविरार्थियों को मिला। संतप्रवर एवं महासतीजी म.सा. के पावन सान्निध्य से वहाँ समवसरण का माहौल था। जब दीक्षा अर्द्धशती वर्ष हेतु महाराज साहब ने 50 एकाशन की प्रेरणा दी तो 100 शिविरार्थियों ने सामूहिक प्रत्याख्यान किये एवं साथ ही 17-18 शिविरार्थियों ने उस दिन उपवास किये। अनेक सामूहिक पच्चक्खाण हुए। श्री लाभचन्द जी नाहर परिवार, सुनील जी नाहर, रोहित जी बलई, सुनील जी गाँधी आदि सभी का सहयोग सराहनीय था। अध्ययन की व्यवस्था सुन्दर थी। श्री दिलीपजी जैन एवं श्री राकेशजी जैन का अपेक्षित सहयोग मिला।

अहमदाबाद में श्री महावीरचंद जी मेहता आदि युवकों एवं श्री पदमचन्द जी कोठारी आदि अनुभवियों के अद्‌भुत सामंजस्य से एक अनुकरणीय शिविर लगा। अनुशासन एवं सिद्धान्तों के लिए प्रसिद्ध कोठारी जी के नेतृत्व में शिविरार्थियों का एक मिनिट भी जाया नहीं गया। पहले दिन सभी शिविरार्थी 15 मिनिट में अपनी-अपनी कक्षा में अध्ययन हेतु पहुँच चुके थे। अध्ययन के साथ वर्तमान कालिक कई विषयों पर व्याख्याताओं ने आकर बालकों को व्यावहारिक शिक्षण एवं संस्कार दिये। हम कितने शाकाहारी हैं, माता-पिता के उपकार इत्यादि पर सटीक विवेचन हुए। करीब 220 छात्र-छात्राओं ने इस शिविर में भाग लिया। **नवसारी** में शिविर सम्भालने वालों में अद्‌भुत सामंजस्य था। सभी का परस्पर प्रेम व सौहार्द अनुकरणीय था। करीब 100 शिविरार्थियों ने जिस उत्साह से ज्ञान-ध्यान किया उससे वहाँ विराजित महासती जी म.सा. के मुख से सहज ही निकला कि शिविर तो अनेक किये हैं, पर जो अध्ययन इस शिविर में हुआ है वह पहले कभी नहीं हुआ। यह सब दोनों महापुरुषों उपाध्याय प्रवर-आचार्य प्रवर की साधना एवं संयम का अतिशय है। उनके शब्दों से भगवन्तों के प्रति अहोभाव-श्रद्धाभाव टपक रहा था। श्री ओमप्रकाश जी जैन, छाजेड़ जी इत्यादि सभी शिविर की सफलता हेतु पूर्ण प्रयासरत थे। **वापी** में श्री गणपतलाल जी एवं श्रीमती वेदमूथाजी इत्यादि के प्रयासों से 50

की संख्या रही। वहाँ जस्सू भाई जैसे अद्‌भुत श्रावक के दर्शन हुए। सादा जीवन उच्च-विचार, पूर्ण स्थानक को दान देने वाले, नाम की दौड़ से अतिदूर एक साधारण वेशभूषा में उन्होंने जब कुछ कहना शुरू किया तो सभी एकाग्रचित्त हो सुनने लगे। उन्होंने एक अनमोल सीख दी कि शिविरों में जो अध्ययन शिविरार्थी कर रहे हैं वह माथे का परिग्रह ही न बने, जीवन में उतरे, इस ओर विशेष प्रयास की आवश्यकता है। उन्होंने कुछ शास्त्रीय प्रश्न पूछकर हमारी परीक्षा भी ली एवं उत्साहवर्द्धन किया। **उमरगाँव** में श्री प्रकाशचन्द जी मेहता आदि महानुभाव सभी शिविरार्थियों के सुचारु अध्ययन हेतु प्रयासरत थे। बच्चों ने बड़े मन के साथ बात सुनी एवं उन होनहार बालकों में सुन्दर भविष्य की आभा परिलक्षित हो रही थी। **बड़ौदा** में 30 की संख्या थी। श्री दिलखुशराज जी मेहता का प्रयास सराहनीय था। श्री देवेन्द्रजी सेठ गुजरात की इस यात्रा में साथ थे।

शादियों की शहनाइयों के बीच 18 मई 2013 का दिन नजदीक आ रहा था तो मन में एक आशंका थी कि कहीं शहनाइयों की गूंज शिविरार्थियों की किलकारियों पर भारी तो नहीं पड़ जायेगी। भगवन्त के चरणों में दीक्षा के अवसर पर निवेदन किया कि भगवन्त मंडान तो बड़ा हो गया पर सफलता मात्र आपकी अनुपम कृपा से ही संभव है। महामनीषी ने पावन कृपा बरसाई, उसी का प्रतिफल रहा कि 18 मई, 2013 को स्थानकों में बच्चों का मधुर कलरव गूंज उठा। जिनशासन की बगियाँ महकने लगी। वो नन्हें-नन्हें पुष्प अपनी भावनाओं एवं अपने प्रबल पुरुषार्थ से एक अलौकिक दृश्य उपस्थित कर रहे थे।
फिर शुरु हुआ इन नौनिहाल एवं उनके भविष्य को संवारने वाले शिक्षक-संयोजकों के दर्शन का दौर।

सर्वप्रथम हम पल्लीवाल क्षेत्र गए। 45 डिग्री तापमान की भीषण गर्मी में भी वहाँ धर्म की फुलवारी में प्रवाहित सामायिक-स्वाध्याय की शीतल लहर को देखकर मन प्रसन्न हो उठा। **हिण्डौनसिटी** में मण्डी एवं वर्धमान नगर में क्रमशः श्री धर्मचन्द जी एवं श्री अशोक जी दोनों प्रिंसिपल रेंक के व्यक्तित्वों के नेतृत्व में अद्‌भुत अनुशासित शिविर लग रहे थे। जैनेतर बच्चे भी सामायिक की पाटियाँ बड़े शुद्ध तरीके से सुना रहे थे। वहाँ पर दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन के गद्य को तीन दिन में (अधिकांश) कण्ठस्थ करने वाली छात्राएँ भी थीं तो साथ में छोटे-छोटे सुकुमार बच्चे तीर्थंकर भगवन्त के नाम बड़ी श्रद्धा से बोल रहे थे। तीन दिन में प्रतिक्रमण की शुरुआती तीन-चार पाटी याद करने वाले कई छात्र-छात्राएँ थे। अध्ययन का माहौल बन चुका था अब तो गति उत्तरोत्तर बढ़ने वाली थी। **मण्डी रोड़** पर महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के विराजने से एक अद्‌भुत श्रद्धामय माहौल था। आत्मीयता के स्वर उस भवन के हर कण-कण में व्याप्त हो गए थे।

शिविरार्थी बड़े संयत एवं आत्मीयता प्रदान करने वाले थे। राजेशजी जैन, राकेशजी, सुमतजी, पूरणजी, कृष्णमोहनजी आदि सभी युवक-अनुभवी थे एवं समन्वय पूर्ण प्रयास कर रहे थे। मूलचन्दजी जी का सहयोग आधारभूत था। पूरे क्षेत्र में हिण्डौनसिटी के 300 छात्रों के अध्ययन, अनुशासन एवं प्रगति की गूंज थी। **गंगापुरसिटी** में पवनजी एवं पद्मजी जैन के अद्भुत संचालन एवं शिक्षा-निर्देश के बीच आए नये बालक-बालिकाएँ सीखने हेतु पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। क्षेत्रीय प्रधान शीतलजी जैन आदि पूर्ण प्रयास कर रहे थे। सिद्धान्तशाला के वर्तमान एवं पूर्व छात्र अध्ययन को गति देने हेतु पूरा प्रयास कर रहे थे। **महुआ** में रिटायर्ड प्रिंसिपल अशोकजी जैन के समानान्तर उसी काल में शिविरों के प्रतिस्पर्धात्मक शिविर बड़े धनबल के साथ लगाए गए। पर उनके द्वारा विगत वर्ष में दिये गए स्नेह एवं सम्भाल के कारण शिविरार्थी पिछले वर्ष की संख्या में अधिक मौजूद थे। पूर्ण पुरुषार्थ के साथ वे एवं अन्य प्राध्यापक स्तर के शिक्षक शिविरार्थियों के अध्यापन हेतु सन्नद्ध थे। यह मात्र महुआ की स्थिति नहीं थी। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. की जन्मशताब्दी से प्रारम्भ शिविरों में भगवन्त की अनुपम कृपा से शिविरार्थियों के संस्कार निर्माण हेतु हुए पुरुषार्थ से अन्य संघों में भी इस दिशा में आगे बढ़ने हेतु चेतना उभर कर आयी। अनेक स्थलों पर विभिन्न संघों के समानान्तर शिविर लगे, उससे हमें और प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि आखिर समाज एवं जिनशासन के कर्णधारों ने इस दिशा की ओर सोचना प्रारम्भ कर दिया है। चेतना अविरल बनी रहे, यही आशा है। **मण्डावर** के शिविरार्थी बड़े संयत, सुशील हैं। कार्यभार को सम्भाले श्री अशोकजी जी, वीर भ्राता संजयजी, वीरेन्द्रजी जैन, शिक्षिकाएँ अपने कर्तव्य का बखूबी निर्वहन कर रहे थे। सिद्धान्तशाला से आये हुए छात्र निरन्तर अध्ययन में सहयोग प्रदान कर रहे थे। **गंजखेरली** में एक अद्भुत बात देखने को मिली। वहाँ ग्रीष्मकालीन शिविरों के साथ निरन्तर चल रही पाठशाला एवं वहाँ की विलक्षण दो शिक्षिकाओं का यह अद्भुत प्रभाव था कि बच्चे धारावाहिक रूप से अर्थसहित पाठों को सुना रहे थे। प्रतिक्रमण के पाठों के शब्दार्थ की ऐसी अद्वितीय प्रस्तुति को देख कोई भी दाँतों तले अंगुली दबा सकता है। तीन दिन में लघुदण्डक के द्वारों को याद करने वाले भी वहाँ थे तो नन्हीं-नन्हीं बालिकाएँ ग्यारह गणधरों के नाम स्पष्ट एवं क्रमबद्ध सुना रही थीं। गंजखेरली के इस खिलते उपवन के पीछे भगवन्त की अनुपम कृपा के साथ वहाँ के शिक्षक संयोजक श्री सुरेशजी जैन, मुकेशजी, विपिनजी, धीरजजी आदि का विशेष प्रयास था। **नदबई** के शिविर का प्रशासन कर्मठ एवं वीर प्रभु के शासन के प्रति अनुराग रखने वाले समूह के हाथों में होने से शिविरार्थियों के समय का पूर्ण उपयोग हो रहा था। उदाहरणत: रसीदपुर में भाई किरणजी मेहता के साथ बीच

में रुक जाने की वजह से हमें पहुँचने में देरी हुई तो वहाँ के संयोजकों ने बड़े विवेक से प्रस्तुति-प्रतियोगिता की तैयारी शिविरार्थियों को करा दी। इस तरह पल-पल का सदुपयोग कर शिविरार्थियों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर रहे इन जिनधर्म के अग्रदूतों की जितनी सराहना की जाये कम है। शिविरार्थियों का अध्ययन सुचारु रूप से बढ़ रहा था। **भरतपुर वासन गेट** में शीतल स्वभावी धर्मेन्द्रजी, सुनीताजी-रविन्द्रजी आदि शिविर की कमान सम्भाले हुए थे। सचिव श्री अशोकजी जैन ने अपने विचारों से अवगत कराया। 70 की संख्या थी। **मौहल्ला गोपालगढ़, मलपुरा**-आगरा, **खोह** सभी स्थानों पर शिविर पूर्व की भाँति कुशल संयोजकों एवं शिक्षकों की वजह से निरन्तर अबाध संचालित हो रहे थे। **हरसाना** में शिक्षकों की थोड़ी कमी रही। सम्पूर्ण दौर में सुश्रावक श्री हरिश्चन्द्रजी डागा एवं श्री वीरेन्द्रजी जामड़ ने प्रतियोगिताओं की कार्यप्रणाली को स्पष्ट रखा एवं उनमें भाग लेने की प्रेरणा दी।

किशनगढ़-मदनगंज में श्री महेन्द्रसिंहजी जामड़ की विरासत को श्री राजेन्द्रजी महेन्द्रजी डांगी की छत्रछाया में नवयुवकों एवं श्राविकाओं की समन्वित टीम ने सम्भाला। स्थानक प्रवेश के साथ अनुशासित रूप से जो अध्ययन व्यवस्था मिली वह किसी के भी मन को आह्लादित कर सकती थी। प्रवेशिका के बालकों से लेकर बड़े छात्र-छात्राएँ सभी अध्ययनरत थे। संयोजक-कार्यकर्ताओं के अद्भुत पुरुषार्थ का परिणाम था कि पिछले वर्ष से 50% अधिक छात्र थे-अध्ययन सुनियोजित था। चातुर्मास पूर्व की यह आध्यात्मिक तैयारी एवं संस्कारों का बीजारोपण आने वाले सावन एवं धर्मवर्षा के शुभ संकेत दे रहे थे। शिविर की ऐसी अप्रत्याशित सफलता से प्रेरित युवा सदस्य मनोजजी मेहता, प्रमोदजी मोदी कर्मठ कार्यकर्ता संदीपजी जामड आदि सभी में साप्ताहिक सामायिक के राष्ट्रीय कार्यक्रम को लेने एवं क्रियान्वित करने का अद्भुत जोश था। करीब 120 की संख्या थी। **किशनगढ़-शहर** में धवल परिधान के साथ पूँजनी हाथ में लिये मुनि सम दिख रहे नन्हें बालकों को अध्ययनशील देखा तो चित्र तो नहीं लिया, पर वह दृश्य साथ जाने वाले सभी के हृदय में अंकित हो गया। प्रवेशिका के शिविरार्थियों ने विधिवत् एक साथ जब तिक्खुत्तो से तीन बार पूर्व दिशा की ओर वन्दन किया तो शिक्षकों के द्वारा रोपित विनय के इन संस्कारों को देख प्रमुदित होना स्वाभाविक था। अन्य कक्षाओं में 67 बोल, 25 बोल पर शिविरार्थियों ने अल्प दिनों में ही अच्छा अधिकार कर लिया था। **अजमेर** के वैशाली नगर में शिविर महासती श्री संतोषकँवरजी म.सा. की देन है। उनकी कृपा से तैयार वहाँ के श्रावक-श्राविका जिस उत्साह, उमंग एवं समर्पण के साथ शिविर करते हैं वह प्रेरणीय है। एक-एक बालक पर शिक्षिकाएँ ध्यान देती हैं। उसका परिणाम यह रहा कि कोई भी प्रश्न

पूछो, सभी शिविरार्थी उत्तर देने हेतु तैयार थे। सामायिक के शब्द, अर्थ, 67 बोल, प्रतिक्रमण के पाठ शिविरार्थी सुना रहे थे। वहाँ की शिक्षिकाएँ वात्सल्य से शिविरार्थियों को अध्ययन करा रही थीं। श्री रमेशजी सिंघी, श्रीमती मंजूजी कोठारी, प्रेमलताजी पीपाड़ा सभी अच्छी मेहनत कर रहे थे। **दूदू** में मेहता परिवार में शादी का प्रसंग होने से शिविरार्थियों की संख्या 20% से कम थी। पर जो थी वह गुणवत्ता वाली थी। तीन दिन के अध्ययन में उपयोग के थोकड़े का तलस्पर्शी अध्ययन छात्राओं ने किया तो सामायिक के 32 दोष कई शिविरार्थियों ने सीखे। अध्ययन गति पकड़ रहा था। **ब्यावर** के युवक कार्यकारिणी, श्रावक संघ एवं श्राविका मण्डल के अद्भुत समन्वय से एक अपूर्व जोश था। 195 की संख्या में सम्प्रदायातीत माहौल में शिविरार्थी अध्ययन कर रहे थे। श्री भण्डारी परिवार, श्री सुराणा परिवार एवं संघ रत्न श्री मनीषजी मेहता का योगदान सराहनीय रहा।

चेन्नई संघ हेतु 'जिणवयणे अणुरत्ता' विशेषण सदैव संत-सतियों के मुख से सुना था। इस बार पुण्यशालिता ने जोर पकड़ा कि यह दृश्य जीवन्त देखने को मिला। युवाओं का एक अद्भुत संगठन है। वहाँ पर कार्याध्यक्ष श्री विक्रमजी बाघमार, क्षेत्रीय संयोजक श्री अशोकजी लोढ़ा, शाखा प्रमुख श्री भरमलजी कर्णावट आदि के समन्वित एकजुट प्रयासों का परिणाम था कि ऐसे क्षेत्रों में शिविरों की लहर पहुँची जहाँ प्यास थी, उत्कंठा थी। स्वाध्याय भवन में पूज्य आचार्य भगवन्त की महती कृपा से नौ वर्ष से साप्ताहिक शिविरों के परिणामस्वरूप एक मजबूत आधार बना है। श्री वीरेन्द्रजी कांकरिया, हिंगडजी, महेन्द्रजी बाघमार आदि के प्रयासों से यह स्थली सम्पूर्ण जिनशासन हेतु एक प्रेरणा का स्रोत है। त्याग, प्रत्याख्यान, संवर साधना करने वाले युवक, श्राविकाओं ने इस क्षेत्र को धार्मिक संस्कारों से सराबोर कर रखा है। प्रश्नों का जिस सहजता के साथ सभी शिविरार्थियों ने उत्तर दिये उससे लगा कि ज्ञान व क्रिया दोनों से युक्त यह क्षेत्र एवं यहाँ की 200 की गुणवत्ता वाली संख्या जिनशासन को एक सन्देश दे रही है कि जिनशासन निराबाध रूप से 18500 वर्ष और चलेगा। यह सभा हमारे स्वर्णिम इतिहास को दोहराते हुए उज्ज्वल वर्तमान, प्रगतिशील भविष्य की ओर इंगित कर रह थी। सभी क्षेत्र स्वाध्याय भवन जैसे बनें इस भावना को लिये कार्याध्यक्ष, क्षेत्रीय संयोजक एवं पूर्व युवक कार्यकारिणी के सदस्य ने भागीरथी प्रयास किया। **कल्लाडीपेट, विरगमबाकम, बडखली, वेलेचेरी, सेल्लूर** इत्यादि क्षेत्रों में भी जिनवाणी की यह शिविर-सरिता पहुँची। 67 बोल में सम्यक्त्व के लिंग तीन के अन्तर्गत कहा जाता है कि उसमें कम अध्ययन वाले व्यक्ति को पढ़ने की चाह रहती है, पढ़ने का अवसर मिलते ही वह हर्षित होता है। वैसा हर्ष यहाँ के शिविरार्थियों के मुखमण्डल पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। **कल्लाडीपेट** में श्री महेन्द्रजी कांकरिया की सुपुत्री

ने जिस स्पष्टता के साथ कर्मप्रकृति के थोकड़ों को सुनाया तो ऐसे लगा कि ऐसे होनहारों के होते हमें जिनशासन के भविष्य की कोई चिन्ता नहीं है। बस इनके लिए पुरुषार्थ की निरन्तरता की आवश्यकता है। **वडप्पली** में शिविरार्थियों के साथ श्राविकाएँ भी थोकड़े याद करने में काफी व्यस्त थीं, अत: शिक्षक वर्ग की थोड़ी ज्यादा संख्या की आवश्यकता प्रतीत हुई। **विरगंमबाकम** की श्राविकाओं एवं अध्यक्ष आदि के पुरुषार्थ का परिणाम था कि वहाँ शिविरार्थियों में अपूर्व उत्साह था, अनुशासन था। चेन्नई में शिविरार्थियों की संख्या लगभग 550 थी। मधुर व्याख्यानी महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा ने शिविर की प्रगति पर प्रमोद व्यक्त किया।

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. की असीम अनुकम्पा से धर्मगाँव बने **जलगाँव** क्षेत्र में गए तो यहाँ की श्राविकाओं एवं युवकों के अथक प्रयासों एवं शिविरार्थियों के अपूर्व उत्साह से हुई प्रस्तुति-प्रतियोगिता की सफल क्रियान्विति की गूंज सर्वत्र दिखाई दे रही थी। HKU हांगकांग यूनिवर्सिटी एवं वहाँ के विद्यालय स्तर पर भी Project work presentation पर बहुत जोर दिया जाता है। विषयों पर वहाँ के विद्यार्थियों को अथक प्रयत्न कर ऐसी जानकारी जुटाते देखा है, जिसे हमने सुना भी नहीं। बच्चों में ऐसी प्रतिभा एवं साधनों के उपयोग की क्षमता होती है। उसी से प्रेरित हो यह प्रतियोगिता रखी गई। कुछ रचनात्मक एवं सृजनात्मक विषयों को लेकर। जब यहाँ के शिविरार्थियों ने इस परिकल्पना को सच करके दिखाया तो सभी आश्चर्य चकित हो गए। शासन सेवा समिति के संयोजक आदरणीय श्री रतनलाल जी बाफणा जब पधारे तो मात्र 10-15 मिनिट हेतु ही रुकने का मन था, पर बच्चों ने लघु-नाटिकाओं, पोस्टर से जो भावों की अभिव्यक्ति की और साथ में अथक प्रयासों से बनी सीडी चली तो इस क्रमबद्ध शृंखला से ऐसा वातावरण बना कि सभी मन्त्रमुग्ध हो, शिविरार्थियों के अंतरंग से निकली भावनाओं के अनुमोदन हेतु रुके रहे। यह दृश्य, ये भावों की नवीन अभिव्यक्ति सभी के मानस पटल पर संस्कारों की अमिट रेखाएँ उभार रही थीं।

ऐसा मात्र जलगाँव में हुआ, ऐसा नहीं था। जलगाँव का वर्णन तो प्रतिनिधि के रूप में किया जा रहा है। सभी 70 क्षेत्रों में यह प्रभाव अंकित हो रहा था। गंजखेरली, नदबई, हिण्डौनसिटी इत्यादि क्षेत्रों में तो बाजार मुख्य स्थलों पर भी लघु नाटिकाओं, पोस्टर से प्रस्तुति दी गई। जिससे ऐसा माहौल बना कि स्थानक के बाहर से कोई भी गुजरता तो एक दृष्टि जरूर डालता-उत्सुकता से अन्दर आता, कैसे मुँहपत्ती बाँधे-क्यों बाँधे यह प्रश्न उभर रहे थे, अजैनों के मन:स्थल पर। सागर भवन जलगाँव में स्वयं बाफणा जी साथ पधारे तो सामायिक विषय पर शिविरार्थी कुम्भट ने स्पष्ट आवाज से सामायिक विषय पर जो

वक्तव्य रखा वह अद्भुत था। दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर रचित भजन छोटी सी बालिका के कोकिल कण्ठ से माहौल धर्ममय बना रहे थे। शिविरार्थियों ने अध्ययन में गति बढ़ाने हेतु कमर कस ली थी। जीवराज भवन में नए-नए बालकों को जिस तरीके से शिक्षकगण पाठों को सिखा रहे थे उसके परिणामस्वरूप मात्र नवकारमंत्र जानने वाले या वह भी नहीं जानने वाले छात्र लोगस्स, नमोत्थुणं तक पहुँच चुके थे। स्वाध्याय भवन में जब वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती विजयाजी मल्हारा को नन्हें-नन्हें बालकों को तस्सउत्तरी याद कराते देखा तो श्रद्धाभाव उमड़ पड़े ऐसे जिनशासन समर्पण पर। जलगाँव में बहूमंडल की हर सदस्या पूर्ण उत्साह से जिम्मेदारी का निर्वहन कर रही थी। जैन भवन में हुई प्रस्तुति प्रतियोगिता के अंश दिखा रहे बच्चों ने सभी को प्रभावित कर दिया। एक और सुखद दृश्य दिखाई दे रहा था महाराष्ट्र के परिवेश में। आदरणीय श्री दलीचन्दजी, श्री रतनलाल सी बाफणा सा आदि ने अथक प्रयास किए हैं, महाराष्ट्र क्षेत्र में। अब श्री महावीरचन्द जी बोथरा, पप्पूजी बाफणा, महेन्द्रजी बाफणा, प्रशान्तजी पारख, संदीप जी चोरडिया, बागरेचाजी, मुणोतजी की एक समन्वित युवा शक्ति उभर रही है जो उनकी विरासत को अच्छी तरह से आगे बढ़ाने में सक्षम है। **फतेहपुर** का आतिथ्य एवं आत्मीयता दोनों ही सराहनीय थी। ज्ञान, दर्शन, चारित्र सम पुष्पाजी आदि तीनों सखियाँ बालकों का अध्ययन निरन्तर प्रबल पुरुषार्थ के साथ करा रही थी। पिछले वर्ष की मेधावी बालिका ने नामकर्म के 43 भेदों को बड़ी सरलता से स्पष्टता से सुनाया, जो-जो प्रश्न किये उनका प्रभावी उत्तर दे सभी शिविरार्थियों का मनोबल वह बढ़ा रही थी। **भडगाँव** में शादियों के कारण फर्क था। **कजगाँव** में माहौल ही धर्ममय था। स्थानकवासी परम्परा में शिविरों के जनक परम पूज्य श्री कानमुनिजी म.सा. की सुशिष्याएँ वहाँ मौजूद थीं। ऐसी भाग्यवान सतियों की उपस्थिति ने वहाँ चमत्कारी परिवर्तन किया।

सामायिक-प्रतिक्रमण थोकड़े सीखने वालों में ग़ज़ब का उत्साह था। एवन्ता, सुबाहुकुमार की कथाएँ बच्चों ने प्रभावी ढंग से सुनाई। कजगाँव से **निफाड़** लगभग 130 कि.मी. है। निफाड़ रात्रि के 9.30 पहुँचने की सम्भावना बनी तो वहाँ विनति की गई कि अब हम नहीं पहुँच पाएँगे। पर उनकी आत्मीयता प्रेम-आग्रह इतना था कि प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई। गये तो बच्चों के धैर्य-उत्साह को देख लगा शायद नहीं आते तो बड़ी गलती हो जाती। श्री अशोकजी कर्णावट कह रहे थे ऐसा शिविर तो पहली बार देखा-सिर्फ पढ़ाने की, नाश्ते की मेहनत करनी होती है, बाकी सब कुछ व्यवस्थित हो जाता है। सुचारु व्यवस्था व उत्तम सामग्री की वे प्रशंसा कर रहे थे।

प्रभु महावीर के शासन के मध्यकालीन इतिहास में अणहिलपुर पट्टन का बड़ा महत्त्व

रहा है वैसे ही वर्तमान में पाली का महत्त्व है। मर्यादाओं एवं शास्त्रीय वचनों को अभिनव सोच के साथ शिविरार्थियों के समक्ष रखने की कला इस संघ में है। युवा संगठन का अद्भुत समन्वय, श्राविकाओं की श्रद्धा एवं श्रावक संघ के वरदहस्त का परिणाम था कि कड़ी धूप में भी 350 बच्चों की उपस्थिति थी। वह भी सामायिक के श्वेत परिधान में क्रमबद्ध पंक्ति में। शिविर उपयोगिता की नाटिका प्रस्तुत की तो लगा कि कितने स्वाभाविक तरीके से अपनी बात को रख संदेश दिया जा रहा है। रात्रि भोजन-त्याग की वजह से बच्चों को भोजन करते-करते बातचीत में प्रश्न पूछे तो अल्प दिनों में कर्मप्रकृति, संज्ञा के थोकड़े याद किये शिविरार्थियों को देख साथ में युवा उत्साही साथी हर्षवर्द्धनजी ललवानी भी प्रमुदित हो गए। बच्चों का उत्साह ऐसा रहा कि सामने से आकर दशवैकालिक के अध्ययन सुनाए। पिछले वर्ष एक शिक्षक डोसी जी की क्लास के तृतीय वर्ग में 29 शिविरार्थियों में से 26 ने पूर्ण प्रतिक्रमण याद किया था। ऐसा ही आभास इस वर्ष के उत्साह से लग रहा था। श्री नरपतजी चौपड़ा, कल्पेशजी लोढ़ा, बलोटाजी, उगमजी गाँधी, पगारियाजी सभी श्रावकसंघ के वरदहस्त से कार्य को प्रभावी ढंग से सम्पादित कर रहे थे। **मेड़ता** एवं **गोटन** में भी नवसारी वाले स्वर थे। परम पूज्य श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. की उपस्थिति से एवं उपाध्याय भगवन्त श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं ओजस्वी प्रभावक मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के चातुर्मास का प्रतिफल था कि स्थानकवासी समाज के हर घर के बच्चे वहाँ उपस्थित थे। जिनशासन की बगिया में हर फूल की महत्ता है, सौरभ है, साथ मिलकर वह गुलदस्ता बन माहौल को सुरभित करता है। वह सौरभ स्पष्ट यहाँ परिलक्षित हो रही थी। श्री नीलेशजी, अजीतजी कांकरिया, माणकजी तातेड बहुत मेहनत कर रहे थे। गोटन में श्री हंसराजजी की बुलंद आवाज, ओस्तवाल जी का समर्पण, अभयजी लोढ़ा की मधुर आवाज, सिद्धान्तशाला के छात्रों के समन्वित प्रयास से अध्ययन बहुत अच्छा था। मेड़ता व गोटन दोनों क्षेत्रों में संख्या, गुणवत्ता में अभिवृद्धि थी। **पीपाड़सिटी** में 130 की संख्या थी। नए शिविरार्थी बहुत थे। बड़े शिविरार्थियों का अध्ययन प्रगति पर था। क्षेत्रीय प्रधान श्री परेशजी मूथा, जितेन्द्रजी कटारिया, युवाओं हेतु कर्मठता निरन्तरता के आदर्श श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल, लोकेशजी कुम्भट, महासचिव श्री श्रेयांसजी मेहता, महेन्द्रजी सुराणा, प्रतिक्रमण सीख चुके शिविरार्थियों से प्रतिक्रमण हर पक्खी को करने की प्रेरणा दे रहे थे। **नागौर** में 95 की संख्या रही। वहाँ श्री शूरवीरजी सुराणा, अजीतजी भंडारी, विमलजी, सुरेशजी सुराणा व्यवस्था को अच्छी तरह से सम्भाल रहे थे। **बाड़मेर** में श्री गोगड़जी, जितेन्द्रजी बांठिया आदि के प्रयास से 104 की संख्या के साथ मरुस्थल में भी धर्म के पुष्प खिल रहे थे।

सवाईमाधोपुर में तो स्वयं शासननायक आचार्य भगवन्त एवं महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. विराज रहे हैं। वहाँ पर स्वाध्यायियों एवं जिज्ञासु शिक्षकों का एक अद्भुत जोड़ है। उसके परिणाम स्वरूप यहाँ अध्ययन एवं जीवन में क्रियान्विति बहुत अच्छी होती है। आचार्य भगवन्त विनय, विवेक की प्रतिमूर्ति, निस्पृही आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं चौथे आरे की बानगी पण्डित रत्न, शांत-दांत-गंभीर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. की कृपा से न मात्र यह क्षेत्र अपितु सम्पूर्ण 70 क्षेत्र के 6000 शिविरार्थी (जयपुर-जोधपुर के अतिरिक्त) स्थानकों में आए; उन्होंने ज्ञान के अनुपम मोती लेकर जीवन को जगमग किया। सबसे प्रमोदजन्य बात यह रही कि **उखलाना** व **जैनपुरी** जहाँ मीणा समाज का बाहुल्य है उस क्षेत्र के जाति से मीणा, धर्म से जैन बालकों ने नवकार महामंत्र से प्रारम्भ कर नमोत्थुणं तक सीख लिया था। वे 'जय जिनेन्द्र' से अभिवादन कर रहे थे एवं उनके माता-पिता को रोज सुबह प्रणाम कर आते तो समाज में एक प्रभावी सन्देश, जैन संस्कृति का जा रहा था। 130 एवं 70 की संख्या क्रमशः रही। देव, गुरु, धर्म पर एक कार्यशाला जैसा आयोजन हुआ, जिसमें अलीगढ़-रामपुरा संघ के अध्यक्ष श्री घनश्याम जी, रविन्द्रजी, शैलेषजी व उपाध्याक्ष श्री पवनजी जैन के साथ बृजमोहनजी मीणा, केदारजी आदि का सहयोग सराहनीय रहा। **अलीगढ़-रामपुरा** में लगभग 100 बच्चों ने अष्टमी, चतुर्दशी को रात्रि भोजन-त्याग एवं हरी के त्याग किए। वहाँ की प्रस्तुति प्रतियोगिता साथ ही साथ **चौथ का बरवाड़ा** व शहर की प्रस्तुति प्रतियोगिता को देख सभी बुजुर्ग-अनुभवी दंग रह गए कि क्या इस तरह भी बच्चे इतनी मेहनत कर, अपेक्षा से बहुत अधिक विषय की प्रस्तुति कर सकते हैं। **आदर्श नगर** सवाईमाधोपुर में 70 बच्चों ने एक वर्ष के लिए रात्रि भोजन का त्याग किया। 7 बजे शिविर समय होता है। बच्चे सभी 6.50 पर पहुँच जाते हैं यहाँ। शहर-सवाईमाधोपुर की विराट् संख्या के साथ अनुशासन सभी के लिए प्रेरणादायी है। भगवन्त के चातुर्मास पूर्व ही यहाँ धर्म की लहरें उमड़ रही थीं। बजरिया का संयुक्त प्रयास, श्रावकों, युवकों-श्राविकाओं का इतना प्रभावी था कि बच्चों में ऐसा वातावरण बना कि दो दिन पहले ही पाठ्यक्रम अच्छी तरह बच्चों ने पूरा कर लिया था। **दूनी** में प्रथम बार महासती श्री सुशीलाकुँवरजी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से शिविर लगा वहाँ पर चण्डालियाजी, जयाजी गोखरू आदि की मेहनत से 16 बच्चों ने सामायिक पूरी याद की एवं 8 बच्चों ने प्रतिक्रमण सीखा। नाश्ता कराने वाले दिन में चार-चार व्यक्ति आगे से आगे आ जाते थे। **देई** में तो शिविर आवासीय बन जाता है। समाज की एकरूपता से वहाँ अध्ययन का विशिष्ट माहौल होता है। **सुमेरगंज मण्डी** में क्षेत्रीय संयोजक श्री

राकेशजी जैन के व्यक्तित्व जैसा ही बड़ा शान्त सौम्य वातावरण है तो **कोटा-रामपुरा** में प्रथम बार शिविर लगा। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की असीम अनुकम्पा इस क्षेत्र पर बरसी, उसके परिणामस्वरूप सभी में बहुत उत्साह था। अध्ययन बहुत अच्छा रहा। श्री बुद्धिप्रकाशजी, राजकुमारजी नवलखा, जगदीशजी पोरवाल ने व्यवस्था बहुत सुन्दर तरीके से की। लगभग 98 शिविरार्थी थे। महावीर नगर में श्री हनुमानजी जैन, प्रेमचन्दजी आदि ने स्थानक निर्माणाधीन होने के बावजूद सुन्दर ढंग से शिविर संचालन किया।

कोलकात्ता में सुश्री पूजाजी सोमानी की अद्‌भुत शासन-सेवा की भावना के फलस्वरूप बंग क्षेत्र में भी सुमन लहलहाने लगे। कई शिविरार्थियों ने तो नवकारमन्त्र भी पहली बार अच्छी तरह सीखा। पाँच अभिगम जाने, 24 तीर्थंकर, 20 विहरमान के नाम याद किये। लोगस्स एवं सामायिक सूत्र भी कतिपय शिविरार्थियों ने सीखा।

ऋद्धि सम्पन्न, अलकापुरी सम नगरी **हांगकांग** में रह रहे प्रवासी धर्मावलम्बियों ने मुक्त हस्त से शिविर हेतु सहयोग दिया। श्री संजयजी कोठारी, हेमेशजी सेठ, हेमन्तजी, रितेशजी हीरावत, महेन्द्रजी संचेती का उल्लेखनीय सहयोग रहा। शिविरों हेतु एवं पिछले दो माह से प्रायः व्यापार में नगण्य सी उपस्थिति रहने पर भी अनुकरणीय सम्बल रहा, कर्मग्रन्थ के जानकार, आगमज्ञ, थोकड़ों के ज्ञाता, सफल व्यवसायी आदरणीय अग्रज श्री राजेन्द्रकुमारजी डागा एवं उनके सुपुत्र वैभवजी डागा का। इस वर्ष की प्रस्तुति एवं पिछले वर्ष से प्रारम्भ धर्मकथा प्रतियोगिता का प्रारम्भिक प्रारूप वैभव जी द्वारा सृजित था।

शिविर पूर्व चले सामग्री संग्रहण वितरण के पहाड सम दिखने वाले कार्य की क्रियान्विति में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ, **जयपुर** ने महती कृपा की। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का भी पूर्ण सहयोग रहा। श्री सरदारसिंहजी बोथरा, कोषाध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, सचिव श्री रितुलजी पटवा, शैलेन्द्रजी कोठारी, नीलकण्ठजी भण्डारी, श्री मनोजजी जैन, मनीषजी जैन का भी सहयोग रहा। सीडी में पिता के विषय के एनीमेशन श्री विकासजी गुन्देचा ने किया। श्री सुमितजी सेठ ने हिन्दी अनुवाद एवं सीडी संपादन में पूरा साथ दिया। संत-सतियों को देख जिनका रोम-रोम हर्षित हो जाता है ऐसे पिताश्री विमलचन्दजी डागा का आभार, जिनका पूरा मार्गदर्शन रहा। आभार श्री मोफतराजजी मुणोत का, पद्‌मविभूषण श्री डी.आर. मेहता, संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफणा एवं संघ के शीर्ष पदाधिकारियों का जिनका परोक्ष या अपरोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ।

अन्त में, यही शुभ भावना कि यह शिविर सरिता भगवन्त की कृपा से आगे यूँ ही बढ़ती रहे एवं जिनशासन की बगिया को सरसब्ज बनाती रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

-1370, ताराचन्द नायब का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

समाचार-विविधा

पूज्यप्रवर की हुई महर : बजरिया में छाई धर्म की लहर

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा की कृपा से बजरिया-सवाईमाधोपुर क्षेत्र में धर्म की लहर छा गई है। आपश्री के पावन पदार्पण से सवाईमाधोपुर क्षेत्र अत्यन्त उल्लसित एवं पुलकित है। अक्षय तृतीया एवं दीक्षा के प्रसंग से बजरिया की बाल मंदिर कॉलोनी मानो तीर्थ बन गई। जिधर देखो उसी मार्ग से भक्तजनों का सैलाब बाल मंदिर कॉलोनी में आपके दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण हेतु उमड़ता दिखाई दे रहा था। यहाँ पर दर्शनार्थियों का क्रम निरन्तर बना हुआ है। चेन्नई से श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल एवं चेन्नई के संघाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी कांकरिया, निर्वतमान संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, समर्पित संघसेवी डॉ. पी.एस. लोढ़ा, जयपुर आदि दर्शन-वन्दन हेतु पधारे। 6 मई को विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री गुलाबचन्द जी कटारिया पधारे। श्री सुरेश जी चोरड़िया-संयोजक, शिक्षण बोर्ड, श्री आनन्द जी चौपड़ा-महामंत्री, श्री धीरज जी जैन, हरसाना (आई.आर.एस.) आदि ने भी दर्शन वंदन का लाभ लिया। पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में 13 मई को 39 भाई-बहिनों ने वर्षीतप पूर्ण किया। 14 मई को मुमुक्षु बहनों का अभिनन्दन-समारोह सम्पन्न हुआ। इसी दिन प्रातः 9.00 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रभा जी एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री अंतिमा जी की शोभा यात्रा भव्यता के साथ आयोजित हुई। 15 मई को भागवती दीक्षा पूज्य आचार्यप्रवर के श्रीमुख से प्रदान की गई। इस अवसर पर संघरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत भी अनुमोदनार्थ पधारे। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल ने सेवा का लाभ लिया। वैशाख के शुक्ल पक्ष के प्रचण्ड ताप में भी भागवती दीक्षा के समय आकाश में बादलों के आने, शीतल बयार के चलने एवं कुछ बूंदाबांदी होने से दीक्षा पाठ के समय एक अद्भुत नज़ारा रहा, जो सबके दिलों को छू गया। दीक्षा में 7000 से अधिक उपस्थिति रही। नगर पालिका क्षेत्र की ओर से स्वधर्मी वात्सल्य की भावना का सुन्दर रूप परिलक्षित हुआ।

16 मई को पूज्य प्रवर संत मण्डली के साथ बजरिया से विहार कर महावीर नगर, मण्डी रोड़ पधारे। यहाँ पर 18 मई को अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री

हस्तीमल जी म.सा. का 22 वाँ पुण्य स्मृति दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। श्रद्धानिष्ठ भाई-बहिनों ने 500 से अधिक एकाशन एवं 200 से अधिक 5-5 सामायिक की साधना कर अर्घ्य अर्पित किया। यहाँ से 20 मई को विहार कर पूज्यप्रवर आलनपुर पधारे। आलनपुर वाले श्रावक-श्राविका भाग्यशाली रहे, जिन्हें पाँचों ही तिथियाँ पर्व रूप में प्राप्त हुईं। वैशाख शुक्ला दशमी को भगवान महावीर का केवल कल्याणक, एकादशी को संघ स्थापना दिवस, द्वादशी को बड़ी दीक्षा, त्रयोदशी को उपाध्यायप्रवर का इक्यानवाँ दीक्षा दिवस तथा चतुर्दशी को पाक्षिक पर्व था। बड़ी दीक्षा पर लगभग 2000 श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे। इस दिन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत के सुपुत्र श्री वैभव जी गहलोत ने बड़ी दीक्षा की पूरी विधि प्रमुदित भाव से देखी एवं सुनी। उपाध्यायप्रवर के 51वें दीक्षा दिवस पर 23 मई को उपवास, एकाशन, सामूहिक बियासन एवं 5-5 सामायिक की साधना अच्छी संख्या में हुई। देश के अनेक केन्द्रों पर स्वप्निका पुस्तिका खुली प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

पाक्षिक पर्व का आलनपुर संघ को लाभ देने के अनन्तर पूज्यपाद आचार्यदेव 25 मई को विहार कर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पधारे। यहाँ पर 40 गाँवों के पोरवाल बंधुओं के लगभग 115 परिवार निवास कर रहे हैं। इस दिन यहाँ विजयनगर निवासी पूनमिया श्रावक श्री पारसमल जी खटोड़ दर्शनार्थ पधारे। 26 मई को श्री प्रमोद जी लोढ़ा एवं उनके ससुराल पक्ष के परिजन मांगलिक श्रवण हेतु पधारे। संघ के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री धनपत जी भंसाली भी सपरिवार श्री चरणों में उपस्थित हुए। पूज्य आचार्यप्रवर का 23 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस सामूहिक एकाशन व 5-5 सामायिक की साधना के साथ ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 29 मई को मनाया गया।

रत्नसंघ के सन् 2013 के घोषित चातुर्मास

आगममर्मज्ञ जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन 27 मार्च, 2013 को कतिपय चातुर्मासों की घोषणा की गई थी। उसी क्रम में 17 अप्रेल, 2013 को पचाला ग्राम में एवं 15 मई, 2013 को सवाईमाधोपुर में शेष चातुर्मासों की साधु मर्यादा में रखने के योग्य आगारों के साथ घोषणा की गई। अब तक घोषित समस्त चातुर्मास इस प्रकार हैं-

1. **सवाईमाधोपुर शहर-** परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. **कोसाना-** उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा (जोधपुर संघ के विशेष आग्रह, स्वास्थ्य की दृष्टि से चिकित्सा-सुविधा एवं साध्वी प्रमुखा जी की प्रबल भावना होते हुए भी उपाध्यायप्रवर चलने की स्थिति में विहार क्रम को रोकना

नहीं चाहते, अतः उनकी भावना को ध्यान में रखकर कोसाणा की विनति को स्वीकार किया गया)

3. **मदनगंज-किशनगढ़**- तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा
4. **शक्तिनगर,जोधपुर**- साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा
5. **सवाईमाधोपुर शहर**- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
6. **खेरली**- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
7. **भरतपुर**- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
8. **जामोला (अजमेर)**- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा
9. **गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)**- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा। सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 द्वारा पर्युषण पर्यन्त ग्राम **हुरड़ा** में धर्माराधन स्वीकृत।
10. **मानसरोवर (जयपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा
11. **पीपाड़ शहर**- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा
12. **अयनावरम् (चेन्नई)**- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा
13. **आवड़ी (चेन्नई)**- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा
14. **निफाड़ (नासिक)**- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
15. **नदबई (भरतपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
16. **बीकानेर**- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी, श्री मुदितप्रभाजी आदि ठाणा
17. **मण्डावर (दौसा)**- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
18. **पाली**- महासती श्री विनीतप्रभा जी, महासती श्री निरंजना जी म.सा. आदि ठाणा
19. **प्रतापनगर (जयपुर)**- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा

सम्पर्क सूत्रः-

1. **सवाईमाधोपुर**- 1. श्री राधेश्याम जी जैन गोटावाले-94618-63233, 2. श्री गणपतराज जी जैन-94603-17013, 3. श्री पारसचन्द जी जैन-94130-23430, 4. श्री कुशलचन्द जी गोटावाले, आर.पी. ज्वैलर्स, टोंक रोड़, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राज.) फोनः-94604-41570, 5. श्री रामदयाल उम्मेदचन्द जैन सर्राफ, लड्डा पेट्रोल पम्प के सामने, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001,मो.-9414404042, 9414030572

2. कोसाणा- श्री जी. गणपतराज जी बाघमार, अध्यक्ष-09381004293, श्री लीलम चन्द जी बाघमार, मंत्री-09660707771

3. जोधपुर एवं अन्य क्षेत्र हेतु- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन व फैक्सः 0291-2636763, 2641445, श्री मानेन्द्र ओस्तवाल, अतिरिक्त महामंत्री-09414132521, श्री प्रकाश सालेचा, कार्यालय प्रभारी-09414126279

सवाईमाधोपुर में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में बजरिया, सवाईमाधोपुर में तप एवं दान के विशिष्ट पर्व पर व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रेरणा की गई तथा तप एवं दान का महत्त्व प्रतिपादित किया गया। सवाईमाधोपुर में 39 तपस्वियों ने पारणक का लाभ लिया।

बजरिया, सवाईमाधोपुर की बाल मन्दिर कॉलोनी में स्थित सार्वजनिक उद्यान के विशाल प्रांगण में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नगर परिषद् क्षेत्र सवाईमाधोपुर श्रीसंघ द्वारा आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में विशाल उपस्थिति एवं पधारे हुए तपस्वी भाई-बहिनों का तप के प्रति रुझान प्रेरणादायी रहा। अक्षया तृतीया के पूर्व से ही तपस्वी भाई-बहिनों एवं उनके परिवारजनों का तप के अनुमोदनार्थ बजरिया, सवाईमाधोपुर पधारना प्रारम्भ हो गया था। पधारने वाले भाई-बहिन प्रतिदिन संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ ले रहे थे। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 के पावन सान्निध्य में सार्वजनिक उद्यान में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। पूरा प्रवचन हॉल श्रोताओं की उपस्थिति से भरा हुआ था। सर्वप्रथम कार्यक्रम संचालक श्री पदमचन्दजी जैन ने तपस्वी भाई-बहिनों के साथ आगन्तुक महानुभावों का शब्दों से स्वागत-सत्कार किया।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने अक्षय तृतीया एवं भगवान आदिनाथ के पारणे को लेकर तप और दान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए बताया कि तप द्वारा जीव स्वयं शुद्ध होता है तथा दान के द्वारा स्व-पर की शुद्धि होती है। दान देने वाला समाधि व सन्तोष को

प्राप्त करता है एवं लेने वाला सुख व समाधि को प्राप्त करता है। भगवान ने फरमाया कि दान कृषक की खेती की तरह है। एक बीज डालो, हजार बीज पाओ। **महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.** ने अपने प्रवचन में फरमाया कि- अक्षय तृतीया पावन तिथि है जो कभी क्षय नहीं होती। इस पावन पर्व पर दान एवं तप की आराधना करके जीव अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकता है।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचन सभा को सम्बोधित करते हुए दान के विषय में कहा कि 6 साल का बालक पिता के साथ भ्रमण हेतु समुद्र किनारे पहुँचता है। समुद्र में अथाह जलराशि है जिसका दूर तक कोई छोर नहीं दिख रहा है उसमें से चुल्लू भर पानी पीने से बालक का मुँह खारा हो गया, बालक पिता से पूछता है- समुद्र का पानी खारा क्यों है ? पिताश्री ने जवाब दिया- जो संचय करता है, उसका पानी खारा होता है। जो बांटता है, देता है उसका पानी मीठा होता है। आज हमारे समक्ष चार-चार पावन प्रसंग उपस्थित हैं (1) आदिनाथ भगवान के तप का सम्पूर्ति दिवस (2) राजा श्रेयांस द्वारा दिए गए दान स्वरूप दान-दिवस (3) आचार्य हस्ती का आचार्य पदारोहण दिवस (4) आचार्य पूज्य श्री कजोड़मलजी म.सा. का पुण्य दिवस। ये चारों प्रसंग हमको दान एवं तप की प्रेरणा कर रहे हैं। ज्ञानियों ने भी कहा है कि- दान देने वाला व्यक्ति परीत संसारी बनकर तीर्थंकर गोत्र का वरण कर मुक्ति मार्ग से अपने-आपको जोड़ लेता है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया कि-तीर्थंकर भगवन्तों ने दान और तप का महत्त्व बताते हुए कहा कि क्षुधा परीषह को जीतना सरल नहीं है, यह जमीन पर रहकर आसमान के तारे गिनने के समान है। कषाय एवं इन्द्रियों पर विजय हासिल करने पर ही तप की आराधना होती है। तप सम्पूर्ण कर्मों को क्षय करने वाला है। तप वही जीव कर सकता है जिसके लक्ष्य में कर्म क्षय करना एवं मुक्ति का मार्ग समाया हो। एक बहन 40 वर्ष से वर्षीतप कर रही है, मैंने उनके पति से पूछा- बहन इतनी लम्बी तपस्या कर रही है, आपका इसमें क्या सहयोग है ? तो भाई ने कहा- **महाराज ! मैं तपस्या तो नहीं कर सकता, लेकिन इनकी तपस्या में सहयोग के रूप में पिछले 40 वर्ष से शीलव्रत की आराधना कर रहा हूँ, ऐसे भी त्यागी-तपस्वी संघ में मौजूद हैं।** इन्हीं लोगों से जिनशासन की प्रभावना हो रही है। तप के साथ दान देने से भी कभी कमी नहीं आती है। जैसे सूर्य की किरणें कभी कम नहीं पड़ती, वायुमण्डल से प्राण वायु खत्म नहीं होती और समुद्र का पानी कभी खत्म नहीं होता उसी प्रकार दान देने से भी अर्थ की कमी नहीं होती। आज का यह पावन प्रसंग भव्य जीवों को तप एवं दान की प्रेरणा

कर रहा है। यत्किंचित् भी दान एवं तप आप अपनायेंगे तो आपका यहाँ इस पावन प्रसंग पर आना सार्थक होगा।

प्रवचन पश्चात् आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वर्षीतप साधकों में से कइयों ने एक वर्ष एकान्तर तप बढ़ाया तो कइयों ने एकान्तर तप की साधना हेतु नया नियम ग्रहण किया। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर उपवास, बेले, तेले आदि तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए, वहीं नित्य की भांति आयंबिल एकासन के नियम भी हुए।

आचार्यप्रवर के मंगल पाठ के पश्चात् सार्वजनिक उद्यान प्रांगण में तप पूर्णाहुति समारोह का आयोजन हुआ। तप साधकों के पारिवारिक-परिजनों एवं इष्ट मित्रों ने तपस्वियों को इक्षु रसपान कराने के साथ तप की अनुमोदना की। स्थानीय संघ पदाधिकारियों ने स्वागत-सत्कार और बहुमान में अपूर्व उत्साह दिखाया। अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से उपाध्यक्ष श्री हस्तीमलजी डोसी, मेड़तासिटी, मंत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, कोटा एवं क्षेत्रीय प्रधान श्री मुकेशजी जैन, बजरिया ने सभी तपस्वी भाई-बहिनों की सुख-साता पृच्छा कर इक्षु रस का पारणा कराने के साथ तपस्वियों का बहुमान किया। कार्यक्रम के संयोजक श्री राधेश्याम जी जैन, संघाध्यक्ष श्री बाबूलाल जी जैन, मंत्री श्री पारसचन्द जी जैन एवं बजरिया संघ के अध्यक्ष श्री गणपतलाल जी जैन सहित नगर परिषद् क्षेत्र के विशिष्ट पदाधिकारियों ने तपस्वी भाई-बहिनों की सुख-साता पृच्छा करते हुए सभी का बहुमान किया। तपस्वी भाई-बहिनों के नाम इस प्रकार हैं :- (1) श्रीमती अकलकंवरजी इन्द्रचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, (2) श्रीमती पदमकलाजी पारसमलजी कांकरिया, जोधपरु (3) श्री अशोकजी उगमराजजी कर्नावट, चेन्नई (4) श्रीमती पुष्पाजी कांतिलालजी कर्नावट, चेन्नई (5) श्रीमती निर्मलाजी विमलचन्दजी, चेन्नई (6) श्रीमती नन्दाबाईजी सुखलालजी पीतलिया, तिरुपति, (7) श्रीमती प्रकाशदेवीजी भंवरलालजी कुम्भट, जयपुर (8) श्री कमलजी जैन वैद्य, जयपुर की धर्मसहायिका (9) श्रीमती मिथलेशजी नवलकिशोर जैन, नवसारी (10) श्रीमती विजयाजी रमेशजी खिंवसरा, पांचोरा (11) श्रीमती कुंकुंबाई चुन्नीलालजी बोथरा, पांचोरा (12) श्रीमती रानीजी गणेशजी कटारिया, इन्दौर, (13) श्रीमती मंजूजी योगेशजी पालावत, अलवर (14) श्रीमती लाडकंवरजी धनराजजी लोढ़ा, कानपुर (15) श्रीमती प्रमिलाजी प्रकाशजी मेहता, अजमेर (16) श्रीमती उषाजी पदमचन्दजी लुणावत, अजमेर (17) श्रीमती मैनादेवीजी रोशनलालजी छाजेड़, ब्यावर (18) श्री एम. सी. भण्डारी, ब्यावर (19) सुश्री मंजूजी पारसमलजी जैन, मकराना (20) श्रीमती भंवरीबाई शांतिलालजी मूथा, अजमेर (21) श्री ज्ञानचन्दजी संचेती, अजमेर (22) श्री छगनलालजी लोढ़ा, पाली (23)

श्रीमती पुष्पलताजी छगनलालजी लोढ़ा, पाली (24) श्रीमती ललितादेवीजी फाऊलालाजी लोढ़ा, पाली (25) श्री निहालचन्दजी साण्ड, विजयनगर (26) श्रीमती चन्द्रादेवीजी निहालचन्दजी साण्ड, विजयनगर (27) श्रीमती मुन्नीदेवीजी महावीरजी कांकरिया, मेड़तासिटी (28) श्री रतनलालजी भण्डारी, मुम्बई (29) श्रीमती शांतिबाईजी मेहता, झालरापाटन (30) श्रीमती हर्षबाईजी महावीरप्रसादजी जैन, चौथ का बरवाड़ा (31) श्रीमती विद्यादेवीजी मनोजजी जैन, चौरू (32) श्रीमती राजाबाई त्रिलोकचन्दजी जैन, उनियारा (33) श्रीमती निशाजी महेन्द्रकुमारजी जैन, अलीगढ़ (34) श्रीमती बालीबाईजी सायरचन्दजी रांका, पूना (35) श्रीमती ज्ञानदेवीजी सुकलेचा, जयपुर (36) श्रीमती संतोषजी कोठारी, जयपुर (37) श्रीमती उर्मिलाजी जैन, अजमेर (38) श्री प्रकाशचन्दजी बम्ब, अजमेर (39) श्रीमती सुमंगलाजी, चेन्नई।

अक्षय तृतीया पर पधारने वाले सभी महानुभावों एवं स्थानीय भाई-बहिनों की भोजन व्यवस्था श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नगर परिषद् क्षेत्र, सवाईमाधोपुर द्वारा की गई। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर स्थानीय संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल एवं 'सौहार्द' के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह के साथ पारणक महोत्सव के कार्यक्रम को सफल बनाया। नगर परिषद् क्षेत्र, सवाईमाधोपुर श्रीसंघ की सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहीं।

जोधपुर- शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**, तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 20 के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर सवाईमाधोपुर नहीं पहुँचने वाले तपस्वी भाई-बहिनों ने सूर्यनगरी-जोधपुर में उपस्थित होकर उपाध्यायप्रवर सन्त एवं सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप एवं दान का महत्त्व श्रवण किया। प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने तप के साथ दान देने की प्रभावी प्रेरणा की, वहीं उपाध्यायप्रवर ने भगवान आदिनाथ के पारणे को लेकर अक्षय तृतीया की ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हुए तप और दान के महत्त्व को प्रतिपादित किया। पावटा स्थित कांकरिया भवन में आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में इष्ट-मित्रों एवं परिजनों के साथ जोधपुर श्रीसंघ ने तपस्वियों को इक्षुरस का पारणा करवाते हुए स्वागत-सत्कार एवं बहुमान किया। अनेक भाई-बहिनों ने तपस्वियों की सुख-साता की पृच्छा करने के साथ तपस्वियों को इक्षु रस से पारणा करवाया। पारणक कार्यक्रम में 13 तपस्वी उपस्थित रहे :-(1) श्रीमती सरस्वती जी

जीरावला, (2) श्रीमती उषा महेन्द्र जी सिंघवी, (3) श्रीमती ललिता महेन्द्र जी रेड, (4) श्रीमती मैनाबाई जी लुणावत, (5) श्रीमती चंचलबाई जी कुम्भट, (6) श्रीमती कमला शांतिलाल जी पींचा, (7) श्रीमती प्रसन्नकंवर जी कवाड़-मुम्बई, (8) श्रीमती प्रेमलता जी सुराणा, (9) श्रीमती सज्जनबाई जी बालड़, (10) श्रीमती शांतिबाई जी बांठिया, (11) श्रीमती मैनाबाईजी खिंवसरा, (12) श्रीमती कमला जी मुणोत, (13) श्रीमती विमला बुद्धमल जी चौपड़ा।

उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य में तप एवं दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से तपस्वी भाई-बहिनों ने नये वर्षीतप शुरू करने के साथ उपस्थित जनसमुदाय ने भी नवीन त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। कार्यक्रम संचालक ने तपस्वी भाई-बहिनों के साथ उनके परिजनों का एवं आगन्तुक महानुभावों का शब्दों से स्वागत-सत्कार किया।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर जोधपुर श्रीसंघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल ने सुन्दर व्यवस्था की। वर्षीतप पारणकों की सम्पूर्ण व्यवस्था तथा बाहर से पधारने वाले सभी दर्शनार्थियों की भोजन व्यवस्था का आतिथ्य लाभ श्री प्रसन्नचन्द जी, श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल परिवार ने लिया।

पूज्य आचार्यप्रवर के 23 वें आचार्य पदारोहण दिवस पर गुणानुवाद एवं तप-त्याग

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 23 वां आचार्य पदारोहण दिवस ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी बुधवार 29 मई, 2013 को सवाईमाधोपुर, जोधपुर, केकड़ी आदि विभिन्न स्थानों पर गुणानुवाद एवं तप-त्याग के साथ मनाया गया। हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर में पूज्य आचार्यप्रवर, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. एवं महासती मण्डल के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा में संतप्रवरों एवं महासतीवृन्द ने अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति की।

श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य का पद संघ का सर्वोपरि पद है। समस्याएँ कैसी भी विकट क्यों न हों, आचार्यप्रवर उनका सम्यक् समाधान कर लेते हैं। आपमें निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता है। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.** ने अपनी अभिव्यक्ति में कहा कि यदि सही है मुखिया तो सारा परिवार रहता है सुखिया। जो मुखिया समता एवं क्षमता वाला हो तथा वात्सल्य भाव से अपनत्व प्रदान करता हो, तो वह श्रेष्ठ मुखिया होता है। पूज्य आचार्यप्रवर में ये तीनों विशेषताएँ हैं। आप आचरण के एवं

अनुशासन के आचार्य हैं। आपने अजमेर में 350 बारह व्रती बनाए, नागौर में व्यसन मुक्ति का अभियान चलाया। पोरवाल क्षेत्र में सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन के त्याग एवं हर घर में प्रतिक्रमण जानने वाले तैयार करने का अभियान जारी है। अध्यात्म चेतना वर्ष में पाली में लगभग 500 शीलव्रती बनाने का अभियान सफल रहा। **नवदीक्षिता महासती श्री प्रज्ञाश्री जी म.सा.** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस प्रकार पंगु रेस कोर्स में विजयश्री प्राप्त कर सकता है वैसे ही स्थिति मेरी है। हे गुरुदेव! आपकी कृपा से मैं भक्ति में अनुरक्त रहूँ। **महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.** ने अपनी भावाभिव्यक्ति में फरमाया कि आचार के साथ जिनका अविनाभावी सम्बन्ध होता है वे होते हैं आचार्य। आप आचारनिष्ठ होने के साथ उदार हैं। लेने से अधिक देते हैं। उपकार कर भूल जाते हैं। आपमें तीसरा गुण आत्मीयता का है। आप अकारण कृपा बरसाते हैं। **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.** ने कहा कि आपको पीपाड़ का होने से नहीं प्रतिभावान होने से आचार्य पद मिला। गाँधी कुल का होने से नहीं गुणों के कारण से आचार्य पद मिला है।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अपनी अभिव्यक्ति में फरमाया कि आज का दिन अभिव्यक्ति का नहीं अनुभूति का है। आज श्रुतधर श्री विनयचन्द जी म.सा. एवं आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्य पदारोहाण दिवस है। आचार्यप्रवर आगम आज्ञा के अनुसार संयम का पालन कर रहे हैं। अष्ट प्रवचन माता के अनुसार संयम में चरण बढ़ा रहे हैं। आपके 22 वर्ष के शासनकाल में संत-सतियों की संख्या के साथ ज्ञान व तप के स्वरूप में अभिवृद्धि प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है। आज छोटी-छोटी सतियों को भी 20 से 25 तक शास्त्र कंठस्थ हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपनी भावाभिव्यक्ति में फरमाया कि पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के लिखित पत्र के अनुसार 22 वर्ष पूर्व निर्मल-धवल चादर ओढ़ाई गई। इसके चार कोने साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका हैं, जो ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप तथा स्वाध्याय, सामायिक, सहयोग एवं संगठन से इस चादर की दीप्ति को अभिवृद्ध कर रहे हैं। एक-एक तार मिलकर चादर बनती है। व्यक्ति छोटा हो या बड़ा, संघ की उन्नति के लिए सबका योगदान हो सकता है। चारों कोनों को सम्भाल कर दीप्ति एवं धवलता बनाए रखें। आप भक्ति व समर्पण को, सेवा और संगठन को जितना आगे बढ़ायेंगे उतनी दीप्ति बढ़ती जायेगी। इस दिन सामूहिक एकाशन एवं 5-5 सामायिक की आराधना हुई।

जोधपुर में पूज्य उपाध्यायप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा के सान्निध्य में जो गुणानुवाद एवं तप-त्याग हुआ उसके समाचार पृथक् से इसी अंक में प्रकाशित हैं।

उपाध्यायप्रवर के 51 वें दीक्षा-दिवस पर गुणानुवाद एवं तप-त्याग

शान्तदान्त गंभीर पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.का 51 वाँ दीक्षा-दिवस वैशाख शुक्ला 13 दिनांक 23 मई, 2013 को देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में तप-त्याग के साथ मनाया गया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आलनपुर, सवाईमाधोपुर में 51 वाँ दीक्षा-दिवस उपवास, एकाशन, सामूहिक बियासन एवं 5-5 सामायिक की साधना के साथ मनाया गया। प्रवचन के समय उपाध्यायप्रवर के गुणानुवाद करते हुए **महासती श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.** ने फरमाया कि व्यक्तित्व चार प्रकार के होते हैं-सिंहसम, सरल, सजीव और स्नेहमय। उपाध्यायप्रवर के व्यक्तित्व में ये चारों विशेषताएँ हैं। संयम पालन में वे सिंह के समान हैं, स्वभाव में सरल हैं, साधना में जीवंत हैं तथा आपके नेत्रों में आत्मीयता का भाव रहता है। **महासती श्री विमलावती जी म.सा.** ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर की हर क्रिया प्रेरणादायी है। आपके जीवन में अभिमान लेश मात्र भी नहीं है। मन-वचन एवं काया में एकरूपता है। आपका जीवन खुली डायरी के समान है। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने उद्बोधन में फरमाया कि रत्नसंघ में उपाध्यायप्रवर के रूप में एक अनमोल दिव्य मणि विराजमान है जो सबके लिए गौरव का विषय है। आपके मुखमण्डल से ऋजुता के भाव प्रस्फुटित होते हैं। **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर के गुणों का गुणगान ज्ञान स्थविर, वय स्थविर एवं श्रुत स्थविर के रूप में किया जा सकता है। सेवा की प्रतिमूर्ति हैं उपाध्यायप्रवर। पीपाड़ में 50 वाँ दीक्षा दिवस दोनों महापुरुषों की सन्निधि में मनाया गया था, तब उपाध्यायप्रवर ने कहा था कि आचार्य श्री के नेतृत्व में संघ प्रगति कर रहा है। उपाध्यायप्रवर इस अवस्था में भी विहार कर क्षेत्रों को लाभान्वित करने की भावना रखते हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि पंचम आरे के 2500 वर्ष बीत जाने पर भी संयम-साधना में जीने वाले संत भगवन्त आज भी हैं। पद-प्रतिष्ठा व बाह्य आकर्षण से जो जितना दूर रहेगा वह भीतर की उतनी ही सम्हाल कर सकेगा एवं आत्मशोधन कर सकेगा। आज बाहरी प्रचार जितना बढ़ रहा है व्यक्ति उतना ही अंतर से दूर होता जा रहा है। साधना करते समय यह सजगता रखने की आवश्यकता है कि हमारे कषाय कितने घटे हैं। मिथ्यात्व हटे बिना आग्रहवृत्ति नहीं घटती।

उपाध्यायप्रवर के एक गुण को भी स्वीकार किया जायेगा तो जीवन सुरभित हो सकेगा। आप इस प्रसंग से गुणिषु प्रमोदं की भावना को प्रशस्त करें। यह दिन उपवास, एकाशन आदि तपराधन एवं 5-5 सामायिक की साधना के साथ मनाया गया।

सूर्यनगरी जोधपुर में उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में विभिन्न अवसरों पर गुणानुवाद एवं धर्माराधन

शान्त-दान्त-गंभीर पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 20 के पावन सान्निध्य में सूर्यनगरी, जोधपुर में वैशाख शुक्ला अष्टमी 18 मई, 2013 को सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, युग मनीषी, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का **22 वाँ स्मृति-दिवस** सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में मनाया गया। इस अवसर पर लगभग 125 भाई-बहिनों ने दया, संवर, एकाशन, उपवास, व्रत आदि की आराधना की। 19 मई को उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का **23 वाँ उपाध्याय पद दिवस** सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. एवं मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर के संयम-जीवन की महत्ता पर विशेष प्रवचन फरमाया। अन्त में परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि संत-सतियों ने आज जो गुणगान किये हैं, वे संयम के गुणगान हैं। संयम-जीवन के प्रदाता गुरुदेव की कृपा से ही संयम का पालन हो रहा है, अतः उन्हीं के चरणों में ये सारे गुणगान समर्पित करता हूँ।

23 मई, वैशाख शुक्ला 13, गुरुवार को आत्मार्थी, सहज संयमी, प्रबल पुरुषार्थी **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 51 वाँ दीक्षा-दिवस** अपूर्व उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर **श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा.** ने वैराग्य प्राप्ति के कारणों, संयम-जीवन की महत्ता एवं गुरु भगवन्तों की कृपा पर अपने उद्गार प्रकट किये गये। **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा.** ने मधुर भजन की कड़ियों के माध्यम से उपाध्यायप्रवर के संयमी-जीवन की सरलता-सजगता को रेखांकित किया।

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने उत्कृष्ट वन्दना के पाठ 'इच्छामि खमासमणो' के एक-एक शब्द का मार्मिक विवेचन करते हुए गुरु के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पण का अनूठा रूप प्रस्तुत किया। **मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के संयमी-जीवन की सहजता, सरलता, अप्रमत्तता आदि विशेषताओं के बारे में प्रभावी प्रवचन फ़रमाया।

महासतीवृन्द में क्रमशः **श्री कान्ता जी म.सा., श्री सुव्रत प्रभा जी म.सा., श्री वर्षा जी म.सा., श्री सिन्धु जी म.सा., श्री मुदितप्रभा जी म.सा., श्री विनीतप्रभा जी म.सा., श्री शान्ता जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका श्री रतनकंवर जी म.सा., साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के संयम-जीवन के अनेकानेक सद्गुणों को रेखांकित किया।

इस अवसर पर राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष, विदुषी स्वाध्यायी डॉ. सुषमा जी सिंघवी-जयपुर, जैन समता वाहिनी के संयोजक श्री सोहन जी मेहता, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता, श्री अनोपचन्द जी बाघमार-कोसाणा (चेन्नई) ने अपने हृदयोद्‌गार प्रकट किए। कार्यक्रम संचालक श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने उपाध्यायप्रवर के जीवन पर आधारित छन्द प्रस्तुत किया।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष **वीर भ्राता श्री धनपतचन्द जी सेठिया** ने उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए कार्यक्रमों की सफलता हेतु स्थानीय संघ के सभी कार्यकत्ताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अन्त में **उपाध्यायप्रवर** ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन में फरमाया कि आज बोलने का समय नहीं, सुनने का दिवस है। अभी जिन-जिन ने मेरे गुणगान किये, वे सब संयम की महत्ता को दर्शाने वाले हैं। संयम ही जीवन का सार है। संयम-मार्ग पर लगाने वाले पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. के कृपाप्रसाद का ही फल है कि संयम का आनन्द प्राप्त हो रहा है। अतः कहे गये सारे सद्गुण उन्हीं के चरणों में समर्पित हैं।

इस अवसर पर लगभग 550 भाई-बहनों ने एकाशन व्रत किया तथा सैकड़ों भाई-बहिनों ने 5-5 सामायिक व्रत की आराधना की। श्राविका मण्डल की 55 बहिनों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार बारह व्रतों को धारण करने की प्रतिज्ञा की।

प्रातःकाल युवक परिषद् के सदस्यों एवं अन्य लगभग 100 भाई-बहिनों ने

उपाध्यायप्रवर के श्री चरणों में तिक्खुत्तो के पाठ से विधिसहित 51-51 वन्दना समर्पित की। उपाध्यायप्रवर के 51 वें दीक्षा-दिवस पर वात्सल्य सेवा का लाभ सेठिया वीर परिवार ने प्राप्त किया।

29 मई बुधवार को जिनशासन गौरव संघनायक, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 23 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस भी शक्तिनगर में त्याग-तप पूर्वक मनाया गया। इस दिन में संत मण्डल एवं साध्वी मण्डल ने आचार्य पद की महत्ता, जिनशासन प्रभावना में आचार्य की भूमिका, आचार्यप्रवर के संयमी-जीवन की विशेषताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य पद नवकार मंत्र के पाँच पदों में बीच का पद है। अरिहन्त-सिद्ध ये पद ऊपर हैं, जो उन्हें सदैव लक्ष्य का भान कराते रहते हैं। उपाध्याय व साधु ये दो पद नीचे हैं, जिनके सहयोग से आचार्य भगवन्त जिनशासन की एवं रत्नसंघ की जाहोजलाली कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त दीर्घायु होकर चतुर्विध संघ का कुशलतापूर्वक मार्गदर्शन करते रहें, यही मंगल मनीषा है।

-सुभाष हुण्डीवाल, मंत्री, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. का विहार केकड़ी होते हुए विजयनगर की ओर

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 का कोटा में विचरण अत्यन्त प्रभावशाली रहा। 23 मार्च को जब आपका कोटा के रिद्धि-सिद्धि नगर से रामपुरा बाजार स्थित स्थानक की ओर विहार हुआ तो अनेक श्रावक-श्राविका उत्साहपूर्वक अगवानी में पहुँचे। 23 मार्च से 11 अप्रेल तक संतप्रवरों ने रामपुरा स्थानक में शासन प्रभावना की। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 15, मेवाड़ सिंहनी महासती श्री यशकंवर जी म.सा. की शिष्या श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा 4, श्रमणसंघीया महासती श्री कमलावती जी की शिष्या श्री चंदना जी म.सा. के सान्निध्य में चतुर्विध संघ का अपूर्व ठाट रहा। फाल्गुनी पूर्णिमा पर तो संवत्सरी जैसा वातावरण हो गया। विशाल स्थानक परिसर ऊपर-नीचे खचाखच भर गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा का जन्मदिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी 3 अप्रेल को सामूहिक एकाशन के साथ मनाया गया। बाहर से पधारने वाले दर्शनार्थियों का भी कोटा में तांता लगा रहा। श्री अभय जी सुराणा चेन्नई ने मात्र अठाईस वर्ष की वय में सजोड़े आजीवन शीलव्रत का नियम लिया। 12 अप्रेल से 24 अप्रेल तक

आपश्री का कोटा के उपनगरों में प्रभावी विचरण हुआ। 24 अप्रेल को महावीर जयन्ती महावीर भवन में मनाई गई। श्री सुभाष मुनि जी के स्वास्थ्य लाभ के लिए संत-मण्डल का पुनः रामपुरा स्थानक पधारना हुआ। 30 अप्रेल को यहाँ से बूंदी की ओर विहार हुआ। बूंदी में धर्म प्रभावना कर आप देवली पधारे। वहाँ कुछ दिन ठहर कर केकड़ी पधारे हैं। यहाँ से विजयनगर पधारने की संभावना है। चातुर्मास मदनगंज-किशनगढ में है।

सवाईमाधोपुर में मुमुक्षु सुश्री प्रभाजी जैन एवं मुमुक्षु सुश्री अन्तिमाजी जैन की जैन भागवती दीक्षा 15 मई, 2013 को सानन्द सम्पन्न

वैशाख शुक्ला पंचमी, बुधवार 15 मई, 2013 को बजरिया, सवाईमाधोपुर के बाल मन्दिर कॉलोनी स्थित सार्वजनिक उद्यान प्रांगण में जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु सुश्री प्रभाजी जैन एवं सुश्री अन्तिमाजी जैन का पावन प्रव्रज्या महोत्सव महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं मधुर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 15 के पावन सान्निध्य में हजारों भक्तों के जयनादों के बीच उमंग-उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

शोभा-यात्रा

14 मई, 2013 को प्रात: 8.00 बजे मुमुक्ष बहन सुश्री प्रभाजी जैन एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री अन्तिमाजी जैन की शोभा यात्रा वीर परिवार के निवास स्थान विराट नगर कॉलोनी से प्रारम्भ हुई, जिसमें बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित दो बग्घियों में विरक्ता बहनें एवं उनके परिवारजन विराजित थे। वीर दादाश्री एवं दादीश्री हाथी पर सवार थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए, मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा। हजारों गुरुभ्राता एवं श्रद्धालुजन कतारबद्ध हो अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थे। बजरिया क्षेत्र के प्रमुख मार्गो से निकलती हुई शोभायात्रा का भव्य नज़ारा देखकर दर्शक भावाभिभूत हो गये। श्रावकों द्वारा लगभग 21 स्थानों पर शीतल पेय एवं अल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था की गई। अत्यधिक गर्मी होने के बावजूद शोभायात्रा का उत्साह बना रहा तथा अन्त में प्रातः 11 बजे 32-बाल मन्दिर कॉलोनी जाकर शोभा यात्रा सम्पन्न हुई। शोभायात्रा में सम्मिलित मुमुक्षु

बहनों, वीर परिवारजनों तथा उपस्थित महानुभावों ने दर्शन-वन्दन करने के साथ परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन-समारोह

14 मई, 2013 को अपराह्न 2.30 बजे मुमुक्षु बहन सुश्री प्रभाजी जैन एवं सुश्री अन्तिमाजी जैन एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ नगर परिषद् क्षेत्र सवाईमाधोपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सार्वजनिक उद्यान में आयोजित हुआ।

अभिनन्दन-समारोह की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ने की। संघ के पूर्व अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर ने मुख्य अतिथि के रूप में मंच को सुशोभित किया। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर एवं जिनवाणी पत्रिका के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पवनकुमारजी जैन, कोटा, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल, जोधपुर, संघ के मंत्री श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, कोटा, दीक्षा आयोजन समिति के संयोजक श्री राधेश्यामजी जैन गोटेवाला, सवाईमाधोपुर, दीक्षा आयोजन समिति के सह-संयोजक श्री रामदयालजी जैन (सर्राफ), बजरिया संघ के अध्यक्ष माननीय श्री गणपतलालजी जैन, बजरिया, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पोरवाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री मुकेशजी जैन, बजरिया ने भी मंच को सुशोभित किया।

विरक्ता बहनों एवं उनके दादा-दादी तथा माता-पिता सहित परिवारजनों को आत्मीयता से आमंत्रित कर मंचासीन करवाया गया।

सार्वजनिक उद्यान का विशाल मंच अत्यन्त भव्यता लिये हुए था। मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिये सुन्दर व्यवस्था की गई थी। समारोह में विशाल जनमेदिनी ने सुविधापूर्वक बैठकर अभिनन्दन समारोह का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह में मंगलाचरण की प्रस्तुति वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पदमचन्दजी जैन, बजरिया ने की। स्वागत गीत श्राविका मण्डल की सदस्याओं समताजी, नेहाजी, सुनीताजी, पिंकीजी ने समवेत स्वर में प्रस्तुत किया। दीक्षा आयोजन समिति के **संयोजक श्री राधेश्यामजी गोटेवाला** ने सभी अभ्यागतों का स्वागत करते हुए कहा कि मण्डावरिया परिवार जिन्होंने अपने कलेजे की कोर को रत्नसंघ को समर्पित किया, उसके लिए मैं इस परिवार का हार्दिक अभिनन्दन, सत्कार एवं सम्मान करता हूँ।

समारोह-अध्यक्ष एवं संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर का श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ नगर परिषद् क्षेत्र सवाईमाधोपुर द्वारा माला एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया। इसी प्रकार मुख्य अतिथि श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर एवं श्री पवनकुमारजी जैन, कोटा का भी माला व शॉल द्वारा बहुमान किया गया। अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत विरक्ता बहनों के वीरदादा श्री राजूलालजी जैन, वीरदादी श्रीमती गाजादेवीजी जैन, वीर पिता श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन, वीरमाता श्रीमती चमेलीदेवीजी जैन, वीरभ्राता श्री जिनेन्द्रजी जैन एवं वीरभाभी श्रीमती शिल्पीजी जैन सहित सभी परिवारजन में सभी पुरुष सदस्यों का माला व शॉल द्वारा एवं महिला सदस्यों का माला व चुन्दड़ी द्वारा बहुमान किया गया। वीर परिवार के दादा-दादी और माता-पिता को संघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र भी ससम्मान भेंट किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नगर परिषद् क्षेत्र, सवाईमाधोपुर द्वारा भी वीर परिवार के सभी पुरुष सदस्यों का माला एवं शॉल से तथा महिला सदस्यों का माला एवं चुन्दड़ी से बहुमान किया गया, साथ ही विरक्ता बहिनों के धर्म पिता श्री हरकचन्द जी बोथरा, अजमेर एवं माता श्रीमती सीमा जी का सवाईमाधोपुर संघ द्वारा एवं वीर परिवार द्वारा अभिनन्दन किया गया।

संयम-मार्ग की पथिका मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रभाजी जैन एवं सुश्री अन्तिमाजी जैन का स्वागत-बहुमान माला व चुन्दड़ी से श्राविका मण्डल की सदस्याओं द्वारा किया गया। विरक्ता बहनों को दिए जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन क्रमशः श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन, जलगाँव एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशलजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर ने किया। संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, मुख्य अतिथि श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, विशिष्ट अतिथियों एवं मंचासीन पदाधिकारियों ने अभिनन्दन-पत्र मुमुक्षु बहिनों के कर-कमलों में समर्पित किया। श्री पद्मावती पोरवाल जैन संघ, इन्दौर द्वारा भी विरक्ता बहिनों का अभिनन्दन किया गया।

विरक्ता बहन प्रभाजी जैन एवं अन्तिमाजी जैन ने ओजस्वी वाणी में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये। दोनों विरक्ता बहिनों ने अध्यात्म-जीवन की गंगा बहाने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन, संत-सतीमण्डल के चरणों में वन्दन करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमारे पारिवारिकजनों ने हमें सुसंस्कार दिए। माता-पिता ने संयम के प्रति हमारी दृढ़ता को देखते हुए सहर्ष दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। आचार्य भगवन्त ने अनन्त कृपा कर हमें संयम-मार्ग पर आगे बढ़ाया। आज हमारा मनोरथ पूर्ण होने जा रहा है। संयम जीवन में सदैव आगे बढ़ना गुरुदेव एवं गुरुणी मैया की आज्ञा पालन में

सदैव तत्पर रहना यही प्रेरणा हमारे परिवारजनों ने हमें सतत प्रदान की है।

वीर बहिनों हेमलताजी जैन एवं पूनमजी जैन ने संयम की भावना पर आधारित रोचक संवाद प्रस्तुत किया जिसको सुनकर श्रोता अभिभूत हो गये। वीर बहिन मोनिकाजी जैन ने भी अपने उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी बहिनों के संयमी जीवन की मंगल कामना करते हुए कहा कि जिसको भूलना है, उसको कभी याद मत करना और जिसको याद करना है उसको कभी मत भूलना। हमारे परिवार का अहोभाग्य है कि हमारे परिवार से पूर्व में एक एवं अभी दो बहिनें रत्नसंघ में आचार्य श्री हीराचन्द जी म.सा. के सान्निध्य में दीक्षित होने जा रही हैं। हम परिवारजन आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हम चाहते हैं कि सुश्री प्रभाजी एवं अन्तिमाजी की तरह हमारे जीवन में भी संयम का दीप जले।

श्राविका मण्डल की ओर से **श्रीमती सुधाजी जैन** ने संयम विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। **विशिष्ट अतिथि श्री पवनकुमारजी जैन** ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि मोह को जीतना बड़ा ही कठिन काम है, परन्तु मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रभाजी एवं अन्तिमाजी सांसारिक जीवन को छोड़कर, मोह को तोड़कर संयम जीवन अंगीकार करने जा रही हैं। वे संयम जीवन में निरन्तर आगे बढ़ती रहें, यही मंगल मनीषा है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पोरवाल क्षेत्र की पुण्यवानी है कि अपने यहां की जायी-जन्मी दो मुमुक्षु आत्माएँ पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से दीक्षित होने जा रही हैं, यह हम-सब के लिए गौरव का विषय है। पूर्व में पोरवाल क्षेत्र से महासती बड़े हरकंवरजी, सेवाभावी श्री नन्दीषेण मुनि जी, आत्मार्थी श्री यशवन्तमुनि जी आदि दीक्षित संत-सतियों का नामोल्लेख करते हुए आपने कहा कि पोरवाल क्षेत्र से दीक्षित संत व सतीवृन्द रत्नसंघ की जाहोजलाली में अपनी अहम् भूमिका निभा रहे हैं। दोनों बहिनों का संयमी जीवन उज्ज्वल-विमल-धवल बने, वे संयम में दृढ़ता एवं धैर्य रखकर उसका निरतिचार पालन करें, यह हम सबकी शुभ कामना है। आपके संयमी जीवन से हम-सब भी प्रेरणा प्राप्त कर संयम मार्ग पर आगे बढ़ें।

अभिनन्दन समारोह के अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा रचित 139 भजनों के संकलन **"गौतम से प्रभु फरमाते हैं"** पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि एवं संघ के निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने कहा कि हमारा रत्नसंघ अत्यन्त सौभाग्यशाली है कि हमें आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर जैसे महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। रत्नसंघ की प्रभावना में समूचे पोरवाल क्षेत्र का सक्रिय सहयोग मिल रहा है। आप लोगों ने गुरुदेव के पोरवाल क्षेत्र में पधारने के साथ ही

अपनी श्रद्धा एवं भक्ति का अनूठा परिचय दिया है। मैं वीर परिवार को भी इस अवसर पर धन्यवाद देना चाहूँगा कि आपने अपनी तीन-तीन सुपुत्रियों को रत्नसंघ में समर्पित किया है।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि पोरवाल क्षेत्र वह पावन भूमि है, जहां से संघ को अपनी प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है। चाहे स्वाध्याय संघ हो, चाहे शिक्षण बोर्ड, सभी संस्थाओं को आपने पल्लवित एवं पुष्पित किया है। अनेक महापुरुष पूर्व में भी यहां से दीक्षित हुए हैं एवं वर्तमान में भी अनेक भव्य आत्माएँ गुरुचरणों में समर्पित होकर आगे बढ़ने को तत्पर हैं। वीरपिता भाई श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन एवं समस्त वीर परिवारजनों के प्रति मैं संघ की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहूँगा कि आपने अपनी तीन-तीन सुपुत्रियों को रत्नसंघ में समर्पित कर जिनशासन की महती प्रभावना की है। आपका संयमी जीवन यशस्वी बने, आप गुरुदेव एवं गुरुणी मैया की आज्ञा पालन में सदैव तत्पर रहते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रति सजग रहें, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, **बजरिया के अध्यक्ष श्री गणपतलालजी जैन** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि आदि महानुभावों, अभ्यागत सदस्यों का तथा वीर परिवार का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया, साथ ही कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था के लिए संघ के सभी कार्यकर्त्ताओं, युवारत्नों एवं श्राविका मण्डल की सदस्याओं का तथा सौहार्द संस्था का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री पारसचन्दजी जैन एवं शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन, जोधपुर ने किया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षा-समारोह

दिनांक 15 मई, 2013 का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा। आगन्तुकों ने प्रात: आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। सैंकड़ों लोग वीर परिवार के निवास-स्थान पर पहुँचे, जहाँ से अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई। अभिनिष्क्रमण यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं विभिन्न श्रीसंघों से पधारे भाई-बहिन तो थे ही, सवाईमाधोपुर एवं आसपास के संघ-समाज और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के महानुभावों ने भी अभिनिष्क्रमण यात्रा की शोभा बढ़ायी। अन्त में अभिनिष्क्रमण यात्रा गुरुचरणों में बालमन्दिर सार्वजनिक उद्यान प्रांगण पहुँची, जिसके पूर्व हजारों भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया था। सामायिक-साधना करने वालों

की बैठने की अलग व्यवस्था थी, तो सबसे आगे वीर परिवारजनों के विराजने हेतु अलग से व्यवस्था सुनिश्चित थी। प्रातः 11.30 बजे सार्वजनिक उद्यान के प्रांगण में आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द पधार गए। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** द्वारा प्रस्तुत वैराग्यपरक भजन- "दीक्षा में गुण हैं अपार वीरजी बखाण्या रे" से प्रवचन सभा का शुभारम्भ हुआ। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी, श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी, म.सा., महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा., महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा. ने दीक्षा-महोत्सव में उपस्थित जनसमुदाय को मंगलमय उद्बोधन फरमाते हुए उत्कृष्ट वैराग्य एवं संयम-भावना की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने की प्रभावी प्रेरणा की। आचार्यप्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द ने दीक्षा-महोत्सव के अवसर पर समागत महानुभावों से कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा की। वेश परिवर्तन के पश्चात् लगभग 11.45 बजे मुमुक्षु बहिनें गुरुचरणों में उपस्थित हुईं। दीक्षार्थी बहिनों ने आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन किया। **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** ने साध्वीवेश में समुपस्थित दीक्षार्थी बहिनों से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी कर लें। दीक्षार्थी बहिनों ने माता-पिता, पारिवारिकजन एवं उपस्थित जनसमुदाय से आशीर्वाद लिया और क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर ने माता-पिता एवं पारिवारिकजनों से खड़े होकर दीक्षा की अनुज्ञा चाही तो विरक्ता बहिनों के दादा-दादी, माता-पिता, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। आचार्यप्रवर के संकेत पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ नगर परिषद् क्षेत्र के सभी पदाधिकारियों ने एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी पदाधिकारियों ने खड़े होकर अनुमति प्रदान की। दीक्षार्थी बहिनों द्वारा सभी संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करने के बाद आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर दीक्षार्थी बहिनों को आलोचना-सूत्र के पाठ से ध्यान करवाया। कायोत्सर्गशुद्धि-सूत्र के अनन्तर संतरत्नों ने समवेत स्वर में लोगस्स का पाठ उच्चारित किया।

जैसे ही आचार्यप्रवर ने 'करेमि भन्ते' के पाठ से मुमुक्षु बहिनों को सावद्य योगों का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान करवाया, जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-विधि देख-सुन रहा था, ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर

पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, नवदीक्षिता महासती श्री प्रभाजी म.सा., महासती श्री अन्तिमाजी म.सा. की जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया। भक्तों ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा-मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावना पूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धावनत था, दीक्षा और संयम के महत्त्व के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभभावना थी। 'नमोत्थु णं' के साथ दीक्षा-विधि परिपूर्ण होने पर नवदीक्षिता साध्वी महासतीवृन्द के बीच में सुशोभित हुई। प्रणाम करने वाली स्वयं प्रणम्या, श्रद्धेया एवं वंदनीया बन गई। यह है भागवती श्रमणी दीक्षा का प्रभाव, संयम-प्रवेश का प्रभाव।

इस अवसर पर **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया- "संसार में अनेक मंत्र हैं, तंत्र हैं जो विघ्न निवारण कर सकते हैं। शक्ति का संचरण भी कर सकते हैं। मंत्रों के स्मरण से, चिन्तन से, मनन से तीव्र बुखार उतर सकता है। बिच्छु और साँप का जहर उतारने वाले आपने देखें होंगे, सुने होंगे। आकाश में उड़ान भरने वाले मंत्र सुने होंगे। मंत्रों से वर्षा हो सकती है। सुख-शान्ति और आनन्द देने वाले कई मंत्र हो सकते हैं, पर **भगवान ने एक ऐसा मंत्र बताया जो आत्मा को पवित्र बना सकता है, पूज्य बना सकता है, आराधक बना सकता है। भगवान ने जो मंत्र बताया वह पापों को दूर भगा सकता है। वह मंत्र है 'सामायिक का', वह मंत्र है 'समाधि का', वह मंत्र है 'समरसता का'। इस मंत्र को दीक्षा मंत्र भी कह सकते हैं।** जो बहनें थोड़ी देर पहले आप लोगों को चरण वन्दन कर रही थीं, दीक्षा मंत्र ग्रहण करते ही मुमक्षु बहिनें आप सबकी वन्दनीया हो गईं। यह है दीक्षा मंत्र का प्रभाव।

दीक्षा-महोत्सव एवं प्रवचन का कार्यक्रम लगभग 1.00 बजे तक चला। आचार्यप्रवर-प्रभृति संत-सतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना ही रहा, अपूर्व शांति, उल्लास और उत्साह भी देखा गया।

व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे इस अवसर पर आचार्यप्रवर से व्रत-प्रत्याख्यान अवश्य अंगीकार कर, संयम व त्याग का सार्थक अनुमोदन करें, प्रेरणा के फलस्वरूप पचाला निवासी श्री माणकचन्दजी जैन ने गुरुदेव के मुखारविन्द से सपत्नीक आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। **दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसंग पर नगर परिषद् क्षेत्र के समस्त बूचड़खाने एवं मांस-विक्रय की दुकानें बंद कराई गई।** जीवदया के इस महान कार्य में नगर परिषद् के पार्षद श्री विनोदजी जैन का सराहनीय सहयोग रहा।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक **संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने दीक्षाप्रदाता आचार्यप्रवर सहित पूज्य संत-सतीवर्ग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने भाव प्रगट किये कि अनेक महान आत्माओं ने यहाँ जन्म लेकर संयम मार्ग पर अपने आपको आगे बढ़ाया है। रत्नसंघ परम्परा से इस क्षेत्र का सुदीर्घ सम्बन्ध रहा है। पूर्व में यहाँ से दूणी के पास के श्री ताराचन्द जी बघेरवाल एवं उनके दो सुपुत्रों श्री नन्दलाल जी एवं श्री भुवान जी ने क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. के शासनकाल में दीक्षा ली, यहाँ के जाने माने सेवाभावी श्री नन्दीषेण मुनि जी म.सा. ने परमाराध्य गुरुदेव पूज्य आचार्य भगवन्त आचार्य हस्ती के चरणों में दीक्षा अंगीकार की। वे शासन की गौरव गरिमा को बढ़ा रहे है। यहीं के लाल श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. ने जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार कर अपना जीवन सार्थक किया है। पूर्व में यहाँ से पूज्या महासती जी मल्लाजी म.सा. के पास चार महासतियाँ जी म.सा. की दीक्षाएँ सम्पन्न हुई। वर्तमान आचार्य भगवन्त के शासनकाल में यहाँ से आठ दीक्षाएँ हो चुकी हैं व आज के पावन अवसर पर दो बहिनें दीक्षा ग्रहण करने जा रही हैं। इन सब महान् आत्माओं को मैं अपनी ओर से एवं आप सब की ओर से एवं संघ की ओर से नमन करता हूँ।

कार्यक्रम संचालक श्री प्रकाशजी सालेचा ने महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रसारित की। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जनसमुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए हर्ष-हर्ष, जय-जय, गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकारों से प्रांगण को गुंजायमान करता रहा। बाद में आदर्श विद्या मन्दिर प्रांगण में दीक्षा-महोत्सव में पधारे सभी महानुभावों ने सुमधुर भोजन ग्रहण किया।

सवाईमाधोपुर नगर परिषद् क्षेत्र के आबाल-वृद्ध सभी संघ सदस्य पूरे दो दिन दीक्षा-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों से कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी बनी रही। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में हर आगत ने सवाईमाधोपुर नगर परिषद् क्षेत्र श्रीसंघ की आत्मीयता और सेवाभावना की सराहना की।

बड़ी दीक्षा 22 मई, 2013 को सम्पन्न

नवदीक्षिता साध्वियों की बड़ी दीक्षा वैशाख शुक्ला 12, बुधवार, 22 मई, 2013 को परम पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से आलनपुर विराजने पर किसान भवन में सम्पन्न हुई। आचार्यप्रवर ने पाँच महाव्रतों का महत्त्व समझाकर नवदीक्षिता साध्वियों को उनमें

आरूढ़ किया। आलनपुर श्रीसंघ द्वारा सोत्साह इस आयोजन का लाभ लिया गया। नवदीक्षिता साध्वियों प्रभा जी एवं अन्तिमा जी का नाम क्रमशः **महासती श्री प्रज्ञाश्री जी** एवं **महासती श्री संवेगश्री जी** रखा गया है।

चेन्नई में मुमुक्षु सुश्री शीतलजी आँचलिया की जैन भागवती दीक्षा 15 मई, 2013 को सानन्द सम्पन्न

वैशाख शुक्ला पंचमी, बुधवार 15 मई, 2013 को गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन चेन्नई के प्रांगण में जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की मंगल मनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के शुभाशीर्वाद से व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु सुश्री शीतलजी आँचलिया, शोरापुर की जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 11 के पावन सान्निध्य में आयोजित पावन प्रव्रज्या महोत्सव हजारों भक्तों के जयनादों के बीच उमंग उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

शोभा-यात्रा

14 मई, 2013 को प्रातः 8.30 बजे मुमुक्ष बहन सुश्री शीतलजी आँचलिया की शोभा यात्रा का भव्य आयोजन रखा गया। शोभा-यात्रा C.U.Shah Bhawan, New No. 4 (old No.-78/79) Ritherdon Road, Puraswalkam, Chennai से प्रारम्भ हुई, जिसमें बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित बग्गी में विरक्ता बहन एवं उनके परिवारजन विराजित थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा। हजारों गुरुभ्राता एवं श्रद्धालुजन कतारबद्ध हो अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थे। वेपेरी क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से निकलती हुई शोभायात्रा का भव्य नज़ारा देखकर दर्शक भावाभिभूत हो गये। वेपेरी के सभी प्रमुख स्थानों पर श्रावकों द्वारा विभिन्न स्थानों पर शीतल पेय एवं अल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था की गई। अत्यधिक गर्मी होने के बावजूद भी शोभायात्रा में उत्साह देखा गया। शोभायात्रा Keshvana House, E.V.K. Sampath Road, Veppery, आकर सम्पन्न हुई। शोभायात्रा में सम्मिलित मुमुक्षु बहन एवं वीर परिवारजनों तथा उपस्थित महानुभावों ने दर्शन-वन्दन करने के साथ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन समारोह

14 मई, 2013 को अपराह्न 3.00 बजे मुमुक्षु बहन सुश्री शीतलजी आँचलिया एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ चेन्नई के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन, चेन्नई के प्रांगण में आयोजित हुआ।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, चेन्नई ने की। तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री सुधीरजी लोढ़ा, चेन्नई एवं गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन के सचिव श्री गौतमचन्दजी बैद, चेन्नई, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री कान्तिलालजी चौधरी, धुलिया, संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़, चेन्नई, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, जयपुर, चेन्नई दीक्षा समिति के सह-संयोजक श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कांकरिया, मंत्री श्री सुधीरजी सुराणा आदि ने मंच को सुशोभित किया।

मुमक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया एवं उनके माता-पिता सहित परिवारजनों को आत्मीयता से आमंत्रित कर मंचासीन करवाया गया।

गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन प्रांगण का विशाल मंच अत्यन्त भव्यता लिये हुए था। अभिनन्दन समारोह में मंगलाचरण की प्रस्तुति श्रीमती इन्द्राजी बोहरा, श्रीमती वसन्ताजी सुराणा, श्रीमती मनीषाजी कांकरिया एवं श्रीमती शशिजी कांकरिया ने दी। स्वागत गीत श्राविका मण्डल की सदस्या श्रीमती उषाजी चोरड़िया ने प्रस्तुत किया। दीक्षा आयोजन समिति के सह-संयोजक श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल ने सभी अभ्यागतों का स्वागत करते हुए कहा कि आँचलिया परिवार जिन्होंने अपने कलेजे की कोर को रत्नसंघ में समर्पित किया, उसके लिए मैं आँचलिया परिवार का हार्दिक अभिनन्दन, सत्कार एवं सम्मान करता हूँ।

विशिष्ट अतिथि श्री सुधीरजी लोढ़ा एवं श्री गौतमचन्दजी बैद का माला, शॉल व स्मृति चिह्न द्वारा बहुमान किया गया। अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया के वीर बड़े पिता श्री रमेशचन्दजी आँचलिया, वीर बड़ीमाता श्रीमती कंवरबाईजी आँचलिया, वीर बड़ेपिता श्री शांतिलालजी आँचलिया, वीर बड़ीमाता श्रीमती वसन्ताबाईजी आँचलिया, वीर बड़े पिता श्री ओमप्रकाशजी आँचलिया एवं वीर बड़ीमाता

श्रीमती मीनाबाईजी आँचलिया, वीरपिता श्री कान्तिलालजी आँचलिया, वीरमाता श्रीमती वनिताबाईजी आँचलिया एवं सभी वीर परिवारजनों में पुरुष सदस्यों का माला व शॉल द्वारा एवं महिला सदस्यों का माला व चुन्दड़ी द्वारा बहुमान किया गया। वीर परिवार सहित माता-पिता को संघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र भी मंचासीन अतिथिगण व पदाधिकारियों द्वारा ससम्मान भेंट किया गया।

संयम-मार्ग की पथिका मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया का स्वागत-बहुमान माला व चुन्दड़ी से श्राविका मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, जयपुर एवं अन्य सदस्याओं द्वारा किया गया। विरक्ता बहन को अखिल भारतीय रत्नसंघ से दिए जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन संघ महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा द्वारा एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई द्वारा दिए जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन श्री उम्मेदराजजी हुण्डीवाल, चेन्नई द्वारा किया गया।

संघ कार्याध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, चेन्नई, विशिष्ट अतिथियों मंचासीन महानुभावों एवं राष्ट्रीय पदाधिकारीयों ने अभिनन्दन-पत्र मुमुक्षु बहिन के कर-कमलों में सादर समर्पित किया। **मुमक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया** ने ओजस्वी वाणी में आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन, संत-सतीमण्डल के चरणों में वन्दन करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पारिवारिकजनों ने मुझे बचपन में सुसंस्कार दिए। माता-पिता ने संयम के प्रति मेरी दृढ़ता को देखते हुए सहर्ष दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। आचार्य भगवन्त ने अनन्त कृपा कर मुझे संयम-मार्ग पर आगे बढ़ाया। आज मेरा मनोरथ पूर्ण होने जा रहा है। संयम जीवन में सदैव आगे बढ़ना गुरुदेव एवं गुरुणी मैया की आज्ञा-पालन में सदैव तत्पर रहना, यही प्रेरणा मेरे परिवारजनों ने मुझे सतत प्रदान की है।

वीर परिवार से श्रीमती सपनाजी, श्रीमती शिल्पाजी एवं श्रीमती सारिकाजी ने वैराग्यप्रद मधुर भजन प्रस्तुत किया, जिसको सुनकर श्रोता अभिभूत हो गये। वीर भ्राता श्री सुमितजी आँचलिया ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। श्री अशोककुमारजी बाघमार, गजेन्द्रगढ़ एवं श्री पारसमलजी मूथा, बल्लारी वालों ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए मुमुक्षु बहिन को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया एवं उनके संयमी जीवन की मंगल कामना की।

विशिष्ट अतिथि **श्री गौतमचन्दजी बैद** ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि उनके लिए एवं गुरु श्री शांतिविजय जैन कॉलेज फोर वुमेन के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि उनके प्रांगण में भागवती दीक्षा होने जा रही है। उन्होंने दीक्षार्थी बहन एवं रत्नसंघ को हार्दिक शुभकामना दी।

विशिष्ट अतिथि **श्री सुधीरजी लोढ़ा** ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जैन

धर्म विश्व का श्रेष्ठ धर्म है। संख्या में कम है, पर इसके अनुयायी समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते है। हमें जैन धर्म के माध्यम से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। उन्होंने विरक्ता बहन को संयम-पथ पर अग्रसर होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ दी।

शासन सेवा समिति के सह-संयोजक **श्री कैलाशचन्दजी हीरावत** ने आशीर्वचन के रूप में कहा कि संयम ही जीवन का सार है। अत्यन्त विशिष्ट चरित्र आत्मा को अच्छे कर्मों के उदय से एवं स्वयं के पुरुषार्थ से यह अवसर प्राप्त होता है। हम सभी संयम पथ पर विरक्ता बहन के आगे बढ़ने की अनुमोदना करने के लिए एकत्रित हुए हैं। उन्होंने वीर परिवार को भी उनके त्याग की अनुमोदना करते हुए साधुवाद कहा।

संघ महामंत्री **श्री आनंदजी चौपड़ा** ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि संयम-पालन जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है। साधना सरल नहीं होती। पग-पग पर बाधाएँ आती हैं। संयमपथ की पथिक व अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती विरक्ता बहिन को हार्दिक शुभकामनाएँ। उन्होंने विरक्ता बहन को उनके त्याग के लिए एवं वीर परिवार को उनके साहस एवं अनुमोदना के लिए एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई को उनके आतिथ्य सत्कार के लिए हार्दिक साधुवाद दिया।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **श्री पी. शिखरमल सुराणा**, चेन्नई ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि अत्यन्त प्रमोद का विषय है कि कई वर्षों के बाद चेन्नई में रत्नसंघ में भागवती दीक्षा होने जा रही है। वीर परिवार व दीक्षार्थी बहिन का स्वागत एवं अभिनन्दन रत्नसंघ की ओर से करना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। दीक्षार्थी बहिन का संयमी जीवन अत्यन्त उज्ज्वल हो। उन्होंने ऐसी शुभकामनाएँ दी।

इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना** का लिखित संदेश भी प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने विरक्ता बहिन के सफल संयम जीवन की हार्दिक मंगल कामना करते हुए भावाभिव्यक्ति की- "हे महाभागा! संयम मार्ग में बढ़ने हेतु उद्यत आपके कदम सदा गतिशील रहकर सिद्धि सोपान पर ही विराम लें, आपका संयम जीवन भव्य जीवों का पथ प्रशस्त करने हेतु 'हीरक' मणि समान देदीप्यमान हो। आपके निरतिचार विमल यशस्वी साधक जीवन पर जाति, कुल, परिवार ही नहीं सकल संघ को 'मान' हो।"

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के मंत्री **श्री सुधीरजी सुराणा** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि आदि महानुभावों, अभ्यागत सदस्यों एवं वीर परिवार का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया साथ ही कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था के लिए संघ के सभी कार्यकर्त्ताओं, युवारत्नों, श्राविका मण्डल की सदस्याओं का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले

सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व मंत्री श्री जवाहरलालजी कर्नावट, चेन्नई ने किया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षा-समारोह

दिनांक 15 मई, 2013 का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा। आगन्तुकों ने प्रातः महासतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। सैंकड़ों लोग वीर परिवार के निवास स्थान पर पहुँचे। जहाँ से अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई। अभिनिष्क्रमण यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं विभिन्न श्रीसंघों से पधारे भाई-बहिन तो थे ही, चेन्नई एवं आसपास के संघ-समाज और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के महानुभावों ने भी अभिनिष्क्रमण यात्रा की शोभा बढ़ायी। अभिनिष्क्रमण यात्रा महासतीवृन्द की सेवा में गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन प्रांगण जाकर पहुँची, जिसके पूर्व हजारों भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया था। सामायिक-साधना करने वालों की बैठने की अलग व्यवस्था थी, तो सबसे आगे वीर परिवारजनों के विराजने हेतु पूर्व से व्यवस्था सुनिश्चित थी। प्रातः 11.30 बजे गुरु श्री शांति विजय जैन कॉलेज फोर वुमेन प्रांगण में महासतीवृन्द पधार गए थे। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के मंगलाचरण से प्रवचन सभा का शुभारम्भ हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि महासतीवृन्द ने दीक्षा-महोत्सव में उपस्थित जनसमुदाय को मंगलमय उद्बोधन फरमाते हुए उत्कृष्ट वैराग्य एवं संयम-भावना की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने की प्रभावी प्रेरणा की।

महासतीवृन्द ने दीक्षा महोत्सव के अवसर पर समागत महानुभावों से कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा की। वेश परिवर्तन के पश्चात् लगभग 11.45 बजे मुमुक्षु बहिन महासती मण्डल की सेवा में उपस्थित हुई। मुमक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया ने महासतीवृन्द को वन्दन-नमन किया। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने साध्वीवेश में समुपस्थित मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी कर लें। मुमक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया ने माता-पिता, पारिवारिकजन एवं उपस्थित जनसमुदाय से आशीर्वाद लिया और क्षमायाचना की।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने माता-पिता एवं पारिवारिकजनों से खड़े होकर दीक्षा की अनुज्ञा चाही तो मुमक्षु बहिन सुश्री शीतलजी आँचलिया के माता-

पिता, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। महासती मण्डल के संकेत पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ चेन्नई के सभी पदाधिकारियों ने एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी पदाधिकारियों ने भी खड़े होकर अनुमति प्रदान की। दीक्षार्थी बहिन द्वारा सभी संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करने के बाद महासतीजी ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर दीक्षार्थी बहिन को आलोचना-सूत्र के पाठ से ध्यान करवाया। कायोत्सर्गशुद्धि-सूत्र के अनन्तर महासतीवृन्द ने समवेत स्वर में लोगस्स का पाठ उच्चारित किया।

लगभग दोपहर 1 बजे जैसे ही व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने 'करेमि भन्ते' के पाठ से मुमुक्षु बहिन को सावद्य योगों का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान करवाया, जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-विधि देख-सुन रहा था, ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, नवदीक्षिता महासती श्री शीतलजी म.सा. की जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया। भक्तों ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा-मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावना पूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धावनत था, दीक्षा और संयम के महत्त्व के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभभावना थी। नमोत्थुणं के साथ दीक्षा-विधि परिपूर्ण होने पर नवदीक्षिता साध्वी महासतीवृन्द के बीच में सुशोभित हुई। प्रणाम करने वाली स्वयं प्रणम्या, श्रद्धेया एवं वंदनीया बन गई। यह है भागवती श्रमणी दीक्षा का प्रभाव, संयम प्रवेश का प्रभाव। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. ने प्रेरक संयम-जीवन के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए आगन्तुक जनसमुदाय को नियम-व्रत अंगीकार करने की प्रेरणा की। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने दीक्षा-दिवस को प्रवचन माता की गोद में जाने का, पर से हटकर स्व में आने का एवं यम-नियम में प्रवेश का दिन बताया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के मंगल संदेश भी इस अवसर पर प्राप्त हुए, जिनमें मुमुक्षु बहनों के उत्कृष्ट संयम जीवन की शुभ कामनाएँ की गई।

दीक्षा-महोत्सव एवं प्रवचन का कार्यक्रम लगभग 1.00 बजे तक चला।

महासतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना ही रहा, अपूर्व शांति, उल्लास और उत्साह भी देखा गया। व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे इस अवसर पर महासती मण्डल से व्रत-प्रत्याख्यान अवश्य अंगीकार कर, संयम व त्याग का सार्थक अनुमोदन करें।

कार्यक्रम संचालक वीरभ्राता श्री नरेन्द्र जी कांकरिया ने महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रसारित की। महासतीवृन्द के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जनसमुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए हर्ष-हर्ष, जय-जय, गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकारों से प्रांगण को गुंजायमान करता रहा। बाद में गौतम किरण, एटकिंसन रोड़, वेपेरी, चेन्नई में दीक्षा महोत्सव में पधारे सभी महानुभावों ने सुमधुर भोजन ग्रहण किया।

चेन्नई श्रीसंघ के आबाल-वृद्ध सभी सदस्य पूरे दो दिन दीक्षा-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों से कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी बनी रही। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में हर आगत ने चेन्नई श्रीसंघ की आत्मीयता और सेवाभावना की सराहना की।

बड़ी दीक्षा 22 मई, 2013 को सम्पन्न

नवदीक्षिता साध्वी की बड़ी दीक्षा वैशाख शुक्ला 12, बुधवार, 22 मई, 2013 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के मुखारविन्द से जैन भवन, साहूकारपेट में सम्पन्न हुई। श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकार पेट द्वारा सोत्साह इस आयोजन का लाभ लिया गया। नवदीक्षिता साध्वी का नाम **महासती श्री लक्षितप्रभा जी** रखा गया है।

मान व्याख्यान माला खुली पुस्तक परीक्षा परिणाम

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा आयोजित **मान व्याख्यान माला** खुली पुस्तक परीक्षा के परिणाम निम्न प्रकार से रहे हैं-

प्रथम पुरस्कार (एक) राशि 31,000/- श्रीमती प्रमिला अशोक जी जैन-इन्दौर (484), **द्वितीय पुरस्कार (एक) राशि 15,000/-** श्रीमती चंचल शशीकान्त जी कोठारी-पुणे (482), **तृतीय पुरस्कार (एक) राशि 10,000/-** श्रीमती प्रतिभा खेमचन्द जी जैन-दसाई-धार (481), **चतुर्थ पुरस्कार (दो) राशि 5,000/- (प्रत्येक)-** श्री तरूणभाई रसिकलाल जी खाटडिया-पुणे (479), श्री विजय राजेन्द्रकुमार संचेती-उज्जैन (479), **प्रोत्साहन पुरस्कार (दस) राशि 1,000/-**

(प्रत्येक)– श्रीमती कविता सुरेश जी सालेचा–जोधपुर (478), श्रीमती पुष्पा हस्तीमल जी गोलेछा–ब्यावर (478), श्रीमती उषाकिरण किशोरचन्द जी अबानी–जोधपुर (477), सुश्री दीपिका पारसमल जी रांका–पाली (477), श्री धर्मीचन्द धोकलचन्द जी रांका–ब्यावर (477), श्री राजकुमार केवलचन्द जी बांठिया–पाली (477), डॉ. मनीषा धर्मपत्नी डॉ. कृष्ण जी सिंहाल–धुलिया (476), श्रीमती प्रतिभा प्रदीपकुमार जी गांधी–पुणे (476), श्रीमती रेखा पंकज जी कोठारी–अजमेर (476), श्रीमती सलोनी विकास जी जैन–नलागढ़ (476), **सांत्वना पुरस्कार (बीस) राशि 500/– (प्रत्येक)**– श्री महेन्द्र मोहनलाल जी सुमन–पाली (475), श्रीमती सविता जितेन्द्र जी बोहरा–जोधपुर (475) , श्रीमती इन्दू कमलेश जी जैन–मुम्बई (474), श्रीमती जैना अनुजकुमार जी जैन–धार (474), श्री लक्ष्मीचन्द चुन्नीलाल जी छाजेड़–समदड़ी (474) सुश्री प्रीति मूलचन्द जी जैन–भरतपुर (474), श्रीमती प्रियंका अमित जी मेहता–जयपुर (474), श्रीमती सुनीता राजकुमार जी नवलखा–कोटा (474), श्रीमती विजया राजेन्द्र जी मल्हारा–जलगांव (474), श्रीमती विनिता संजीव जी बोथरा–जयपुर (474), श्री गौरव रविन्द्र जी जैन–सवाईमाधोपुर (473), श्रीमती प्रमिला विनोदकुमार जी बोहरा–ब्यावर (473), श्रीमती रोमा अनुपम जी मेहता–जोधपुर (473), सुश्री अपूर्वा अशोक कुमार जी सेठिया–चित्तौड़गढ़ (472), श्री अरुण शिवलाल जी सुराणा–जयपुर (472), श्रीमती बीना सुनीलकुमार जी मुणोत–नसीराबाद (472), श्रीमती सरला शान्तिलाल जी कांकरिया–जलगांव (472), श्रीमती सोना मनोजकुमार जी जैन–हिण्डौनसिटी (472), श्रीमती सुनीता विपिन कुमार जी नाहटा–ब्यावर (472), श्रीमती सुशीला विजय जी हीरावत–जयपुर (472)

बनें आगम अध्येता

गुरुद्वय आचार्य हीराचन्द्र उपाध्याय मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में आगम अध्येता श्रावक–श्राविकाएँ तैयार करने हेतु अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम स्वाध्याय का अनुष्ठान '**बनें आगम अध्येता**' प्रारम्भ किया जा रहा है। जिसमें श्रावक–श्राविका दोनों ही वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु–साध्वी भी भाग ले सकते हैं। सर्वप्रथम आचार प्रधान आगम **दशवैकालिक सूत्र** को रखा है। आगामी काल में **उत्तराध्ययन सूत्र, अन्तगडदशा सूत्र, नन्दी सूत्र, उपासकदशांग सूत्र** आगमों की परीक्षा प्रस्तावित है। उक्त पांच आगमों की परीक्षा केबाद, इनके अध्येताओं में से **पंचागम अध्येता** प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया जायेगा। जिसमें से श्रेष्ठ पंचागम अध्येता का चयन करके विशेष रूपं से सम्मानित किया जायेगा।

1. सर्वप्रथम बनें आगम अध्येता प्रतियोगिता का फार्म 15 जुलाई 2013 तक भरकर भिजवाएं। फार्म का प्रारूप मई 2013 की जिनवाणी में दिया गया है।
2. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित दशवैकालिक सूत्र को मंगवाकर उसका स्वाध्याय प्रारम्भ करें।
3. फार्म प्राप्त होने पर आपके पोस्टल पते या मेल पते पर 100-100 अंक के दो मूल्यांकन प्रश्नपत्र 25 जुलाई 2013 तक पहुंच जायेंगे। जिनमें प्रथम मूल्यांकन प्रश्नपत्र अध्ययन 1 से 5 तथा द्वितीय मूल्यांकन प्रश्नपत्र अध्ययन 6 से 10 पर आधारित होगा। आपको प्रथम मूल्यांकन प्रश्नपत्र के प्रश्नों के उत्तर 31 अगस्त 2013 तक तथा द्वितीय मूल्यांकन प्रश्नपत्र के प्रश्नों के उत्तर 15 अक्टूबर 2013 तक घर से ही लिखकर हमें प्रेषित करने हैं।
4. **दशवैकालिक सूत्र** के सम्पूर्ण 1 से 10 अध्ययनों की समापक परीक्षा **14 नवम्बर 2013** को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में आयोजित होगी, जो 80 अंक की होगी। परीक्षा में आप पुस्तक भी साथ रख सकते हैं।
5. मूल्यांकन प्रश्नपत्रों के उत्तर फुल स्केप साइज कागजों पर नीले रंग की स्याही के बालपेन से लिखकर भेजने हैं।
6. मूल्यांकन उत्तर पुस्तिकाओं को जांचकर उनमें प्राप्त अंकों को 10% करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को **दशवैकालिक आगम अध्येता** की उपाधि से अलंकृत करने के साथ ही क्रमशः 31,000/-प्रथम विजेता को, 21,000/- द्वितीय विजेता को और 11,000/- तृतीय विजेता को पुरस्कार स्वरूप राशि प्रदान की जायेगी। परीक्षा में 70 या अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों में प्रत्येक को 500 रूपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे।
7. इस 'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अपेक्षित हो तो आप सुज्ञ श्राविका डॉ. मंजुला बम्ब-09314292229, श्रीमती बीना मेहता महासचिव, जोधपुर-09772793625, श्रीमती तृप्ति सिंघवी-09828341834, श्रीमती चन्द्रा हीरावत-09610357011, सौ. संगीता बोहरा,चेन्नई-09444322714, सौ. विजया मल्हारा, जलगाँव-0257-2223223 से सम्पर्क कर सकते हैं। फार्म भरकर स्वीकृति प्राप्त करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ ही परीक्षा देने के अधिकारी रहेंगे।

पत्राचार का पता: श्रीमती पूर्णिमा लोढा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न

श्राविका मण्डल, ए-7 महावीर नगर, जयपुर(राजस्थान) फोन नं. 9829019396

शिक्षण बोर्ड की पुस्तकें गुजराती भाषा में उपलब्ध

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय की पुस्तकों का गुजराती भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया गया है। गुजराती में अनुवाद करने का कार्य संघसेवी सुश्रावक श्रीमान् चैनराज जी जवाहरलाल जी कोठारी-पालड़ी, अहमदाबाद द्वारा किया गया है। जिन भाई-बहिनों को उक्त गुजराती अनुवाद की पुस्तकें मंगवानी हो वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें- (1) अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001, फोनः 0291-2630490, (2) श्री पदमचन्द जे. कोठारी, जनरल फाइनेन्स कार्पोरेशन, 37, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद(गुजरात), फोनः 079-22160675(का.) 26643815(नि.)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा 30 जून को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 30 जून, 2013, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जा रही है। परीक्षा में भाग लेने वाले जिन भाई-बहिनों ने अभी तक आवेदन नहीं किया है, वे शीघ्र अपना आवेदन पत्र शिक्षण बोर्ड कार्यालय में भिजवायें। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार संबंधी संशोधित व्यवस्था इस प्रकार रहेगी- **कक्षा 1 से 4 तक-** 50 से 69.99 अंक आने पर 75/- रुपये का, 70 व उससे अधिक अंक आने पर 100/- रुपये का। **कक्षा 5 से 8 तक-** 50 से 69.99 अंक आने पर 100/- रुपये का। 70 व उससे अधिक अंक आने पर 150/- रुपये का। **कक्षा 9 से 12 तक-** 50 से 69.99 अंक आने पर 200/- रुपये का, 70 व उससे अधिक अंक आने पर 250/- रुपये का। **वरीयता सूची में स्थान पाने वालों के लिए- कक्षा 1 से 4 तक- प्रथम**-2000/- रुपये, **द्वितीय**- 1500/- रुपये, **तृतीय**-1000/-रुपये। **कक्षा 5 से 8 तक- प्रथम**- 2500/- रुपये, **द्वितीय**- 2000/- रुपये, **तृतीय**- 1500/- रुपये। **कक्षा 9 से 12 तक- प्रथम**- 4000/- रुपये, **द्वितीय**- 3000/- रुपये, **तृतीय**- 2000/- रुपये।

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं से विनम्र निवेदन है कि परीक्षा के दिन परीक्षा स्थल पर पधारकर परीक्षार्थियों के उत्साह में वृद्धि करने की कृपा करावें। - *सुरेश बी. चोरड़िया, संयोजक*

पल्लीवाल क्षेत्र में प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम दिनांक 17 से 19 मई 2013 तक पल्लीवाल क्षेत्र में आयोजित किया गया। उक्त प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, पल्लीवाल क्षेत्र संयोजक श्री शिवदयाल जी जैन-हरसाना, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर, स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री राजेश जी जैन-हिण्डौन सिटी की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री महावीर जी जैन-गंगापुर सिटी की भी अंशकालीन सेवाएं प्राप्त हुई। प्रचार कार्यक्रम पल्लीवाल क्षेत्र के गंगापुर सिटी, करौली, नई मण्डी हिण्डौन सिटी, वर्द्धमान नगर, रूपबास, मलपुरा, भरतपुर, गोपालगढ, पहरसर, नदबई, खेरली, खौह, लक्ष्मणगढ, हरसाना, मण्डावर में आयोजित हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 7 मांगें प्राप्त हुई। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से लगभग 12 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए तथा फार्म भरवाए गए। प्रचार के दौरान हिण्डौन सिटी में व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा तथा मौजपुर में व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

स्वप्निका परीक्षा में 76 केन्द्रों पर बैठे 2000 परीक्षार्थी

स्वर्णिम प्रभात, सुनहरे पल, आह्लादक क्षण, ऐसी ही मंगल घड़ियाँ आई वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 23 मई, 2013 को, जिस दिन स्वप्निका परीक्षार्थी उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित परीक्षा की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही 12 बजे, सभी 76 केन्द्रों पर परीक्षार्थियों के उत्साह-उमंग-उल्लास का वर्षण शान्त भाव से प्रश्न-पत्र पर उत्तर लेखन से हुआ। गुरुकृपा की सबसे विशेष बात रही कि गुरुवार का दिवस कार्यदिवस होते हुए भी देश भर में विभिन्न स्थानों/प्रान्तों- राजस्थान, गुजरात, पंजाब, दिल्ली, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि में 2000 से भी अधिक परीक्षार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, सभी प्रतिभागियों को परीक्षा की प्रभावना स्वरूप पुरस्कार प्रदान किया गया(पुरस्कार स्वरूप स्वप्निका का विशेष बैग प्रदान किया गया)। सभी परीक्षार्थियों के साथ-साथ स्वप्निका के सभी प्रतिनिधियों एवं

स्वप्निका समिति द्वारा भेजे गये परीक्षकों ने भी अपने कार्य को पूर्णतया अच्छे एवं व्यवस्थित रूप से अंजाम दिया। -*नमन मेहता*

जैन न्याय पर दिल्ली में कार्यशाला सम्पन्न

भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलोजी, दिल्ली द्वारा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के सहयोग से 19 से 30 अप्रेल, 2013 तक 'जैन न्याय' (Jain Logic) पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 30 से अधिक प्रतिभागियों ने विशिष्ट विद्वानों से अध्ययन किया। प्रो. वी.एन. झा-पुणे, प्रो. दयानन्द भार्गव-जयपुर, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-दिल्ली, प्रो. वीरसागर जैन-दिल्ली एवं प्रो. हरेराम त्रिपाठी-दिल्ली आदि विद्वानों ने जैन न्याय पर व्याख्यान दिए एवं प्रमाण-मीमांसा, रत्नाकरावतारिका, अष्टसहस्री, प्रमाणनयतत्त्वालोक ग्रन्थों का अध्यापन किया। 19 अप्रेल को उद्घाटन एवं 30 अप्रेल को समापन समारोह में विशिष्ट अतिथियों ने सम्बोधित किया।

प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर अध्ययनशाला

भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली के द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली के सहयोग से 12 मई 2013 को प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन हेतु एक ग्रीष्मकालीन अध्ययन शाला प्रारम्भ की गई है जो 9 जून तक चलेगी। अध्ययनशाला में प्रारम्भिक एवं उच्चतर कक्षाओं में देश के विभिन्न भागों के लगभग 40 विद्वान् एवं साध्वीवृन्द अध्ययन कर रहे हैं। अध्ययनशाला में प्रो. गयाचरण त्रिपाठी-दिल्ली, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य-शान्ति निकेतन, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. दामोदर शास्त्री-लाडनूँ, प्रो. फूलचन्द जैन-दिल्ली, डॉ. कमलेश कुमार जैन-दिल्ली आदि विद्वानों ने अध्यापन कार्य किया है।

समग्र जैन चातुर्मास सूची-2013 का प्रकाशन

समग्र जैन चातुर्मास सूची का विगत 34 वर्षों से प्रति वर्ष प्रकाशन किया जाता रहा है, जिससे सम्पूर्ण जैन समाज लाभान्वित हो रहा है। इस वर्ष भी सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों के लगभग 15,000 जैन साधु-साध्वियों के 2013 में स्वीकृत होने वाले चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त "समग्र जैन चातुर्मास सूची-2013" मुंबई स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची (गुजराती पाकेट बुक) एवं रंगीन चार्ट के 35 वें अंक का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है। अतः आपसे नम्र निवेदन है, कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2013 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के

चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें। **सम्पर्क सूत्रः-** बाबूलाल जैन ''उज्ज्वल'' संपादक, 105, तिरुपति अपार्टमेन्ट्स, आकुर्ली क्रोस रोड नं.1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महा.) टेलीफैक्सः 022-28871278, मोबाइल-093245-21278, ईमेल- ujjwalprakasha@gmail.com

इन्दौर में सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

श्री श्वेताम्बर जैन पद्मावती पोरवाल संघ, इन्दौर द्वारा 26 मई, 2013 को खालसा कॉलेज परिसर, राजमौहल्ला, इन्दौर में पोरवाल समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। लगभग 20 वर्षों पश्चात् आयोजित इन्दौर के इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में 16 युगलों का पाणिग्रहण हुआ। सम्मेलन में प्रातःकाल समारोह के अन्तर्गत दुल्हों एवं दुल्हनों की शोभायात्रा निकाली गयी। प्रातः अल्पाहार एवं मध्याह्न भोज के पश्चात् सायंकालीन भोजन में लगभग 80 प्रतिशत लोगों ने सूर्यास्त के पूर्व भोजन ग्रहण किया। वर एव वधू पक्ष में प्रत्येक से मात्र 11000/- रुपये की राशि ली गई तथा कूपन विक्रय कर राशि जुटायी गई। अन्त में लक्की ड्रा द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। संघ की ओर से प्रत्येक वधू पक्ष को लगभग 25 हजार रुपये का सामान दिया गया। विवाह समारोह संजीदगी एवं सुन्दर व्यवस्था के साथ सम्पन्न हुआ।

विजयनगर में 22 जून से वीतराग ध्यान शिविर

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी महाराज सा. के 50 वें दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अन्तर्गत तृतीय वीतराग ध्यान साधना शिविर का 22 जून से 03 जुलाई, 2013 तक आयोजन किया जा रहा है। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधक अपनी सूचना पूर्व में प्रेषित करें तथा शिविर की नियमावली एवं फार्म भरने हेतु सम्पर्क करें। **सम्पर्क सूत्र-** (1) श्री प्रकाश जी सांड, विजयनगर, जिला-अजमेर (राज.), फोन नं. 01462-230095, मोबाइल नं. 092513-89925, (2) श्रीमती शांता जी मोदी-जयपुर (093144-70972)

सौम्यगुणाश्रीजी को जैन विधि-विधानों में डी.लिट् डिग्री

जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट, लाडनूँ द्वारा डॉ. साध्वी सौम्यगुणाश्री जी को 'जैन विधि-विधानों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर डी.लिट् उपाधि प्रदान की गई है। साध्वी जी ने अपना शोधकार्य प्रसिद्ध जैन विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में पूर्ण किया है।

सम्पूर्ण भारत से प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र आमन्त्रित

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन की उत्कृष्ट सुविधा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से सन् 1973 में संस्थापित एवं गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के साथ विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर का उच्च शिक्षण प्राप्त करने की सुविधा है। सुविधा सम्पन्न इस संस्थान में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों से वर्ष 2013 में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। विगत 38 वर्षों में यहाँ से अध्ययन कर लगभग 110 विद्यार्थी वर्तमान में प्रशासनिक, राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं।

संस्थान में प्रवेश हेतु प्रक्रिया-

1. विद्यालय अथवा महाविद्यालय के सभी संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश दिये जायेंगे। न्यूनतम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
2. संस्थान में प्रवेश हेतु विद्यार्थी का शैक्षणिक स्तर पर 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक होना प्राथमिकता में रहेगा।
3. बालकों में नैतिक आचरण स्वच्छ पाये जाने पर ही उन्हें प्रवेश दिया जाना संभव है।
4. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार छात्रों का चयन किया जाएगा।
5. संस्थान में चयन के लिए शिविर आयोजित किया जायेगा, जिसकी सूचना दूरभाष के माध्यम से दी जायेगी।

नियम एवं सुविधाएँ-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास एवं भोजन की व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अँग्रेजी एवं विविध विषयों पर विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशाला का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य है।
5. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

प्रवेश आवेदन-फार्म इस पत्रिका में पृ. 132 पर प्रकाशित है। प्रेषण हेतु सम्पर्क सूत्रः- दिलीप जैन, अधिष्ठाता, *आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.), दूरभाषः- 0141-2710946, 094614-56489, ईमेलः-* ahassansthan@gmail.com

कोलकाता में आचार्य हस्ती के जीवन पर व्याख्यान

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता द्वारा आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 22 वीं पुण्यतिथि 'महावीर सदन' में रविवार 19 मई 2013 को मनाई गई। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के अध्यक्ष श्री सरदारमल जी कांकरिया ने सभा की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में रत्न संघ के निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा उपस्थित थे।

मंगलाचरण सुश्री भावना कांकरिया ने तथा स्वागत गीत प्रतिभा जी मेहता ने प्रस्तुत किया। छोटे बच्चों ने एक भजन एवं बड़े बच्चों ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के संथारा लेने के पूर्व अपने शिष्यों के बीच जो संवाद हुआ, उसको बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के **मुख्यवक्ता श्री मोफतराज जी मुणोत** ने पूज्य आचार्यप्रवर के अंतिम समय का आँखों देखा हाल सुनाया और उद्बोधन देते हुए कहा कि बिना ज्ञान के अध्यात्म गहरा नहीं होता है। अध्यात्म की ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए पहले ज्ञान होना जरूरी है। हमारी सभी क्रियाएँ ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने कहा कि हमें प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट का स्वाध्याय करना चाहिये।

कार्यक्रम के **अध्यक्ष श्री सरदारमल जी कांकरिया** ने सम्प्रदाय मोह को त्यागकर सेवा कार्यों को करने पर बल दिया तथा युवाओं को विशेषरूप से आगे आने पर जोर दिया। सभा से श्री पारसमल जी हीरावत, श्री विनोद शिखरमल जी सुराणा एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजू जी भण्डारी तथा महामंत्री श्रीमती बीना जी मेहता ने आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रकाश डाला। अंत में धन्यवाद ज्ञापन संघ अध्यक्ष श्री सुमेरचन्द जी मेहता ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निर्मला पीपाड़ा ने किया। *-गुमानसिंह पीपाड़ा, महामंत्री*

आचार्य हस्ती करुणारत्न अवार्ड हेतु आवेदन आमंत्रित

करुणा अंतरराष्ट्रीय संस्थान द्वारा प्रति वर्ष अपने राष्ट्रीय सम्मेलन में आचार्य हस्ती करुणा रत्न अवार्ड प्रदान किया जाता है। इस वर्ष के करुणा रत्न अवार्ड हेतु आवेदन आमंत्रित हैं, इस हेतु अपेक्षित विवरण इस प्रकार है-

1. इसके लिए उस व्यक्ति विशेष का चयन किया जाता है जिसने विश्व के समस्त

प्राणियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए, करुणा भाव के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी समर्पित सेवाएँ देकर ऐसा विशेष कार्य किया हो, जो दूसरों के लिए अनुकरणीय हो।

2. 'करुणा रत्न अवार्ड' हेतु आवेदन करते समय आवेदक की पहचान एवं आवेदन पत्र की सत्यता को किसी एक सम्मानित व्यक्ति द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए।
3. पूर्ण विवरण एवं प्रामाणिकता देते हुए कोई व्यक्ति विशेष भी किसी अन्य व्यक्ति को 'करुणा रत्न अवार्ड' के लिए नामित कर सकता है।

यह अवार्ड 'सुराणा एण्ड सुराणा इंटरनेशनल अटॉर्नीज चेरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा प्रदान किया जाता है, इसके अन्तर्गत 1,00,000/रुपये की नगद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। इस हेतु योग्य व्यक्ति अपने आवेदन हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में 15 अगस्त, 2013 तक प्रेषित करें। **सम्पर्क सूत्रः**- कैलाशमल दुगड़, अध्यक्ष- करुणा रत्न अवार्ड चयन समिति, *Karuna International, No. 70, Sembudoss Street, 1st floor, Chennai-600001 (T.N.), Ph. 25231714, 25231724, 098410-08585 (M.), Email- karunainternational@yahoo.co.in*

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी के पावन प्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 21-22 मई, 2013 को द्वि-दिवसीय 'बारह व्रत' विषय पर आधारित शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 195 श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर के बाद प्रवचन सभा में कई श्राविकाओं ने व्रत-नियम अंगीकार किये। शिविर में मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा, श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. ने सभी श्राविकाओं को बारह व्रत समझाकर व्रती बनने की प्रभावी प्रेरणा की। शिविर में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर एवं स्वाध्याय शिक्षा के सम्पादक श्री सुन्दरलाल जी सालेचा ने अध्यापन कराया। श्री हर्षवर्धन जी ललवानी, जोधपुर द्वारा शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। -*बीना मेहता, महासचिव*

पावापुरी (सिरोही)- शान्त-क्रान्ति संघ के आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती विद्द्वर्य श्री प्रेम मुनि जी, प्रज्ञारत्न श्री जितेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं

विदुषी साध्वीरत्ना श्री स्वर्णप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में श्री वीर संघ, अहमदाबाद और सुश्रावक श्री के.पी. संघवी के सहयोग से जागृति शिक्षा संस्कार शिविर का 19 से 30 मई 2013 तक आयोजन किया गया। यह प्रतिवर्ष लगाया जाने वाला 21 वां शिविर था। इस शिविर में देश के विभिन्न स्थानों से 300 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में प्रवचन के साथ धर्म एवं चरित्र निर्माण के संस्कार दिए गए। *-विजय पटवा*

दिल्ली- पंजाब संघ गौरव आचार्यप्रवर श्री मयाराम जी म.सा. की सम्प्रदाय के संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्द जी म.सा. के सान्निध्य में 12 मई, 2013 को रोहिणी-दिल्ली में अग्रांकित सात मुमुक्षु भाइयों की दीक्षा सम्पन्न हुई- 1. अभिनव जैन-रतिया, 2. अतिशय जैन-मानसा, 3. अवतंस जैन-नादौन, 4. हेमन्त जैन-सोनीपत, 5. दिव्यम् जैन-लुधियाना, 6. निपुण जैन-किरठल, 7. अतिमुक्त जैन-राजपुरा।

दिल्ली- आचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के पावन सान्निध्य में घेवरा मोड़ महाविदेह क्षेत्र, दिल्ली में साधु-साध्वी को प्राकृत भाषा शिक्षण हेतु 1 से 7 मई 2013 तक शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में प्राकृत सर्टिफिकेट एवं प्राकृत डिप्लोमा परीक्षा के लगभग 22 प्रतिभागियों ने भाग लेकर प्राकृत भाषा का अध्ययन किया। श्रमण संघीय सलाहकार सिद्धांताचार्य डॉ. श्री राममुनि जी म. 'निर्भय' एवं विदुषी श्रीमती रेणू जैन (त्रिनगर) ने अध्यापन कार्य किया।

जोधपुर- यहाँ पर 26 मई से 9 जून तक ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर 10 केन्द्रों पर संचालित हो रहे हैं, जिनमें 1200 बालक-बालिका अध्ययन कर रहे हैं। जयपुर में भी इसी प्रकार शिविर चल रहे हैं। *-नवरतन डागा, शिविर संयोजक*

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के तत्त्वावधान में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या मधुर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 12 के पावन सान्निध्य में 16 से 20 मई 2013 तक 'पंचम' पंच दिवसीय आस्था अनुशास्ता आवासीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें13 वर्ष से 26 वर्ष तक की लगभग 150 अविवाहित युवतियों ने सम्मिलित होकर ज्ञानार्जन किया। कोयम्बतूर, तिरूवनामल्लै तथा चेन्नई के उपनगरों से समागत शिविरार्थियों को आस्था दीपिका, ज्योतिका, साधिका, उपासिका, आराधिका आदि पाँच कक्षाओं में विभक्त कर प्रातः 6.30 बजे से सायंकालीन 9.00 बजे तक संस्कार बीजारोपण एवं धार्मिक अध्ययन करवाया गया। विशिष्ट अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन की जीवन चर्या में Stop, Look & Go, छः काय की यतना, आत्म विकास हेतु मनुष्य जन्म का महत्त्व व लक्ष्य, श्रावक व साधु जीवन का महत्त्व व

उनकी तुलना, छः आरे का स्वरूप, 5 ज्ञान का वर्णन, 4 ध्यान का जागृतिमय त्याग व अनुसरण, आत्मा व कर्म का स्वरूप, 14 नियम का महत्त्व, जमीकन्द, रात्रि भोजन, पर्व तिथियों, धोवण पानी व तपस्या का स्वरूप व उनका जीवन में महत्त्व आदि विषयों पर सारगर्भित अध्ययन करवाया गया।

जलगांव- श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा 25 से 29 अप्रेल 2013 तक पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें जलगांव, फत्तेपुर, भड़गांव, जामनेर, मांडल, मुकटी, अडावद, धरणगांव, नरडाणा, नाशिक, खालवा आदि स्थानों से 110 शिविरार्थियों ने भाग लिया। 3 कक्षाओं के माध्यम से सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल, लघुदण्डक, जीवधड़ा, उत्तराध्ययन सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, निबन्ध के विषय, अहिंसा, अपरिग्रह, सम्यग्दर्शन आदि विषयों को वरिष्ठ अध्यापक श्री फूलचन्द जी मेहता, प्रकाशचन्द जी जैन, श्री हीरालाल जी मंडलेचा, सौ. मंगला जी चोरड़िया, सौ. विजया जी मल्हारा, श्रीमती लीला जी सालेचा, श्री मनोज जी संचेती आदि अध्यापकों द्वारा पढ़ाया गया। 4 नये स्वाध्यायियों ने पर्युषण पर्व पर सेवा देने की स्वीकृति प्रदान की। अध्यक्ष श्री दलुभाऊ चोरड़िया एवं श्री रतनलाल सी. बाफणा का समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। श्री आर.सी. बाफणा परिवार का भोजन, पुरस्कार आदि सभी प्रकार की व्यवस्थाओं के लिए सहयोग प्राप्त हुआ।

जलगांव- गत वर्ष आर.सी.बाफणा फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगांव की ओर से उत्तराध्ययन सूत्र के 1 से 10 अध्ययन कंठस्थ करने हेतु 1000/- रुपये, 1 से 22 अध्ययन हेतु 5000/- रुपये, 1 से 36 अध्ययन हेतु 10,000/- रुपये के बम्पर पुरस्कार की योजना प्रारम्भ की गई थी, जिसमें चोपड़ा, जलगांव, हुबली, अजमेर, बोदवड़, नाशिक आदि स्थानों से 54 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। उन्हें 1 लाख रुपये के पुरस्कार वितरित किए गए हैं। - *प्रकाशचन्द जैन*

जयपुर- प्राकृत भारती अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली प्राकृत प्रि-सर्टिफिकेट एवं सर्टिफिकेट परीक्षा 2012-13 का इस वर्ष का परिणाम एवं छात्रवृत्ति वितरण का कार्यक्रम 4 मई, 2013 को आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्षा डॉ. सुषमा जी सिंघवी ने की। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राकृत पाठयक्रमों में उत्तीर्ण 56 विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम के साथ-साथ 60,000/- रुपये की राशि छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की गई। - *डॉ. तारा डागा, संयोजक*

बधाई

जोधपुर- जिनवाणी पत्रिका की सह-सम्पादक डॉ. श्वेता जैन को अ.भा. साधुमार्गी जैन

संघ के स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार 2012 के लिए चयनित किया गया है। डॉ. जैन को उनकी कृति ''जैन दर्शन में कार्य-कारण व्यवस्था : एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण'' पर एक लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

जोधपुर- जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन संकाय

के व्यावसायिक वित्त एवं अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. सुमनेश नाथ मोदी का चयन भारत ज्योति पुरस्कार-2013 व सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलैंस के लिए हुआ है। यह पुरस्कार प्रोफेसर मोदी को अर्थशास्त्र में योगदान के लिए दिया जाएगा। अर्थशास्त्र में 'मोदीस लॉ ऑफ फेमिली बजट' उनका एक योगदान है। डॉ. मोदी को यह पुरस्कार इंडिया इंटरनेशनल फ्रैंडशिप सोसाइटी, नई दिल्ली की ओर से दिया जाएगा।

चेन्नई- साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग(एडवोकेट) को अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध केन्द्र, चेन्नई का निदेशक मनोनीत किया गया है। यह केन्द्र 1982 में स्थापित जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान (रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी) की इकाई है।

जोधपुर- श्री सुधीर जैन सुपुत्र श्रीमती सुशीला-गणपतराज जी बच्छावत, सुपौत्र स्व. श्री लूणकरण जी बच्छावत ने सीनियर सैकण्डरी(वाणिज्य) में 90.60 प्रतिशत अंकों के साथ राजस्थान में छठी मेरिट प्राप्त की है, जोधपुर जिले में दूसरा व जोधपुर शहर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- श्री प्रेमचन्द जी जैन (चकेरी वाले) के सुपुत्र श्री अमित जैन की चिकित्सा विभाग में फार्मासिस्ट के पद पर तथा अभिषेक जैन की जयपुर मेट्रो में जूनियर इंजीनियर पद पर नियुक्ति हुई है।

जोधपुर- श्री पवन कुमार जैन ने ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर द्वारा 'सूचना का अधिकार' विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता-2013 में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। 6 मई, 2013 को एक समारोह में उन्हें पुरस्कृत किया गया।

धुलिया- सुश्री कृपा भण्डारी सुपुत्री श्री किशोर हरकचंद जी भण्डारी की मुम्बई

महानगरपालिका में सब इंजीनियर के पद पर नियुक्ति हुई है।

अहमदाबाद- सुश्री प्रभा राजेन्द्र जी शाह ने भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- संतसेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबचन्द जी भण्डारी का स्वर्गवास 14 मई, 2013 को हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय करती थीं। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. व आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

मदनगंज-किशनगढ़- धर्मनिष्ठ श्री विजयराज जी मेहता सुपुत्र श्री छोटेलाल जी मेहता (हरमाडा वाले) 53 वर्ष की उम्र में प्रत्याख्यान सहित 12 मार्च, 2013 को कालधर्म को प्राप्त हो गए। उसी दिन सायं 5.00 बजे आपने महासती श्री सुशीला जी म.सा. के मुखारविंद से सागारी प्रत्याख्यान एवं मांगलिक श्रवण का लाभ लिया था। वे सरल, अल्पभाषी एवं समाजसेवी थे।

मालेगाँव- अखिल भारतीय सुधर्म महिला मण्डल की संरक्षिका धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी श्री मंगलचन्द जी गोलेच्छा (खींचन निवासी) का 78 वर्ष की वय में 10 अप्रेल, 2013 को सागारी संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आप सामायिक, पर्वतिथि को दया, संवर एवं प्रतिक्रमण करती थीं। आपके सुपुत्र ज्ञानगच्छ में श्री प्रवीणमुनि जी के रूप में तथा दो सुपुत्रियाँ साध्वी श्री सुप्रभा जी एवं श्री विभक्तयशा जी के रूप में जिनशासन की सेवा कर रही हैं।

मुम्बई- गुरुभक्त समर्पित सुश्रावक श्री लालराज जी चौधरी सुपुत्र स्व. श्रीदेवराज जी

चौधरी (मूल निवासी पीपाड़) का 3 मार्च, 2013 को देहावसान हो गया। आपकी गुरु हस्ती, हीरा, मान के प्रति अपार श्रद्धा थी। चौधरी साहब का जीवन धार्मिक संस्कारों से युक्त था। आप गुरु के आदेश एवं संघ-समाज की प्रवृत्तियों में सदैव समर्पित रहने वाले श्रावक थे।

मुम्बई- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी चौधरी धर्मपत्नी स्व. श्री लालराज जी

चौधरी का देहावसान 10 अप्रेल, 2013 को हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय की साधना किया करती थीं। आपने वर्षीतप, अठाई आदि तपस्याएँ की थीं। कई वर्षों से आप चौविहार नियम का पालन करती रही थीं। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं विनयशीलता

आदि गुणों से ओतप्रोत थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

मदनगंज- श्री अमरसिंह जी जामड़ सुपुत्र स्व. श्री मोखमसिंह जी जामड़ (डीडवाणा वाले) का 21 मई, 2013 को 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। भावना के अनुरूप मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किए गए।

घोडनदी (शिरूर)- सुश्रावक श्री रतनलाल जी बुधमल जी चोरडिया 8 मई, 2013 को

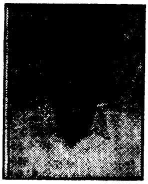

काल कवलित हो गए। आप अत्यन्त मिलनसार थे, दीन दुःखियों के लिये आपके हृदय में सदैव करुणा का स्रोत प्रवाहमान रहता था। पधारने वाले सभी संतों को 14 प्रकार की साधन सामग्री आप के यहाँ निर्दोष रूप से सहजतया उपलब्ध हो जाती थी।

वैजापूर- सुश्रावक श्री सचिन जी सुपुत्र श्री शोभाचन्द्र जी संचेती का 3 अप्रेल, 2013 को 38 वर्ष की उम्र में देवलोग गमन हो गया।

जयपुर- सुश्रावक श्री सुरेश जी सुपुत्र श्री संतोषचन्द जी सुकलेचा का 18 मई 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, मृदुभाषी आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। बचपन से ही दादी द्वारा प्राप्त सुसंस्कारों के कारण आप निरन्तर धर्म-ध्यान में लगे रहते थे। आपकी संघ के प्रति गहरी निष्ठा थी।

खरबा (ब्यावर)- श्रद्धाशील सुश्रावक श्री सोहनलाल जी पदावत सुपुत्र श्री भंवरलाल जी

पदावत का 19 अप्रेल, 2013 को 76 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, धर्म-परायण एवं मिलनसार थे। आप नित्य सामायिक व चातुर्मास काल में आचार्य व उपाध्याय श्री का दर्शन लाभ लेते थे।

इचलकरंजी- श्रीमती सदाबाईजी धर्मपत्नी श्री चंपालाल जी बरडिया का 19 अप्रेल, 2013 को स्वर्गारोहण हो गया। आप सरल, निरभिमानी सुश्राविका थीं। 'सहना और शांत रहना' आपके जीवन के प्रतीक थे।

अजमेर- धर्मपरायणा तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती शान्ता देवी जी चौपड़ा धर्मपत्नी स्व. श्री जीतमल जी चौपड़ा, जीत की भेरी का 28 अप्रेल, 2013 को संथारे सहित समाधिमरण हो गया। पति की मृत्यु के पश्चात् आप सदैव श्वेत वस्त्र ही धारण करती थीं। प्रतिदिन स्वाध्याय, सामायिक, शास्त्रवाचन आदि करती थीं। आपने अपने जीवन में 48 अठाइयाँ, उपवास, आयंबिल, तेला, बेला आदि कई तपस्याएँ कीं। आपने कई बकरों को अभयदान दिलवाया।

जोधपुर- जागृति संस्थान के संरक्षक एवं 'सूचना के अधिकार' (आर.टी.आई) से सम्बद्ध

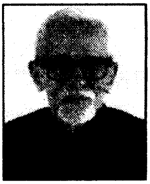

अनेक पुस्तकों के लेखक श्री चतरसिंह जी मेहता (सेवानिवृत्त निदेशक, राजस्थान शिक्षा विभाग एवं पूर्व अध्यक्ष, उत्तरी क्षेत्र एन.सी.टी.ई.) का 18 मई, 2013 को 80 वर्ष की वय में दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। आप भ्रष्टाचार के कई मामले उजागर कर चुके थे। आप सम्प्रति आर.टी.ई. कोर्ट के गठन में अपनी भागीदारी निभा रहे थे।

सतना (मध्यप्रदेश)- जैन धर्म-दर्शन के प्रबुद्ध, सर्जनशील एवं लब्धप्रतिष्ठ दिगम्बर विद्वान् श्री नीरज जी जैन का 87 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। लगभग 25 पुस्तकों को लिखकर आप कई पुरस्कारों से सम्मानित हुए। सन् 1999 में अफ्रीका में आयोजित विश्व धर्म संसद में महावीर के दर्शन को आपने सबल रूप से प्रस्तुत किया था।

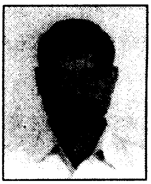

जयपुर- युवारत्न सुश्रावक श्री सुभाष जी जैन सुपुत्र श्री गुलाबचन्द जी जैन (पल्लीवाल),का 29 अप्रेल, 2013 को 44 वर्ष की युवा वय में आकस्मिक निधन हो गया। राजकीय सेवा में कार्यरत सुश्रावक उत्साही, कर्मठ, सेवाभावी व मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। वे देवगुरु धर्म के प्रति समर्पित थे।

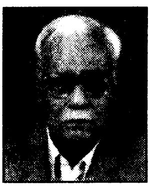

जयपुर- सुश्रावक श्री उमरावसिंह जी नाहर का 22 मई, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप नित्य सामायिक, व्रत-प्रत्याख्यान आदि करते थे। आपकी रत्नसंघ के प्रति गहरी निष्ठा थी। आप संत-सतियों की सेवा-शुश्रूषा में सदैव अग्रणी रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

विवेक दृष्टि

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

जब तक मानव पर इन्द्रिय दृष्टि का प्रभाव रहता है, उसे संसार व उसके पदार्थों में सुख भासता रहता है। वह उनका भोग करता रहता है, पर उसे मिलता कुछ नहीं। बुद्धि दृष्टि के प्रभाव से उस सुख की अनित्यता का बोध होता है, जिससे विवेक दृष्टि उदित होती है। विवेक दृष्टि के उदित होते ही ऐसी निर्मल प्रज्ञा की प्राप्ति हो जाती है कि जीवन की सारी ग्रंथियाँ निर्मूल होकर उसके लिए शाश्वत सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। उसे नित्य-जीवन-रस की प्राप्ति हो जाती है, जो उसकी मूल मांग भी है। उसका जीवन उत्साह व उल्लास से भर जाता है।

-श्री शान्तिस्वरूप गुप्ता द्वारा मुनि श्री के प्रवचन से संकलित

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

757 श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, कुश्तला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

758 श्री विमलचन्दजी छाजेड़, 3-त-60, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)

759 श्री सुदर्शनजी जैन, पॉकेट एच 33/87, सेक्टर 3, रोहिणी, नईदिल्ली (दिल्ली)

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्ष आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15049 से 15058 तक 10 सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

2100/- श्री श्रवण कुमारजी जैन (वीरपिता), गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. के वैशाख शुक्ला एकादशी पर ग्यारहवें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री त्रिलोकचन्दजी जैन (गाडोली वाले), उनियारा, धर्मसहायिका श्रीमती सीमाजी जैन के वर्षीतप पारणा के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, राहुल कुमारजी, सुवालालजी जैन (कचोरी वाले), कोटा, सुपुत्र चि. राहुलजी का शुभविवाह सौ.कां. शिल्पाजी जैन के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री सौभाग्यमलजी, धर्मचन्दजी जैन, कुश्तला-सवाईमाधोपुर, चि. पंकज (हितेश) सुपुत्र श्री सुरेशचन्दजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. प्रियंकाजी सुपुत्री श्री त्रिलोकचन्दजी जैन के साथ सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री नरेन्द्रजी, ब्रजेन्द्रजी जैन, चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर, चि. योगेन्द्रजी संग जयमाला सुपुत्री श्री महेन्द्र कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री प्रेमचन्दजी जैन, जयपुर, सुपुत्र चि. अमितजी जैन के चिकित्सा विभाग में फार्मासिस्ट के पद पर एस.एम.एस. अस्पताल में नियुक्त होने एवं चि. अभिषेकजी जैन के जयपुर मैट्रो में जूनियर इंजीनियर के पद पर नियुक्त होने की खुशी में।

1101/- श्री महावीर प्रसादजी, ज्ञानचन्दजी, सुरेश कुमारजी, रमेश कुमारजी पोरवाल, इन्द्रगढ़-बूंदी, पूजनीया मातुश्री श्रीमती अनोखबाईजी की पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री लड्डूलालजी जैन (धमूण वाले) अपने सुपौत्र चि. दिवाकरजी सुपुत्र श्री विमल कुमारजी जैन, प्रतापनगर-जयपुर, का शुभविवाह सौ.कां. मीनाजी सुपुत्री श्री रमेशचन्दजी जैन, उखलाना-अलीगढ़ के संग 21 मई 2013 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री चौथमलजी ओमप्रकाशजी जैन, इन्दौर, श्री चौथमलजी की सुपौत्री एवं श्री विमलचन्दजी की सुपुत्री सौ.कां. परिणिता का शुभविवाह चि. हेमन्त कुमारजी जैन (चौधरी) कोटा के संग 12 मई 2013 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री राजमलजी, महावीर प्रसादजी जैन (कुम्हारिया वाले), मुम्बई, श्री राजमलजी के सुपौत्र एवं श्री महावीर प्रसादजी के सुपुत्र चि. ललितजी का शुभविवाह सौ.कां. नीतूजी, मण्डी-

सवाईमाधोपुर के साथ 18 मई 2013 को सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री अशोकजी बापना, जयपुर, चि. अंकितजी सुपुत्र श्री अशोकजी, सुपौत्र श्री अमरसिंहजी बापना के वी.आई.टी. वेल्लूर से बीटेक (ईसीई) उत्तीर्ण कर संकल्प सेमी कन्डक्टर हुबली (कर्नाटक) में डिजाइन इंजीनियर के पद पर नियुक्त होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती बिन्दूजी बहन (चौधरी), मुम्बई, अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती बसन्ताबाईजी नाहटा धर्मसहायिका स्व. जवरीलालजी नाहटा, बंगारपेट, श्री सुनीलजी नाहटा की सुपुत्री सौ. कां. नम्रताजी के शुभविवाह 11 मई 2013 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में ।

1100/- श्री पूनमचन्दजी जामड़, जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. निधिजी सुपुत्री श्री निर्मल कुमारजी-कमलाजी जामड़ का शुभ विवाह चि. हार्दिकजी सुपुत्र श्री अशोकजी-मंजूजी सिंघवी, चेन्नई के संग 29 अप्रैल 2013 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री महावीरप्रसादजी, सुबाहु कमारजी जैन (सर्राफ), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री महावीर प्रसादजी धर्मपत्नी श्रीमती चमेलीदेवी जी जैन के आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री भागचन्दजी, गौतमसिंहजी, ताराचन्दजी, ज्ञानचन्दजी जामड (डीडवाना वाले), मदनगंज-किशनगढ़, श्री अमरसिंहजी सुपुत्र स्व. मोखमसिंहजी जामड़ का 21 मई 2013 को मरणोपरान्त नेत्रदान करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री गजराज जी आशीष कुमार जी चौधरी, मुम्बई, परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मानचंद्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन-प्रवचन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

1100/- गौतमचंद जी अंकुश जी कांकरिया, जोधपुर, परम विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के 57वें जन्मदिवस (अक्षय तृतीया) पर दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री हीराचन्द्र जी नाहर, जयपुर, पूज्य पिताश्री उमरावसिंह जी नाहर का 22 मई, 2013 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

125000/- श्री अमरचन्द जी मनोहरलाल जी धोका, जालना (महा.) सहायतार्थ।

45000/- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर, जीवदया हेतु।

33997/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, जीवदया हेतु।

15000/- श्री आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर, जीवदया हेतु।

12000/- श्रीमती निर्मला जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री मनीष जी लोढ़ा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

11000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, जीवदया हेतु।

5100/- श्री मीठालालजी मधुर, बालोतरा, धर्मसहायिका श्रीमती कमलाजी 'मधुर' की पावन स्मृति में।

4000/- श्रीमती रूपकंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी डॉ. सूरजमल जी लोढ़ा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्रीमती कमला जी बोथरा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1150/- श्रीमती रजनी जितेन्द्र जी भंसाली, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1111/- दिव्य जी सुराणा सुपुत्र श्री दशरथमल जी सुराणा, जोधपुर, परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2100/- श्रीमती सुशीला जी, मधुजी भंसाली (कोलकाता), श्रीमती ममताजी भंसाली(जोधपुर), परमपूज्य उपाध्याय प्रवर मानचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा अर्धशताब्दी के उपलक्ष्य में।

1101/- त्रिलोकचंद जी जैन(गाडोली वाले) हाल मुकाम उनियारा, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा जैन के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

1101/- राजेन्द्र कुमार जी जैन, कोटा, अपने सुपुत्र चिरंजीव राहुल संग सौ. शिल्पा जैन के विवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- सौभाग्यमल जी धर्मचंद जी जैन कुश्तला, सवाईमाधोपुर, चिरंजीव पंकज सुपुत्र श्री सुरेशचंदजी संग प्रियंका सुपुत्री श्री त्रिलोकचन्दजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- नरेन्द्र कुमार जी, बृजेन्द्र कुमार जी चौथ का बरवाडा, अपने सुपुत्र चिरंजीव योगेन्द्र संग सौ. जयमाला सुपुत्री महेन्द्र कुमार जी जैन (सवाईमाधोपुर) के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर को साभार प्राप्त

11000/- श्री चम्पालाल जी, सुजीतकुमार जी मकाणा, दौड़बल्लापुर (कर्नाटक), पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर में दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में।

10000/- श्रीमती सज्जनदेवी धर्मपत्नी श्री चम्पालाल जी मकाणा, दौड़बल्लापुर (कर्नाटक), पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर में दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

(गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में)

12000/- श्रीमती प्रीति अरुण जी खींचा-जयपुर,

12000/- मैसर्स वर्षा जैन मेमोरियल टस्ट्र, जोधपुर (श्री सज्जनराज जी लुणिया, जोधपुर)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

संशोधन

मई 2013 की जिनवाणी में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त शीर्षक में जो दो अर्थ सहयोगियों के नाम प्रकाशित हुए थे वे जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त शीर्षक में पढ़े जाएं। गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में श्री पदमचन्द जी कोठारी के नाम से जो राशि प्रकाशित हुई है, उसके स्थान पर "श्रीमती सायरकंवर प्यारेलाल शेषमल कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद पढ़ा जाए"।

आगामी पर्व

ज्येष्ठ शुक्ला 8 सोमवार	17.06.2013	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला 13 शुक्रवार	21.06.2013	आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ
ज्येष्ठ शुक्ला 14 शनिवार	22.06.2013	चतुर्दशी, पक्खी, क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द जी म.सा. की 168 वीं पुण्यतिथि
आषाढ कृष्णा 2 मंगलवार	25.06.2013	217 वाँ क्रियोद्धारक दिवस
आषाढ कृष्णा 8 रविवार	30.06.2013	अष्टमी
आषाढ कृष्णा 14 रविवार	07.07.2013	चतुर्दशी, पक्खी
आषाढ शुक्ला 8 मंगलवार	16.07.2013	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 14 रविवार	21.07.2013	चतुर्दशी
आषाढ शुक्ला 15 सोमवार	22.07.2013	पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ

वन्दना हमारी है

श्री धर्मचन्द जैन

(शान्त,दान्त, गंभीर, उपाध्यायप्रवर, पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 51 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार, 23 मई, 2013 को शक्तिनगर, जोधपुर में प्रस्तुत छन्द)

माँ छोटा के नन्द, कुल अचल के चन्द,
तेरी समता, सरलता, सजगता निराली है।
शान्त-दान्त गुणवान, मोहक है मुस्कान,
दया पालो भाग्यवान, बोली मीठी प्यारी है।
अनुकूल-प्रतिकूल, सब में आनन्द माने,
संयम में रत रह, साधना खारी है।
उपाध्याय पद शोभे, ज्ञान-क्रिया तव शोभेऽऽऽ
दीक्षा-दिवस इक्यावन की, शोभा अति प्यारी हैऽऽऽ
ऐसे मानचन्द्र जी के चरण-कमल मांही,
पल-पल कोटि-कोटि, वन्दना हमारी है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

अभिमत

'स्वप्निका' पर अभिमत

(23 मई 2013 को आयोजित परीक्षा-पुस्तिका से संगृहीत)

1. जीवन को पाप से पुण्य की ओर बढ़ाने वाली, आत्मा में अविश्वास से विश्वास जगाने वाली, भोग से योग की ओर ले जाने वाली, ऐसी अनुपम अलौकिक अद्वितीय पुस्तक है 'स्वप्निका'। *- विवेक जैन, भरतपुर*
2. स्वप्निका ने संस्कारों के जागरण में संत समागम का जो योगदान दिया है, वो मुझे बार-बार पढ़ने का मन करता है। यह मुझे बहुत-बहुत हृदयपरक लगी। *-बबीता जैन, अलीगढ़*
3. स्वप्निका पुस्तक से हमारा जीवन व्यवस्थित हुआ है। कौनसा काम कब करना है, इसका नियम बना है। नियम करने से हमारा जीवन विनम्र व सरल बन गया है। *-चित्रा जैन, आलनपुर*
4. स्वप्निका हमारे जीवन को सफल बनाने वाली तथा प्रकाशित करने वाली एक ऐसी किताब है, जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर माता द्वारा दृष्ट स्वप्न की अनुभूति और नियमों ने जीवन को नियमरूपता में ढ़ाल दिया है। *-श्वेता जैन, हा. बोर्ड, सवाईमाधोपुर*
5. यह पुस्तक बाहरी आकर्षण के साथ-साथ आन्तरिक रूप से भी आत्मा को शुद्ध कर ज्ञान बढ़ाने वाली है। इसकी उपयोगिता हमारे मन व आत्मा को पवित्र करके कर्म काटने में सहायक है। *-श्वेता जैन, मंडी*
6. स्वप्निका पुस्तक प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप है, द्योतक है, जिससे हम सभी लाभान्वित हो सके। *- रेखा जैन, मंडी*
7. वैसे तो मैंने बहुत सी किताबें पढ़ी हैं और प्रत्याख्यान आदि की किताबों में नियम भी दिए हैं, पर दीक्षा अर्द्धशती पर प्रकाशित इस पुस्तक में जो नियम दिए हैं, वे अचम्भित करने वाले हैं। *-दीपेश जैन, आ. हस्ती आ. शि. संस्थान, जयपुर*
8. स्वप्निका ज्ञान जिज्ञासा, हमें लगी प्यारी- सबसे अच्छी सबसे न्यारी।
   जैन धर्म की जानकारी देती- महावीर का ज्ञान कराती।
   प्रश्न-उत्तर के साथ-साथ ज्ञान गौरव का ताज पहनाती।। *-अनिता रांका, जबलपुर*
9. स्वप्निका एक दर्पण है, जिसमें व्यक्ति प्रतिदिन अपना आध्यात्मिक चेहरा अर्थात् स्व (आत्मा) को देख सकता है। *-जितेश जैन-जयपुर (बाबई वाले)*
10. जीवन निर्माण का सूत्र है स्वप्निका।
    गुरु भक्ति की है अनमोल कृतिका।। *-रिषभ जैन, इन्द्रगढ़*

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर चल रही हैं। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79(TN) Ph & Fax No.- 044-42728476 ,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथिः- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है । आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है । आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org से आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015

प्रवेश आवेदन फार्म-2013

(अ) व्यक्तिगत विवरण:

1. नाम ....
2. पिता का नाम .... माता का नाम ....
3. जन्मतिथि..
4. स्थायी निवास ....
5. पत्राचार हेतु पता ....

....

6. फोन (निवास) .... मोबाइल नं. .... ईमेल ....
7. विवाहित/अविवाहित.................... ब्लड ग्रुप .... पहचान पत्र (ड्राइविंग लाईसेंस/राशन कार्ड) ....
8. शैक्षणिक योग्यता विवरण

कक्षा/डिग्री	संस्थान/कॉलेज	बोर्ड/विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक/प्रतिशत

9. विशिष्ट योग्यता/उपलब्धि.................................... (अ) किस कक्षा/ विषय में प्रवेश..
10. धार्मिक अध्ययन ....

....

11. धार्मिक योग्यता

बोर्ड/संस्थान	कक्षा	प्राप्तांक	वर्ष	विशेष

12. पारिवारिक सदस्य संख्या........................ परिवार का किस धर्म संघ से सम्बन्ध..
13. परिवार में धार्मिक गतिविधियाँ ....

....

14. संस्थान में प्रवेश का उद्देश्य एवं लक्ष्य ....

....

15. सम्पर्क सूत्र (स्थानीय श्रावक)

(1) नामः-.. (2) नामः-..

पताः-.. पताः-..

16. विशिष्ट संदर्भ सूत्रः-

नामः...पताः.. फोनः..................................

मेरे द्वारा दी गई उक्त जानकारी सत्य है।

आवेदन में दी गई जानकारी के गलत होने पर फार्म निरस्त किया जा सकता है।

अभिभावक हस्ताक्षर

छात्र हस्ताक्षर

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 67 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 02 से 09 सितम्बर 2013** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 जुलाई 2013** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.......................जिला..............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?..........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

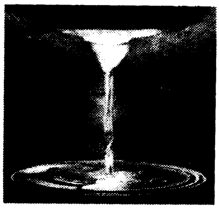

Electric Arc Furnace

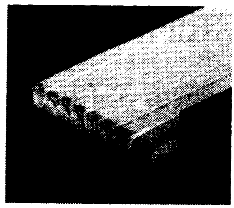

Billets

Rolling Mill

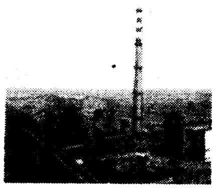

Captive Power Plant

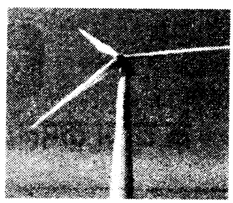

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक – अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

आदरणीय रत्नबंधुवर,

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत–सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से युवारत्न छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रूप से चल रही हैं। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

निवेदन है कि अपने परिवार में होने वाले खुशियों के दिवस विशेषों को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति येजना में रुपये 3000/–, 6000/– व 9000/– का अर्थ सहयोग करके दिवस विशेषों को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

आचार्य प्रवरपूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/– रुपये या एक छात्र के लिए 12000/– रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाईये

अनन्य गुरुभक्त, जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है–

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. AAATG1995J
Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें–

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumatichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	S. Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	S.Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryanch Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।
- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते हैं और श्रावक भी।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2013 ★ ज्येष्ठ, 2070

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

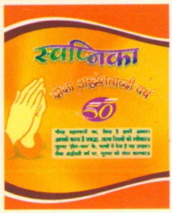

स्वप्निका

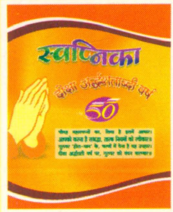

हार्दिक धन्यवाद

आभार अभिव्यक्ति का अनुपम अवसर पाकर अन्तर्मन आह्लादित है कि जिस उत्साह व उमंग से प्रत्येक परीक्षार्थी ने स्वप्निका की 23.05.2013 को आयोजित **''खुली किताब प्रतियोगिता''** में भाग लिया, उस उल्लास की लहर को देखकर **मन प्रफुल्लित, तन पुलकित है एवं चेतन प्रसन्नचित्तता** का अनुभव कर रहा है।

स्वप्निका ''खुली किताब प्रतियोगिता'' में भाग लेने वाले प्रत्येक परीक्षार्थी, सहयोग करने वाले प्रत्येक परीक्षकगण एवं सभी व्यवस्थापकों का **स्वप्निका** समिति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती हुई निवेदन करती है कि इसी उत्साह-उमंग को और अधिक अभिवृद्ध करते हुए व्रत-नियम, प्रत्याख्यान ग्रहण करने के साथ स्वप्निका की 10 नवम्बर, 2013 को आयोज्य मुख्य परीक्षा में भी उसी उत्साह-उमंग और उल्लासित भाव के साथ भाग लेवें।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

:: निवेदक ::

स्वप्निका समिति

सुमेरसिंह बोथरा
निदेशक

नमन मेहता
संयोजक

उर्मिला बोथरा – सदस्य
डॉ. मंजुला बम्ब – सदस्य
पूर्णिमा लोढ़ा – सदस्य
मीना गोलेछा – सदस्य

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन